मासिक पत्रिका RAJHIN/2007/21229 वर्ष-01, अंक नं. 02

जयपुर टाइम्स

राजस्थान की रग-रग से निकली बात
जयपुर टाइम्स मैग्जीन के साथ

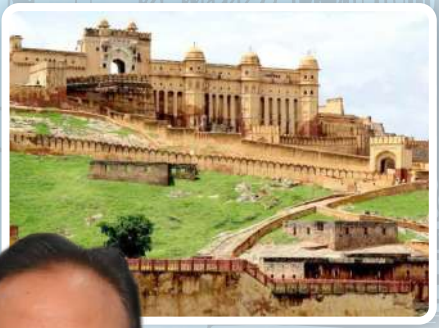

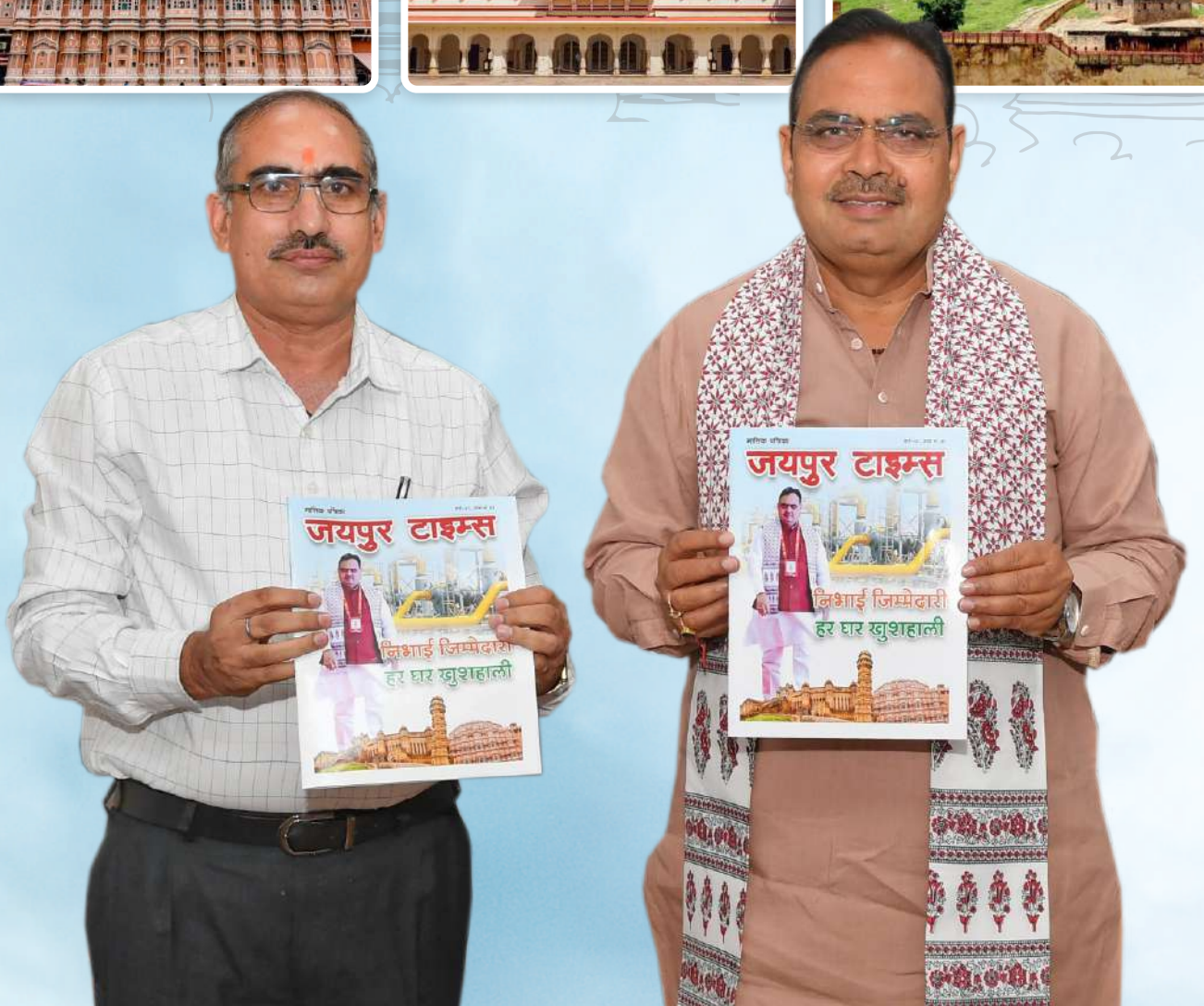

बरसों से बंद राहें अब हो रही आसान.... राहत का दूसरा नाम बना रास्ता खोलो अभियान

बरसों से बंद राहें अब हो रही..... 04

भजनलाल को मिला फ्री हैंड, मुख्यमंत्री का सिंहासन बरकरार

भजनलाल को मिला फ्री हैंड..... 05

पॉकेट डायरी वाले मंत्री जी का बड़ा कमाल, गरीब हो गया निहाल

पॉकेट डायरी वाले मंत्री जी 09

परोपकारी शख्सियत जोराराम परोपकारी डिपार्टमेंट से कमा रहे पुण्य

परोपकारी शख्सियत जोराराम..... 14

क्या अशोक गहलोत–सचिन पायलट के दिल मिल गए?

क्या अशोक–सचिन के दिल..... 18

सचिन पायलट का शक्ति प्रदर्शन, पार्टी के बड़े नेता एक मंच पर

सचिन पायलट का शक्ति प्रदर्शन..... 20

जनसेवा से मिली लोकप्रियता से शिखा मील की राजनीति में दमदार एंट्री

जनसेवा से मिली लोकप्रियता..... 23

चौधरी चरणसिंह के पोते जयंत चौधरी की निगाहें राजस्थान पर

चौधरी चरणसिंह के पोते जयंत 27

जाट समाज का गौरव है सुलेश चौधरी, दबंग महिला पुलिस ऑफिसर का अकल्पनीय प्रदर्शन

जाट समाज का गौरव है सुलेश चौधरी.... 30

ऑपरेशन सिंदूर के बारे में क्या कहती है जनता?

ऑपरेशन सिंदूर के बारे में 33

राजस्थान की गुलाबी नगरी

हवामहल, सिटी पैलेस, आमेर का किला, जलमहल, जयगढ़ किला, नाहरगढ़ किला, जंतर–मंतर, अल्बर्ट हॉल, नाहरगढ़ बायोलॉजिकल पॉर्क

राजस्थान की गुलाबी नगरी..... 36

चूरू की भौगोलिक अनूठापन

चूरू की भौगोलिक अनूठापन..... 46

सरदारशहर की सांस्कृतिक विरासत और भामाशाहों का योगदान

सरदारशहर की सांस्कृतिक विरासत.. 48

कौन होगा प्रदेश का अगला नया डीजीपी, 9 वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी के नाम पैनल में

कौन होगा प्रदेश का अगला 50

प्रकाशक, मुद्रक
रामेश्वर लाल जाट

संपादक
नीतू चौधरी

उप संपादक
कुमकुम रंगा, रूपचंद गुर्जर, रोहित शर्मा

ग्राफिक डिजाईनर
रजत जाखड़

स्वत्वाधिकारी

केम्ब्रिज मल्टी मीडिया के लिए प्रकाशक, मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा केम्ब्रिज मल्टी मीडिया प्रा.लि. सी-565, सी-4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड़, सीकर रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं सी-565, सी-4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड़, सीकर रोड़ जयपुर से प्रकाशित

संपर्क
संपादक
जयपुर टाइम्स (मासिक)
सी-588, सी-4सी स्कीम,
न्यू लोहा मण्डी रोड़
जयपुर-302013

E-mail
jaipurtimes2007@gmail.com

website
www.jaipurtimes.org

मो. 7014217770

मूल्य:- 100/- प्रति अंक
वार्षिक सदस्यता- 1251 (पोस्टर्ड चार्ज सहित)

सुधी पाठकों के लिए जयपुर टाइम्स का विशेष संदेश

भारतीय संस्कृति- जिसे विदेशों ने अपनाया, पर हम भूलते जा रहे हैं

भारत, जिसकी संस्कृति हजारों वर्षों से विश्व को दिशा देती आई है, आज अपने ही घर में उपेक्षित होती जा रही है। जिस भारतीय संस्कृति की जड़ें वेदों, उपनिषदों, योग, आयुर्वेद, सहिष्णुता, अतिथि सत्कार, और 'वसुधैव कुटुम्बकम' जैसी विचार धाराओं में गहराई से जुड़ी हैं– वह आज के आधुनिक भारत में कई बार केवल पर्व-त्योहारों और रस्मों तक सिमटती जा रही है।

विरोधाभास यह है कि जिस संस्कृति को हम आधुनिकता के नाम पर छोड़ते जा रहे हैं, उसी संस्कृति को आज पूरी दुनिया हाथों-हाथ ले रही है। अमेरिका से लेकर यूरोप, जापान से लेकर ऑस्ट्रेलिया तक, योग अपनाया जा रहा है। आयुर्वेद को वैकल्पिक चिकित्सा का सशक्त माध्यम माना जा रहा है। भारतीय खान-पान को स्वास्थ्यवर्धक बताया जा रहा है। और तो और, कई विदेशी लोग हिंदी, संस्कृत और भारतीय दर्शन को समझने में रुचि ले रहे हैं। यह सब इस बात का प्रमाण है कि भारतीय संस्कृति सिर्फ हमारे लिए नहीं, बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए मार्गदर्शक बन सकती है।

लेकिन दु:ख की बात यह है कि आज का युवा वर्ग पाश्चात्य चमक-दमक से इस कदर प्रभावित हो रहा है कि उसे अपनी जड़ों पर गर्व करना कम हो गया है। पारंपरिक पोशाकों की जगह फैशन ब्रांड्स ने ली है, भारतीय त्योहारों को 'ओल्ड फैशन' कहकर नजरअंदाज किया जा रहा है, और पारिवारिक मूल्यों की जगह एकाकीपन व आत्मकेंद्रित सोच बढ़ रही है। यह सांस्कृतिक विस्मृति हमारे भविष्य के लिए एक गंभीर चेतावनी है।

सवाल यह नहीं है कि हम पश्चिम को क्यों अपनाते हैं, सवाल यह है कि हम अपने मूल्यों को क्यों छोड़ देते हैं? पश्चिमी देश भी अपनी संस्कृति को संभाल कर चलते हैं, फिर हम क्यों नहीं?

भारतीय संस्कृति कोई बोझ नहीं है, यह एक समृद्ध धरोहर है। यह वह विरासत है जो हमें न केवल आध्यात्मिक रूप से बल्कि सामाजिक रूप से भी परिपक्व बनाती है। हमारी संस्कृति ने हमेशा हमें 'स्व' और 'समष्टि' के बीच संतुलन सिखाया है। जब हम अपनी जड़ों से जुड़े रहते हैं, तब ही हम विश्व को कुछ देने योग्य बनते हैं। अन्यथा, हमारी पहचान खोने का खतरा सदैव बना रहेगा।

इसलिए आवश्यकता है कि हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को सिर्फ तकनीकी ज्ञान ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक बोध भी दें। स्कूलों में भारतीय कला, संगीत, शास्त्रों और संस्कारों की पढ़ाई अनिवार्य होनी चाहिए। माता-पिता को भी चाहिए कि वे बच्चों को भारतीय रीति-रिवाजों और पारिवारिक मूल्यों से परिचित कराएं। सोशल मीडिया और मनोरंजन उद्योग को भी यह सोचने की जरूरत है कि वह समाज को किस दिशा में ले जा रहे हैं।

समय आ गया है कि हम आधुनिकता को अपनाते हुए भी अपनी संस्कृति को गर्व से पहनें, समझें और आगे बढ़ाएं। हमें यह याद रखना चाहिए कि जिस वृक्ष की जड़ें मजबूत होती हैं, वही आंधियों में खड़ा रह सकता है। भारतीय संस्कृति हमारी जड़ है–इसे सींचना और सम्मान देना हमारा कर्तव्य है।

–प्रधान संपादक
रामेश्वरलाल जाट

बरसों से बंद राहें अब हो रही आसान.... राहत का दूसरा नाम बना रास्ता खोलो अभियान

जयपुर, 11 मई। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के निर्देशों की अनुपालना में जयपुर जिले में रास्ता खालो अभियान का प्रभावी संचालन किया जा रहा है। रास्ता खोलो अभियान के सफल क्रियान्वयन एवं अधिक से अधिक आमजन को लाभांवित करने के लिए जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी स्वयं अभियान की लगातार मॉनिटरिंग कर रहे हैं। यही कारण है कि 6 महीने से भी कम समय में जयपुर जिला प्रशासन ने अभियान के तहत 1 हजार से अधिक रास्ते खुलवाने में कामयाबी हासिल की है।

- जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी स्वयं कर रहे अभियान की मॉनिटरिंग
- 6 महीने से भी कम समय में जयपुर जिला प्रशासन ने खुलवाए 1 हजार 87 रास्ते
- सहमति एवं समझाइश से प्रत्येक तहसील में हर सप्ताह खुलवाए जा रहे 3 रास्ते

अतिरिक्त जिला कलक्टर एवं अभियान की नोडल अधिकारी श्री देवेन्द्र कुमार जैन ने बताया कि जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी के निर्देशन में प्रत्येक तहसील में हर सप्ताह 3 रास्ते खुलवाकर लाखों ग्रामीणों को राहत प्रदान की जा रही है। अभियान के तहत जिला प्रशासन ने समझाइश एवं सहमति से गांवों, खेतों और ढाणियों के बरसों से बंद पड़े एक हजार 87 रास्ते खुलवाए गए हैं। नोडल अधिकारी श्री देवेन्द्र कुमार जैन ने बताया कि 15 नवंबर 2024 से 11 मई 2025 तक अभियान के तहत जिले में फागी तहसील में सर्वाधिक 88 रास्ते खुलवाए गए हैं। वहीं, अभियान के तहत जयपुर तहसील में 4 रास्ते, कालवाड़ तहसील में 8 रास्ते, आमेर तहसील में 60 रास्ते, जमवारामगढ़ तहसील में 49 रास्ते, आंधी तहसील में 55 रास्ते, बस्सी तहसील में 56 रास्ते, तूंगा तहसील में 43 रास्ते खुलवाए गए। वहीं, शाहपुरा तहसील में 70 रास्ते, जोबनेर तहसील में 64 रास्ते, किशनगढ़-रेनवाल तहसील में 52 रास्ते, फुलेरा तहसील में 58 रास्ते, रामपुरा-डाबड़ी तहसील में 44 रास्ते, जालसू तहसील में 35 रास्ते, चौमूं तहसील में 76 रास्ते, सांगानेर तहसील में 26 रास्ते खुलवाए गए। उन्होंने ने बताया कि चाकसू तहसील में 64 रास्ते, कोटखावदा तहसील में 46 रास्ते, माधोराजपुरा तहसील में 60 रास्ते, दूदू तहसील में 57 रास्ते एवं मौजमाबाद तहसील में 72 रास्ते खुलवाए गए। उन्होंने बताया कि जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने अधिकारियों को रास्ता खोलो अभियान के तहत बंद रास्ते खुलवाए जाने के पश्चात खोले गए रास्तों पर ग्रेवेल, सी.सी. रोड़ बनवाये जाने की कार्यवाही भी जल्द से जल्द अमल में लाने के निर्देश दिये हैं, इन निर्देशों की अनुपालना में अधिकांश स्थानों पर ग्रेवल रोड बनाने की कार्यवाही भी आरंभ की जा चुकी है। वहीं, जिन रास्तों के वाद न्यायालय में विचाराधीन है परिवादियों द्वारा संबंधित न्यायालय से ही अनुतोष प्राप्त किया जाएगा। ग्रामीण क्षेत्रों में रास्तों की भूमि पर अतिक्रमण को लेकर जनसुनवाई के दौरान बड़ी संख्या में परिवाद प्राप्त होते हैं। रास्तों को लेकर न्यायालय में भी वाद दायर किए जाते रहते हैं। ऐसे प्रकरणों में निरन्तर बढ़ोतरी होने से आमजन को न्यायालय के चक्कर लगाने एवं जन-धन की हानि होने के साथ-साथ क्षेत्र की कानून व्यवस्था भी प्रभावित होती है। इसलिए प्रशासन ने रास्ते सम्बन्धी समस्याओं के निराकरण के लिए 'रास्ता खोलो अभियान' चलाने का निर्णय लिया गया।

भजनलाल को मिला फ्री हैंड, मुख्यमंत्री का सिंहासन बरकरार

> "मंत्रिमंडल पुनर्गठन और विस्तार के लिए भी मुख्यमंत्री को दी गई आजादी, किसी भी समय हो सकता है मंत्रिमंडल का विस्तार"

जयपुर। जो यह सोचते थे कि भजनलाल शर्मा को मुख्यमंत्री पद से जल्दी ही हटाया जा सकता है, उन्हें अब इस खबर पर भी गौर कर ही लेना चाहिए कि भाजपा के दिल्ली दरबार में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को मंत्रिमंडल के पुनर्गठन और विस्तार के लिए पूरी तरह से फ्री हैंड दे दिया है, जब मंत्रिमंडल विस्तार और पुनर्गठन के लिए शर्मा को फ्री हैंड मिल ही गया है तो फिर यह भी समझ लेना चाहिए कि उनकी मुख्यमंत्री की कुर्सी पर किसी भी तरह का कोई संकट नहीं है, भाजपा का दिल्ली दरबार भजनलाल शर्मा के कामों से पूरी तरह खुश बताया गया है, बड़ी बात यह है कि भजनलाल सरकार के अब तक के कार्यकाल में सरकार के किसी मंत्री पर भ्रष्टाचार जैसे ना तो आरोप लगे और ना ही किसी भी तरह का कोई बड़ा घपला तो क्या कोई छोटा घपला भी सामने नही आया।

जो यह दर्शाता है कि राजस्थान सरकार केंद्र की मोदी सरकार की तरह भ्रष्टाचार में जीरो टॉलरेंस नीति को लेकर पूरी तरह से गंभीर है, भाजपा के चुनावी संकल्प पत्र और बजट घोषणा के क्रियान्वयन में भी भजनलाल सरकार कसौटी पर खरा उतर रही है, खुद मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का सुबह से लेकर देर रात तक सरकारी कामों में व्यस्त रहने की प्रक्रिया पर भी भाजपा का दिल्ली दरबार नजरे जमाए हुए हैं ऐसे में भाजपा हाई कमान को कोई कारण ही नजर नहीं आया कि राजस्थान सरकार अपनी जिम्मेवारी का ठीक तरह से निर्वहन नहीं कर रही इसलिए सरकार के कामों से प्रभावित और खुश होकर भाजपा के दिल्ली दरबार में भजन लाल शर्मा को पूरी तरह से फ्री हैंड दे दिया है, शर्मा को फ्री हैंड मिलने के बाद एक तरफ जहां प्रदेश के भाजपा नेताओं के बार-बार के दिल्ली के दौर में कमी आएगी तो दूसरी तरफ मुख्यमंत्री शर्मा भी हर ज्वलंत मुद्दे और विषय पर त्वरित निर्णय लेने की स्थिति में जरूर आए हैं, जानकार लोगों का कहना है कि भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर नई नियुक्ति के बाद प्रदेश में मंत्रिमंडल का पुनर्गठन और विस्तार होना तय है और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर नई चालू जून माह में हो सकती है इसलिए प्रदेश के मंत्रिमंडल विस्तार की प्रक्रिया के भी अब बहुत जल्दी ही संपादित होने की संभावना है।

देखते ही देखते 'भागीरथ ऋषि' बन गए भजनलाल

प्रदेश की जनता की प्यास बुझाने और खेतों में समुचित पानी पहुंचाने के लिए पिछले डेढ़ साल में मुख्यमंत्री के तौर पर भजनलाल शर्मा ने जो काम करके दिखाया है उससे यह उम्मीद जताई जा रही है कि मारू प्रदेश राजस्थान में आने वाले सालों में न तो पीने के पानी की कमी रहेगी और ना ही खेत पानी के लिए तरसेंगे क्योंकि पानी को लेकर पिछले डेढ़ साल में राजस्थान के भजनलाल सरकार ने वर्षों से चले आ रहे पड़ोसी राज्यों से पानी के मामलों को सुलझाया उसे मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की चतुराई, निर्णय लेने की क्षमता और बुद्धिकौशल साफ नजर आई चाहे वह मध्य प्रदेश से ईस्टर्न कैनल योजना को लेकर समझौता करने की बात हो और इस योजना को धरातल पर लाने की बात हो या फिर हरियाणा से वर्षों से चले आ रहे जल बंटवारे को सुलझाने की बात हो उक्त तमाम बड़े मामलों को उलझा कर भजनलाल शर्मा ने राजस्थान के कई जिलों की पानी की समस्या का समाधान हमेशा हमेशा के लिए निकाल लिया है इतना ही नहीं अभी हाल ही में जिस तरह से पूरे प्रदेश में एक बड़े अभियान के तहत सुखी बावड़ियों, झीलों, तालाबों, झरनों, सूखे कुवे इत्यादि की हालत सुधारने के लिए और बरसात के दिनों में पानी की एक-एक बूंद का संचय करने के लिए एक बड़ा कार्यक्रम का शुभारंभ किया उससे ऐसा लगता है कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा प्रदेश में पानी की समस्या को लेकर काफी गंभीर हैं और इस समस्या को हमेशा हमेशा के लिए मिटाने के लिए युद्ध स्तर पर तैयारी भी शुरू कर दी है जिससे निश्चित रूप से बहुत जल्दी ही राजस्थान में पानी की कोई कमी नहीं रहेगी हर घर में जहां पानी लोगों को समुचित मात्रा में मिलेगा तो किसानों को भी पानी की समस्या से रूबरू नहीं होना पड़ेगा इतना ही नहीं जयपुर के निकट रामगढ़ झील जिसने कभी करीब 80 साल तक जयपुर के लोगों की प्यास बुझाई उस झील को फिर से जीवंत करने के लिए और इस झील में बीसलपुर बांध का पानी लाने के लिए भजनलाल सरकार ने युद्ध स्तर पर काम शुरू किया है इसलिए हर कोई अब यह कह रहा है की मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा प्रदेश की जनता और किसान वर्ग के लिए 'भागीरथ ऋषि' बने हुए हैं, राजनीतिक विश्लेषक और पानी के संचय के लिए रिसर्च कर रहे विशेषज्ञों का भी कहना है जो प्रयास पानी को लेकर प्रदेश की भजनलाल सरकार ने किए हैं इस तरह के प्रयास पहले राजस्थान में किसी भी पार्टी की सरकार ने नहीं किया हालांकि पानी की समस्या को सुलझाने के लिए सरकारों ने कई तरह के फैसले लिए कई तरह के प्रयोग भी किया लेकिन ईस्टर्न कैनल योजना को फाइलों से निकाल कर जमीन पर लाने का काम भजनलाल सरकार ने करके एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है क्योंकि इससे राजस्थान के पूर्वी हिस्से के कई जिलों को पानी की समस्या से छुटकारा मिलेगा, केंद्र सरकार की ओर से संचालित की जा रही हर घर नल योजना के सफल क्रियान्वयन के लिए भी प्रदेश सरकार पूरी तरह से सजग है पिछली गहलोत सरकार में इस योजनाओं को लेकर भारी कमियां, लापरवाही, भ्रष्टाचार जैसे मामले उजागर हुए प्रदेश भर में अनेकों ऐसी शिकायतें मिली जहां पर पानी की पाइपलाइन बिछाई नहीं गई और उनके पैसे फर्जीवाड़ी से उठा लिए गए लेकिन भजनलाल सरकार इस योजना की पारदर्शक तरीके से मॉनिटरिंग करके इस योजना को बेहतर तरीके से संपादित करने में जुटी है जिसके अच्छे परिणाम भी सामने आ रहे हैं, जानकार लोगों का कहना है कि मारू प्रदेश राजस्थान के लिए पानी की समस्या शुरू से ही रही है, वैसे कुछ सालों से इंद्र भगवान की आशीर्वाद से बरसात में ठीक-ठाक पानी बरस जाता है जिसकी वजह से सूखे जैसे हालात फिलहाल नहीं बन रहे लेकिन सब जानते हैं कि राजस्थान और अकाल के बीच गहरी दोस्ती है जिसकी वजह से कई बार खेत पानी के लिए तरस जाते हैं और कई जिलों में लोग पीने के पानी के लिए भी परेशान रहते हैं लेकिन मुख्यमंत्री बनने के बाद से लेकर अब तक भजनलाल शर्मा ने पानी की इस भीषण समस्या को हमेशा हमेशा के लिए दूर करने के लिए नए तरीके, नई योजनाएं, नए प्रयोग, पड़ोसी राज्यों से नए समझौते किए हैं उनसे निश्चित रूप से बहुत जल्दी ही राजस्थान का एक भी जिला पीने के पानी और खेत में पानी से वंचित नहीं रहेगा इसलिए आजकल सब यही कह रहे हैं कि भजनलाल शर्मा एक तरीके से मुख्यमंत्री कम और भागीरथ ऋषि के रूप में ज्यादा नजर आ रहे हैं।

अब फ्रंट फुट पर बैटिंग करेंगे मुख्यमंत्री भजनलाल कमजोर परफॉर्मेंस वाले मंत्रियों की हो सकती है छुट्टी

जग जाहिर है कि जब से भजन लाल शर्मा ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली उस दिन से ही उनके सामने कई बड़ी चुनौतियां आकर खड़ी हो गई थी, एक तरफ डॉक्टर किरोड़ी मीणा की नाराजगी तो दूसरी तरफ पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे और उनके समर्थक नेताओं का भी शुरू-शुरू में भजनलाल शर्मा को समर्थन नहीं मिला लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया वैसे-वैसे कठिन और विषम परिस्थितियों में भी भजनलाल शर्मा ने प्रदेश की जनता की समस्याओं को सुलझाने और प्रदेश के विकास को गति देने में अपनी ओर से कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी बड़े-बड़े निर्णय लिए, बड़े-बड़े फैसले किए, भाजपा के संकल्प पत्र के वादों को एक-एक करके पूरा करने का बीड़ा उठाया बजट के वादों को भी पूरा करने के युद्ध स्तर पर प्रयास शुरू किया और पिछले डेढ़ साल में पानी, बिजली, सड़क, चिकित्सा, शिक्षा, उद्योग, कृषि, बेरोजगारी, रोजगार, कानून व्यवस्था, अपराधों की रोकथाम, पुलिसिंग, नई सरकारी भर्ती परीक्षाओं का सफल आयोजन, पिछली गहलोत सरकार में सरकारी भर्ती परीक्षाओं में पेपर लीक मामलों में ताबड़तोड़ गिरफ्तारियां इत्यादि विषयों में भजनलाल सरकार ने उल्लेखनीय प्रदर्शन किया इसकी वजह से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी कई बार भजनलाल सरकार के काम की तारीफ की और अब भारतीय जनता पार्टी के दिल्ली में बैठे सभी बड़े लीडर मुख्यमंत्री के तौर पर भजनलाल शर्मा की कार्यशैली और उनके व्यवहार की खूब तारीफ करते हैं, भजनलाल शर्मा खुद को नरेंद्र मोदी की तरह ही 24 घंटे में 18 घंटे सरकारी कामों में व्यस्त रखते हैं इसलिए भाजपा के दिल्ली दरबार ने मुख्यमंत्री भजनलाल को पूरी तरह से फ्री हैंड दे दिया है अब मुख्यमंत्री शर्मा खुलकर प्रदेश के राजनीति के पिच पर फ्रंट फुट पर बैटिंग करने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं, अपने विवेक और बुद्धि कौशल से सत्ता से जुड़े हर विषय को अब भजनलाल शर्मा खुद सुलझाएंगे, जानकार लोगों का कहना है कि पिछले डेढ़ साल में मंत्रिमंडल के जिन सदस्यों का काम ठीक नहीं रहा जिनका परफॉर्मेंस अच्छा नहीं रहा उन्हें मंत्री पद से हटाया जा सकता है और उनकी जगह नए साफ छवि के ऊर्जावान चेहरों को मंत्रिमंडल में शामिल किए जाने की बात कही जा रही है तथा प्रदेश के निगम, बोर्ड इत्यादि में राजनीतिक नियुक्तियों के लिए भी भजनलाल शर्मा गंभीरता से सोच रहे हैं, अब भजनलाल सरकार के आने वाले 3 साल काफी महत्वपूर्ण रहेंगे और इन तीन सालों में भजनलाल शर्मा प्रदेश की तस्वीर और तकदीर दोनों को बदलने के लिए कृत संकल्प दिख रहे हैं।

पीएम नरेंद्र मोदी को फॉलो कर रहे भजनलाल शर्मा

बताया गया है कि भजनलाल शर्मा ने जिस दिन मुख्यमंत्री पद की शपथ ली उस दिन से ही उनकी दिनचर्या पूरी तरह से बदल गई है जैसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 24 घंटे में 18 घंटे से ज्यादा सरकारी कामों में खुद को व्यस्त रखते हैं ठीक उसी तरह से भजनलाल शर्मा भी 24 घंटे में खुद को 18 घंटे सरकारी कामों में व्यस्त रखते हैं, मुख्यमंत्री शर्मा ना तो कहीं घूमने जाते हैं और ना ही परिवार के साथ समय बिताते हैं, हमेशा सरकार से जुड़े कामों में खुद को व्यस्त रखते हैं, प्रदेश भर में दौरा करके लोगों की समस्याओं का संकलन कर रहे हैं अलग-अलग क्षेत्र की अलग-अलग समस्याओं का संकलन करके उनके निराकरण का प्रयास कर रहे हैं, नियमित रूप से सिलसिलेवार विभिन्न सरकारी विभागों के आला अधिकारियों के साथ बैठकों का आयोजन करके विभागों के कामकाज की समीक्षा करते हैं और फिर उन्हें आवश्यक दिशा निर्देश भी देते हैं तो दूसरी तरफ पार्टी के संगठन से जुड़े लोगों कभी पूरा आदर सम्मान करते हैं और सत्ता और संगठन के बीच अच्छा तालमेल बने सरकार के काम का लेखा-जोखा भाजपा के संगठन से जुड़े लोग हर घर तक हर व्यक्ति तक पहुंचा इसके लिए भी नियमित रूप से मुख्यमंत्री शर्मा प्रदेश भाजपा के संगठन से जुड़े लोगों से मुलाकात करते रहते हैं पूरी ईमानदारी और कर्मठता से खुद काम करते हैं और अपने मंत्रिमंडल के साथियों को भी पूरी ईमानदारी और निष्ठा से काम करने के लिए प्रेषित कर रहे हैं उसी का नतीजा है कि एक तरफ जहां भजनलाल सरकार में अब तक के कार्यकाल में किसी बड़े भ्रष्टाचार का मामला सामने नहीं आया तो दूसरी तरफ मंत्रिमंडल के सदस्यों पर भी किसी भी तरह के भ्रष्टाचार के आप अब तक नहीं लगे हैं वजह यही है कि मुख्यमंत्री शर्मा खुद मंत्रिमंडल के सदस्यों के कामकाज की नियमित रूप से समीक्षा करते रहते हैं और उन्हें श्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

पिछले डेढ़ साल में एक भी सरकारी भर्ती परीक्षा में नहीं हुआ पेपर लीक, भजनलाल सरकार की बड़ी उपलब्धि

प्रदेश की भजनलाल सरकार के कार्यकाल के दौरान अब तक जितनी भी सरकारी भर्ती परीक्षाओं का आयोजन हुआ है उनमें एक भी भर्ती परीक्षा में पेपर लीक जैसी घटना देखने को नहीं मिली जबकि पिछली गहलोत सरकार में विभिन्न सरकारी भर्ती परीक्षाओं में व्यापक पैमाने पर पेपर लीक मामले उजागर हुए जिनकी जांच अब तक जारी है पिछली गहलोत सरकार की विदाई में इन पेपर लीक मामलों का बड़ा रोल रहा क्योंकि एक के बाद एक सरकारी भर्ती परीक्षाओं में पेपर लीक होने की वजह से प्रदेश के युवाओं में गहलोत सरकार के प्रति भरोसा और विश्वास कमजोर हो गया था जिसकी वजह से विधानसभा चुनाव के दौरान प्रदेश के युवा वर्ग ने कांग्रेस पार्टी से पूरी तरह से दूरी बना ली इसका फायदा भारतीय जनता पार्टी को मिला इसलिए प्रदेश में भाजपा की सरकार के गठन के बाद जब भजन लाल शर्मा ने मुख्यमंत्री की जिम्मेवारी संभाली तो वे यह जानते थे कि गहलोत सरकार की विदाई में पेपर लीक के मामलों का अहम रोल रहा इसलिए गहलोत सरकार में पेपर लीक के मामलों की जांच के लिए मुख्यमंत्री की शपथ लेने के तुरंत बाद विशेष जांच कमेटी का गठन किया यह कमेटी विभिन्न पेपर लीक के मामलों की गंभीरता से जांच कर रही है जिसमें राजस्थान लोक सेवा आयोग के दो पूर्व मेंबर भी गिरफ्तार किया जा चुके हैं बड़ी संख्या में लगातार आए दिन गिरफ्तारियां हो रही है सब इंस्पेक्टर भर्ती परीक्षा में भी व्यापक पैमाने पर आए दिन गिरफ्तारियां हो रही है 55 ट्रेनिंग इंस्पेक्टर्स को गिरफ्तार कर लिया गया है और बड़ी बात यह है कि भजनलाल सरकार ने अब तक जितनी भी सरकारी भर्ती परीक्षाओं का आयोजन किया है उन आयोजनों में सुरक्षा के पुख्ता प्रबंध किए गए, पेपर लीक जैसे मामले नहीं हो इसके लिए अधिकारियों की जिम्मेवारी सुनिश्चित की गई जो एजेंसियां परीक्षाओं का आयोजन करवा रही हैं उन्हें सख्त निर्देश दिए गए पुलिस और खुफिया विभाग को भी पेपर लीक जैसे मामलों के लिए पूरी तरह से अलर्ट किया गया

उसी का नतीजा है कि अब तक एक भी सरकारी भर्ती परीक्षा में पेपर ली जैसे मामले सामने सरकारी भर्ती परीक्षा में पेपर लिखे जैसे मामले सामने नहीं आए जो भजनलाल सरकार के लिए बहुत ही बड़ा प्लस पॉइंट है द्य बताया गया है कि अब तक करीब 150 सरकारी भर्ती परीक्षाओं का आयोजन हो चुका है लेकिन इनमें एक भी भर्ती परीक्षा में पेपर लीक और गड़बड़ी की शिकायतें सामने नहीं आई इसलिए प्रदेश के बेरोजगार युवाओं को जोसरकारी भर्ती परीक्षाओं की तैयारी कर रहा है उन्हें अब यह लगने लगा है कि भजनलाल सरकार भर्ती परीक्षाओं का आयोजन ईमानदारी से करने को लेकर पूरी तरह से कृत संकल्प और दृढ़ संकल्प दिख रही है।

पॉकेट डायरी वाले मंत्री जी का बड़ा कमाल, गरीब हो गया निहाल

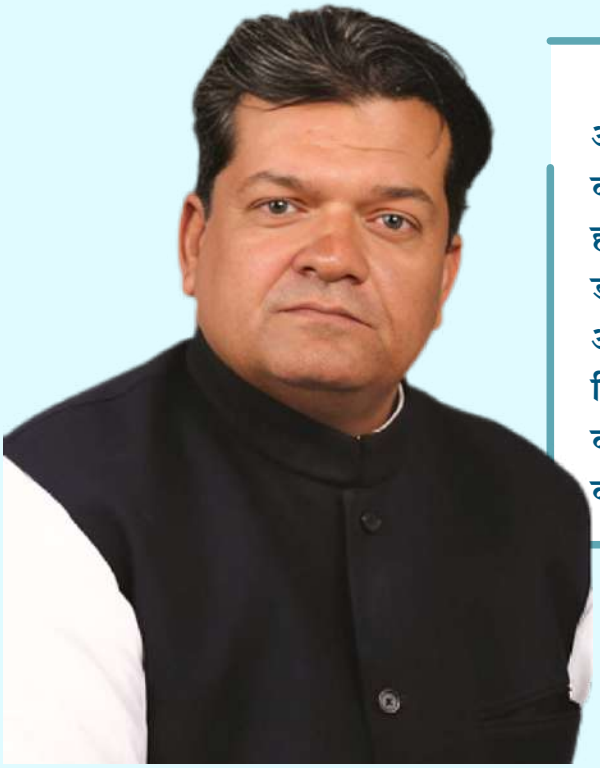

"सिर्फ डेढ़ साल में ही सुमित गोदारा ने खाद्य और नागरिक आपूर्ति विभाग की बदल दी तस्वीर, गरीबों का हक डकार रहे करीब 12 लाख 58000 सक्षम लोगों को खाद्य सुरक्षा योजना से हटाया और 9 लाख वंचित लोगों को योजना से जोड़ा, राशन डीलरों की समस्याओं का भी किया निवारण, विभाग में भ्रष्ट अधिकारियों और कर्मचारियों के खिलाफ तगड़ा एक्शन, विधानसभा में भी सत्ता पक्ष और उपपक्ष के विधायकों केसवालों का तथ्यात्मक तरीके से दिया जवाब और विपक्ष के सदस्यों की कर दी बोलती बंद"

जयपुर। प्रदेश के राजनीतिक गलियारों में पॉकेट डायरी वाले मंत्री कहे जाने वाले खाद्य और नागरिक आपूर्ति मंत्री सुमित गोदारा ने अपनी कार्यशैली और नवीन प्रयोगों से खाद्य और नागरिक आपूर्ति विभाग को नए कलेवर और नए अंदाज में ढाल दिया है, सिर्फ डेढ़ साल के अपने इस अल्प समय के कार्यकाल मेंही खाद्य और नागरिक आपूर्ति विभाग में विगत कई सालों से चली आ रही भारी गड़बड़ियां, लापरवाही और भ्रष्टाचार का जड़ से सफाई करके विभाग को नई दिशा दी है जिसकी वजह से एक तरफ जहां वंचित परिवारों और वंचित लोगों को खाद्य सुरक्षा योजना का लाभ मिलने लगा है तो दूसरी तरफ गरीबों का हक डकार रहे लाखों सक्षम लोगों को खाद्य सुरक्षा योजना से बाहर का रास्ता दिखाकर विभाग में विगत कई सालों से चली आ रही इस मनमानी पर ब्रेक लगा दिया जिससे गरीबों और वंचित परिवारों को बेहतर तरीके से खाद्य सुरक्षा योजना का लाभ मिलने लगा है, बीकानेर जिले की लूणकरणसर विधानसभा सीट से लगातार दूसरी बार विधायक चुने गए सुमित गोदारा ने कैबिनेट मंत्री के रूप में खुद को साबित किया है जिसकी वजह से एक तरफ जहां मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा मंत्री के तौर पर सुमित गोदारा से काफी प्रभावित हैं तो दिल्ली में विराजमान भारतीय जनता पार्टी के सभी बड़े नेता गोदारा के मंत्री के रूप में किए गए कामों से काफी खुश हैं। गोदारा की वर्किंग स्टाइल और उनकी ईमानदार छवि उनके पोलिटिकल कैरियर में चार चांद लगाए हुए हैं, गोदारा भले ही कैबिनेट मंत्री बन गए हो लेकिन उनका व्यवहार, बोलचाल, रहन-सहन पहले जैसा ही है और किसान परिवार से ताल्लुक रखने वाला यह शख्स अपने विधानसभा क्षेत्र के लोगों के कल्याण और विकास के लिए भी पूरी तन्मयता से काम करते हुए दिख रहे हैं, अपने विधानसभा क्षेत्र की हर छोटी बड़ी समस्या चाहे वह किसी भी विभाग की हो उस समस्या का निवारण करके ही मानते हैं, लोगों की समस्याओं के लिए शासन सचिवालय में अपने कक्ष में सप्ताह के शुरू के तीन दिन जनसुनवाई कार्यक्रम का आयोजन तो करते ही हैं इसके अलावा बीकानेर स्थित अपने निजी आवास पर भी समय-समय पर जनसुनवाई कार्यक्रम का आयोजन करके लोगों की समस्याओं का निवारण करते हुए नजर आ रहे हैं जिसकी वजह से यह नौजवान एक्टिव मंत्री भारतीय जनता पार्टी के छोटे-बड़े कार्यकर्ताओं और नेताओं में तो पॉपुलर है ही इसके अलावा आम जन में भी अपने अच्छे व्यवहार और अपने श्रेष्ठ कामों से काफी लोकप्रिय हो गए हैं।

सुमित गोदारा की पॉकेट डायरी का क्या है राज?

सुमित गोदारा की जेब में हमेशा एक पॉकेट डायरी रहती है, अपने रूटीन कार्यक्रम में दिन में जिन-जिन लोगों से मिलते हैं उनमें अगर कोई किसी मुद्दे पर किसी समस्या पर कोई सलाह दे तो वे हाथों हाथ उस इस पॉकेट डायरी में लिख लेते हैं, अक्सर देखा जाता है कि किसी मंत्री का पर्सनल सेक्रेटरी या फिर विभाग का अफसर या कर्मचारी इस तरह की सलाह को अपनी नोटबुक में नोट करता है लेकिन यहां सुमित गोदारा खुद जब में पॉकेट डायरी रखते हैं और खुद नोट करते हैं जो अपने आप ही सुमित गोदारा को अन्य राजनेताओं और मंत्रियों से अलग बना देती है राजस्थान के इतिहास में सुमित गोदारा अकेले ऐसे राजनेता हैं जो अपनी जेब में हमेशा पॉकेट डायरी रखते हैं ऐसा नहीं है कि मंत्री बनने के बाद ही उन्होंने पॉकेट डायरी जेब में रखना शुरू किया है जब वह विधायक थे तब भी डायरी हमेशा अपने साथ रखते थे और लोगों की किसी मुद्दे पर कोई सलाह और राय होती थी तो उसे इस डायरी में नोट कर लेते थे। गोदारा अभी कैबिनेट मंत्री हैं और अपने विभाग से संबंधित जो भी कोई योजनाएं बनाते हैं उन योजनाओं को बनाते समय अपनी इस पॉकेट डायरी में लिखी गई सलाह को भी ध्यान में रखते हैं। इसीलिए प्रदेश के आमजन में और राजनीतिक गलियारों में सुमित गोदारा पॉकेट डायरी वाले मंत्री जी के रूप में पुकारे जाते हैं।

गरीबों का हक डकार रहे सक्षम परिवारों को बोल्ड करके वापस भेज दिया पवेलियन

सरकार ने गरीब लोगों के लिए खाद्य योजना की सुविधा बनाई थी लेकिन राजस्थान सहित देश के कई अन्य राज्यों में भी इस सुविधा का लाभ आर्थिक दृष्टि से मजबूत लोग भी उठा रहे थे जबकि जिन लोगों को इसका लाभ मिलना चाहिए उनमें कई परिवारों को इसका लाभ नहीं मिल रहा था यही हालत राजस्थान की भी थी इस तरह की गड़बड़ी पिछले कई सालों से प्रदेश में चली आ रही थी जब खाद्य सुरक्षा योजना में अपने प्रभाव का इस्तेमाल करके सक्षम लोग भी इस सूची में खुद को शामिल किए हुए थे और इस योजना का जमकर लाभ उठा रहे थे यहां तक की सक्षम परिवारों के लोग खुद तो लाभ उठाई रहे थे इसके अलावा उनके पालतू जानवरों के नाम भी खाद्य योजना सूची में ऐड किया हुआ था जिसकी वजह से जानवरों के नाम पर भी खाद्य सुरक्षा योजना का जमकर फायदा उठा रहे थे लेकिन जैसे ही सुमित गोदारा ने खाद्य और नागरिक आपूर्ति विभाग की जिम्मेवारी अपने हाथों में ली उसी दिन से उन्होंने खाद्य सुरक्षा योजना में सक्षम लोगों को चेतावनी दी और कहा कि 'गिव अप' कार्यक्रम के तहत सक्षम लोग खुद आगे बढ़कर अपना नाम सूची से हटा लेंगे तो सरकार उनके खिलाफ किसी भी प्रकार की कोई कार्रवाई नहीं करेगी लेकिन अगर सरकार की चेतावनी के बावजूद भी उन्होंने अपना नाम नहीं हटाया तो सरकार फिर अपने स्तर पर न केवल खाद्य सुरक्षा योजना से सक्षम परिवारों के लोगों के नाम सूची से निरस्त करेगी बल्कि ऐसे लोगों के खिलाफ सरकार कठोर कार्रवाई भी करेगी इस तरह की चेतावनी के बाद पिछले डेढ़ साल में 12 लाख 58000 सक्षम लोगों के नाम सूची से हटाए गए तथा वंचित निर्धन 9 लाख लोगों के नाम सूची में ऐड किए गए जिसकी वजह से गरीब और वंचित लोगों को जो इस योजना का फायदा नहीं उठा पा रहे थे अब वे लोग इस योजना का फायदा उठा रहे हैं जिसकी वजह ऐसे परिवारों को काफी राहत मिली है जानकार लोगों का कहना है कि सुमित गोदारा किसान परिवार से ताल्लुक रखते हैं ग्रामीण इलाकों में रहते हैं ग्रामीण इलाकों में सक्रिय रहे हैं इसलिए उन्हें इस बात की अच्छी तरह से जानकारी थी कि शहरी और ग्रामीण दोनों ही इलाकों में सक्षम लोग अपनी अच्छी जान पहचान और प्रभाव का इस्तेमाल करके निर्धनों के लिए बनी खाद्य सुरक्षा योजना पर डाका डाल रहे हैं इसलिए उन्होंने विभाग की जिम्मेवारी हाथ में लेते ही सबसे पहले इसी विषय पर फोकस किया और सक्षम लोगों के नाम सूची से निरस्त किए।

पहले चुनाव मानिकचंद सुराना से हारे लेकिन बाद में दो चुनाव लगातार जीते सुमित गोदारा ने

हालांकि सुमित गोदारा अपने जीवन का पहला विधानसभा चुनाव मानिकचंद सुराना से हार गए थे लेकिन वर्ष 2018 के विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता देवी सिंह भाटी के कहने पर भारतीय जनता पार्टी ने सुमित गोदारा को लूणकरणसर से टिकट दिया हालांकि पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे स्वर्गीय सहीराम को टिकट देना चाहती थी लेकिन देवी सिंह भाटी के कहने पर पार्टी ने सुमित गोदारा पर ज्यादा विश्वास किया और फिर सुमित गोदारा यह चुनाव जीत भी गए बाद में वर्ष 2023 के विधानसभा चुनाव में फिर से पार्टी ने उन्हें टिकट दिया और गोदारा फिर से चुनाव जीत के इस तरह से लगातार एक ही विधानसभा क्षेत्र से उन्होंने दो चुनाव जीते, जाट समाज इसे ताल्लुक रखने वाले सुमित गोदारा को ओबीसी कोटा से प्रदेश की भजन लाल सरकार के मंत्रिमंडल में मिली और उन्हें कैबिनेट मंत्री का दर्जा दिया गया और खाद्य व नागरिक आपूर्ति विभाग जैसे महत्वपूर्ण विभाग की जिम्मेदारी गोदारा के हाथों में सौंप गई। गोदारा मिलनसार व्यक्तित्व के धनी हैं तथा अपने विधानसभा क्षेत्र के लोगों को अपने परिवार की तरह ही मानते हैं, क्षेत्र के लोगों के सुख और दुख के भागीदार बने हुए हैं, गोदारा की पत्नी को क्षेत्र के लोग 'भाभी जी' पुकारते हैं, चाहे शादी हो या घर का मुहूर्त या फिर कोई भी किसी भी जाति और बिरादरी के लोगों के यहां मांगलिक कार्यक्रम होते हैं तो बिन बुलाए उसे परिवार के साथ खुशियों में शामिल होते हैं, अगर किसी भी परिवार में दुख की घड़ी और कोई संकट आता है तो तुरंत सूचना मिलने पर मौके पर पहुंचते हैं और परिवार वालों को शान देते हैं और अपने स्तर पर पीड़ित परिवार का हर तरह का सहयोग करते हैं। अपने इसी व्यवहार से अपने निर्वाचन क्षेत्र में गोदारा काफी पॉपुलर लोकप्रिय नेता के रूप में स्थापित हो चुके हैं।

बीकानेर जिले में भाजपा के 6 विधायकों में मंत्रिमंडल में सिर्फ गोदारा की लॉटरी खुली

वर्ष 2023 के विधानसभा चुनाव में बीकानेर जिले की सात विधानसभा सीटों में से 6 विधानसभा सीटों पर भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवारों को जीत मिली। सुमित गोदारा, जेठानंद, डॉ विश्वनाथ, ताराचंद सारस्वत, सिद्धि कुमारी, अंशुमान सिंह ने जीत हासिल की थी और नोखा विधानसभा सीट पर कांग्रेस ने जीत दर्ज की थी लेकिन प्रदेश में भजनलाल सरकार में बीकानेर जिले में अकेले सुमित गोदारा को मंत्रिमंडल में कैबिनेट का दर्जा मिला जबकि पिछली गहलोत सरकार में बीकानेर जिले में कांग्रेस के तीन विधायकों गोविंदराम मेघवाल, बीडी कल्ला और भंवर सिंह भाटी को मंत्रिमंडल में जगह मिली थी इस बार भाजपा सरकार में बीकानेर जिले से एक विधायक को ही मंत्रिमंडल में जगह मिली है बताया गया है कि सुमित गोदारा ओबीसी कैटेगरी में आते हैं केंद्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल को भी मंत्रिमंडल में शामिल करने की सिफारिश की बताएं अब देखने वाली बात यह है कि वर्ष 2023 के विधानसभा चुनाव में पिछली गहलोत सरकार में बीकानेर जिले में जिन तीन विधायकों को मंत्रिमंडल में शामिल किया गया था। उन तीनों ही विधायकों को 2023 के विधानसभा चुनाव में पराजय का सामना करना पड़ा इसलिए सुमित गोदारा जो वर्तमान में बीकानेर जिले से अकेले भजनलाल सरकार में मंत्री हैं उन्हें एक तरफ जहां अपने निर्वाचन क्षेत्र के लोगों की उम्मीदों को पूरा करना होगा तो दूसरी तरफ प्रदेश भारतीय जनता पार्टी का हाई कमान और प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने जिस उम्मीद और भरोसे के साथ उन्हें कैबिनेट मंत्री का दर्जा दिया और खाद्य व नागरिक आपूर्ति जैसा बड़ा विभाग दिया उस उम्मीद और भरोसे को भी बरकरार रखना सुमित गोदारा के लिए काफी जरूरी होगा वैसे अपने डेढ़ साल के अब तक के कार्यकाल में सुमित गोदारा ने अपनी काम करने की शैली और काम करने के तरीकों से सबको प्रभावित किया है और मंत्रिमंडल में अच्छा काम करने वाले मंत्रियों की सूची में गोदारा का नाम भी शामिल बताया जा रहा है।

विधानसभा में मंत्री के रूप में उत्कृष्ट प्रदर्शन विधायकों के सवालों के दिए सटीक जवाब

प्रदेश की भजनलाल सरकार के शासन काल के दौरान अब तक राजस्थान विधानसभा के जितने भी सत्र आयोजित हुए उन तमाम विधानसभा की कार्रवाई में मंत्री के रूप में सुमित गोदारा का बहुत ही शानदार प्रदर्शन रहा है पूरी तैयारी के साथ सुमित गोदारा विधानसभा में आते थे और चाहे सत्ता पक्ष का विधायक हो या विपक्ष का विधायक प्रत्येक विधायक के सवालों के जवाब गोदारा ने बहुत ही सटीक तरीके से वास्तविक आंकड़ों के आधार पर दिए जिसके फल स्वरुप विपक्ष के विधायकों को बोलने के लिए कुछ बचा ही नहीं रहता था, सुमित गोदारा एक ऐसे मंत्री के रूप में जाने जाते हैं जिनकी अपने विभाग की हर छोटी बड़ी गतिविधियों पर हमेशा अपनी निगाहें टिकी रहती है विभाग के बड़े अफसर से लगातार बैठक आयोजित करके विभाग के कामकाज की नियमित रूप से समीक्षा करते रहते हैं जिसकी वजह से विभाग के अधिकारी और कर्मचारी भी अपने काम और जिम्मेवारी को लेकर हमेशा एक्टिव नजर आ रहे हैं, विभाग के कर्मचारियों की कार्य कुशलता और काम करने की क्षमता को कैसे बढ़ाया जाए और प्रदेश के लोगों की शिकायत का कैसे और किस तरह से निराकरण किया जाए तथा खाद्य और नागरिक आपूर्ति विभाग में कौन-कौन से ऐसे नवाचार किए जाएं जिसकी वजह से लोगों का ज्यादा से ज्यादा फायदा हो इन तमाम विषयों को लेकर गोदारा हमेशा संबंधित अधिकारियों और कर्मचारियों के अलावा प्रबुद्ध नागरिकों आमजन से भी सलाह लेते रहते हैं और नए-नए प्रयोग और नवाचार करते रहते हैं जिसकी वजह से इस विभाग की प्रदेश की जनता में एक अच्छी छवि बनती जा रही है।

प्रदेश के राशन डीलरों में भी खुशी का माहौल कई तरह की समस्याओं का किया निवारण

सुमित गोदारा एक जमीन से जुड़े नेता है गांव के अलावा शहरों में भी सक्रिय रहते हैं इसलिए गांव और शहरी दोनों इलाकों में स्थित राशन की दुकानों की कार्यशैली और राशन की दुकानदारों के व्यवहार, दुकानदारों की समस्याएं इत्यादि को नजदीकी से जानते हैं राशन डीलर पिछली गहलोत सरकार के समय भी अपनी मांगों को लेकर काफी परेशान रहे कई बार आंदोलन की राह पर भी चल पड़े लेकिन उनकी मांगों पर गहलोत सरकार ने भी ज्यादा सकारात्मक रुक नहीं अपनाया था, अपना कमीशन बढ़ाने की मांग पिछले कई सालों से राशन डीलर करते आ रहे थे गहलोत सरकार के समय भी राशन डीलरों ने कमीशन बढ़ाने की मांग की लेकिन उनकी मांग पर ज्यादा गौर नहीं किया गया बाद में प्रदेश में जब भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी और भजनलाल शर्मा मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठे तथा सुमित गोदारा को खाद्य नागरिक आपूर्ति विभाग की जिम्मेदारी दी गई तो इसके बाद गोदारा ने राशन डीलरों की समस्याओं को भी बारीकी से समझा और 10 प्रतिशत कमीशन बढ़ाने की घोषणा की जिसका राशन डीलरों ने स्वागत किया और भी कई तरह की समस्याओं का निवारण करने के लिए मंत्री के रूप में गोदारा पूरी तरह से गंभीर दिख रहे हैं जिसकी वजह से राशन डीलरों को भी ऐसा लग रहा है कि अब उनकी सुनवाई होगी और वर्षों से लंबित समस्याओं का निवारण भी होगा क्योंकि कमीशन बढ़ाने के बाद राशन डीलरों को विश्वास हुआ है कि प्रदेश की भजनलाल सरकार उनकी मांगों को लेकर गंभीर है द्य पहले अक्सर यह माना जाता था कि राशन डीलर भारी मात्रा में गड़बड़ी करता है चोरी करता है और उनकी आर्थिक हालात काफी अच्छी है इसलिए कमीशन बढ़ाने की कहां जरूरत आ रही है लेकिन सुमित गोदारा यह जानते हैं कि अगर राशन डीलर का कमीशन बढ़ा दिया जाएगा तो वह फिर अपने आप ही ईमानदारी से काम करेगा किसी भी तरह की गड़बड़ी नहीं करेगा इसलिए उन्होंने कमीशन बढ़ाना जरूरी समझा।

अपने निर्वाचन क्षेत्र में बड़ी संख्या में विकास कार्य संपादित करवाएं, शिक्षा चिकित्सा, सड़क, बिजली हर क्षेत्र में करोड़ों रूपए के विकास कामों की दी सौगात

पिछली गहलोत सरकार के समय भी विधायक के तौर पर सुमित गोदारा ने अपने निर्वाचन क्षेत्र में विकास काम करवाने में कोई कमी नहीं रखी हालांकि प्रदेश में कांग्रेस पार्टी की सरकार थी इसलिए कहीं ना कहीं कांग्रेस पार्टी की सरकार सौतेला व्यवहार जरूर करती हुई दिखी लेकिन इसके बावजूद भी राजस्थान विधानसभा में एक तरफ जहां अपने निर्वाचन क्षेत्र की समस्याओं को जोरदार तरीके से गोदारा उठाते थे तो दूसरी ओर शिक्षा, चिकित्सा, पानी बिजली, सड़क, इत्यादि डिपार्मेंट से जुड़ी लोगों की समस्याओं का निवारण करने के साथ-साथ इन तमाम विभागों से जुड़े विकास काम बड़ी संख्या में गोदारा ने गहलोत सरकार के दौरान भी करवाए थे और अब प्रदेश सरकार में कैबिनेट मंत्री बनने के बाद अपने निर्वाचन क्षेत्र में उप स्वास्थ्य केंद्र, स्वास्थ्य केंद्र पशु चिकित्सा केंद्र, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्कूल, मिडिल स्कूल प्राथमिक स्कूल से जुड़ी तमाम तरह की समस्याओं का निवारण किया है कई जगहों पर पशु चिकित्सा केंद्र उपभोग स्वास्थ्य केंद्र खोले गए हैं, अपने निर्वाचन क्षेत्र में कई गांव में बिजली के नए ट्रांसफार्मर लगवाए, स्कूलों में शौचालय पानी की व्यवस्था बाउंड्री वॉल इत्यादि के लिए विधायक फंड से बजट उपलब्ध करवाया, निर्वाचन क्षेत्र में सड़कों का नवीनीकरण के अलावा कई जगहों पर नई सड़कों का निर्माण करवाया जा रहा है, सरकारी स्कूलों में खाली पदों को भरा जा रहा है चिकित्सा के क्षेत्र में भी खाली पदों को भरा जा रहा है, अपराधों की रोकथाम के लिए अपने निर्वाचन क्षेत्र के थानों की गतिविधियों पर गोदारा खुद नजर जमाए रखते हैं, कुल मिलाकर अपने निर्वाचन क्षेत्र के विकास को लेकर भी काफी गंभीर है और लगातार क्षेत्र के लोगों से मुलाकात करके उनकी समस्याओं का ज्यादा से ज्यादा निवारण करने के लिए हर पल एक्टिव रहते हैं जिसकी वजह से हर कोई गोदारा की तारीफ करता हुआ नजर आता है।

भ्रष्टाचार को लेकर काफी सख्त हैं सुमित गोदारा, भजनलाल सरकार की जीरो टॉलरेंस नीति को दिल से लगाए हैं

केंद्र की मोदी सरकार और प्रदेश के भजन लाल सरकार भ्रष्टाचार में जीरो टॉलरेंस की नीति के आधार पर काम करने का लक्ष्य निर्धारित किए हुए हैं, सरकारी विभागों में भ्रष्टाचार कैसी शिकायत नहीं मिले इसके लिए एक तरफ जहां एंटी करप्शन ब्यूरो व्यापक तौर पर रोजाना कार्रवाई कर रहा है और भ्रष्ट अधिकारियों और कर्मचारी की गिरफ्तारियां भी समय-समय पर होती रही हैं तो दूसरी तरफ खाद्य और नागरिक आपूर्ति विभाग में सुमित गोदारा भ्रष्टाचार को किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं कर रहे प्रश्न अधिकारियों और कर्मचारियों को लेकर गोदारा काफी सख्त हैं और उन्होंने मंत्री बनने के बाद अपने विभाग के बड़े अधिकारियों की पहली मीटिंग में ही साफ कह दिया था कि भ्रष्टाचार उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं, खाद्य और नागरिक आपूर्ति विभाग से प्रदेश के वंचित गरीब और निर्धन लोग ज्यादा जुड़े हैं इसलिए यहां भ्रष्टाचार की बिल्कुल भी गुंजाइश नहीं होनी चाहिए यही वजह रही कि गोदारा ने सबसे पहले खाद्य सुरक्षा योजना में लाखों की तादाद में जुड़े सक्षम लोगों को सबसे पहले बाहर का रास्ता दिखाया, रसद विभाग के अधिकारियों पर भी गोदारा बारीकी से नजर जमाए रखते हैं, विभाग की ओर से भ्रष्टाचार से संबंधित शिकायतों के लिए बाकायदा लोगों को ऑनलाइन शिकायत करने की सुविधा भी दी हुई है द्य जानकार लोगों का कहना है कि प्रदेश में भजनलाल सरकार तक के कार्यकाल में खाद्य और नागरिक आपूर्ति विभाग में भ्रष्टाचार के मामलों में भी भारी गिरावट आई है, गोदारा के दिशा निर्देशन में विभाग की काम करने की शैली में पारदर्शिता नजर आने लगी है, राशन डीलर के खिलाफ जिस तरह से पहले लोग कई तरह की शिकायत किया करते थे अब उन शिकायतों में भी भारी मात्रा में रोजाना गिरावट आ रही है कुल मिलाकर खाद्य और नागरिक आपूर्ति विभाग जो पहले गड़बड़ियों और भ्रष्टाचार को लेकर बदनाम रहा करता था अब वह बात नहीं है अब खाद्य और नागरिक आपूर्ति विभाग को लेकर लोगों में ज्यादा शिकायत भी नहीं रहती और ना ही भ्रष्टाचार जैसे कोई मामले सामने आ रहे हैं, विभाग में यह जो अच्छा काम हो रहा है यह सिर्फ सुमित गोदारा की ही देन है।

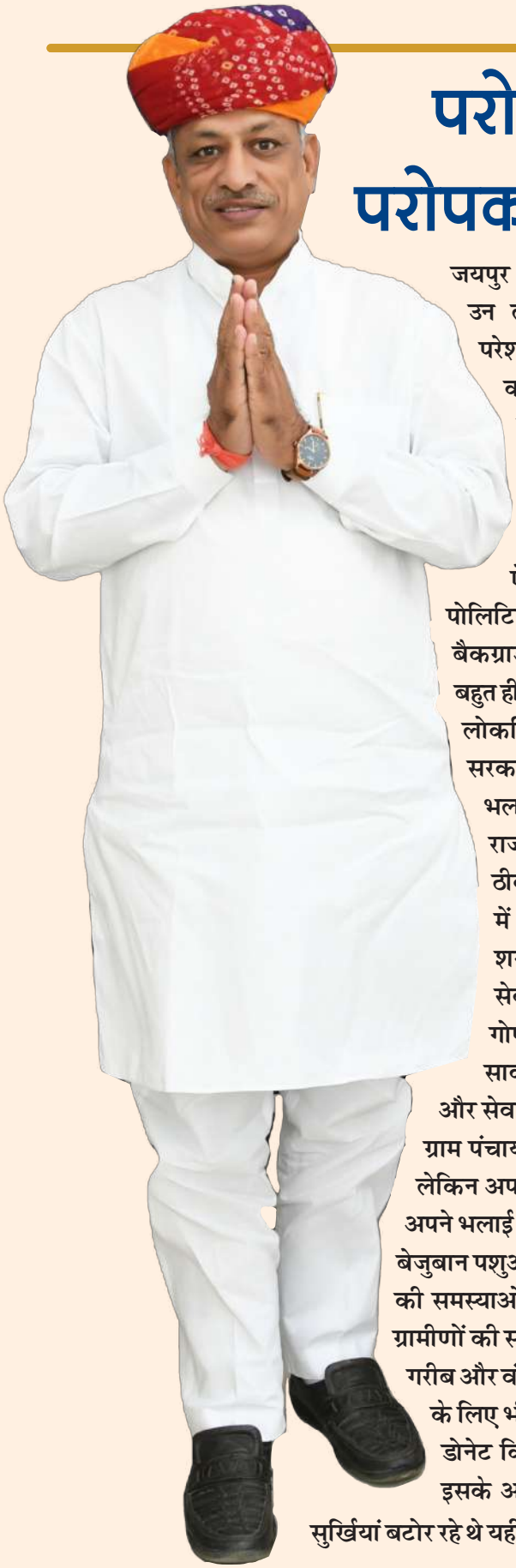

परोपकारी शख्सियत जोराराम परोपकारी डिपार्टमेंट से कमा रहे पुण्य

परोपकारी कामों से लबालब है मंत्री जोराराम कुमावत की जीवन यात्रा, लोगों और पशुओं की भलाई के लिए समर्पित रहा है अब तक पुरा जीवन, अब सरकार में भी देवस्थान पशुपालन और डेयरी मंत्री के रूप में लोगों और पशुओं की भलाई कर कमा रहे हैं पुण्य

जयपुर। यह जग जाहिर है राजनीति में उन लोगों की बिना किसी परेशानी और विरोध के देश की बड़ी राजनीतिक पार्टियों में जल्दी ही दमदार तरीके से एंट्री हो जाती हैं जिनके पास या तो अथाह पैसा हो या फिर उनका पॉलीटिकल मजबूत बैकग्राउंड हो ऐसे लोग पहली बार विधायक और सांसद भी चुन लिए जाते हैं चाहे बाद में उनके पोलिटिकल कैरियर पर ब्रेक लग जाए लेकिन पैसों की चमक और मजबूत पॉलीटिकल बैकग्राउंड की वजह से शुरू शुरू में तो उनकी पॉलिटिक्स में दमदार एंट्री हो ही जाती है ऐसे बहुत ही कम है जो बिना पैसों की चमक और बिना पॉलीटिकल बैकग्राउंड के अपनी खुद की लोकप्रियता के आधार पर पॉलिटिक्स में जगह बनाई है उन्हें में से प्रदेश की भजनलाल सरकार के मंत्रिमंडल में एक ऐसे शख्स हैं जिनकी अब तक की जीवन यात्रा लोगों की भलाई और पशुओं की सेवा और भलाई करने में ही बीती है राजनीति में आने से पहले और राजनीति में आने के बाद यहां तक की अब वर्तमान में कैबिनेट मंत्री बनने के बाद भी ठीक उसी तरह से जनकल्याण के कामों और लोगों की भलाई में जुटे हुए हैं जैसे राजनीति में आने से पहले किया करते थे, इसे संयोग ही कहेंगे या फिर ईश्वर की कृपा कि इस शख्स को मुख्यमंत्री भजनलाल ने जो डिपार्मेंट दिए हैं वे डिपार्टमेंट भी पूरी तरह से जन सेवा और पशु सेवा से सीधे जुड़े हुए हैं, जी हां हम बात कर रहे हैं प्रदेश के देवस्थान, गोपालन, पशुपालन ,और डेयरी मंत्री जोराराम कुमावत की द्य कुमावत अपने सार्वजनिक जीवन में जितने सरल और मधुर है उतना ही उनका दिल भी काफी कोमल और सेवाभावी है, इन प्रमुख लक्षणों की वजह से ही वर्ष 2000 में पाली जिले की ह्यद्वठ्ठस्त्रह्व ग्राम पंचायत के निर्विरोध सरपंच चुने गए उस समय कुमावत अपने निजी व्यापार में बिजी थे लेकिन अपने गांव और आसपास के इलाके में अपने अच्छे व्यवहार और भलाई के कामों और अपने भलाई के कामों को लेकर ग्रामीण इलाकों में काफी पॉप्युलर हो गए थे, इंसान ही नहीं बल्कि बेजुबान पशुओं की सेवा करना भी कुमावत नेअपनी दिनचर्या का अहम हिस्सा बना रखा था, गांव की समस्याओं निराकरण के लिए बाकायदा उन्होंने एक समिति का गठन किया हुआ था और ग्रामीणों की समस्याओं को दमदार तरीके से प्रशासन और सरकार के समक्ष उठाया करते थे, निर्धन गरीब और वंचित लोगों के लिए हमेशा सहयोग करने को तत्पर रहते थे, आवारा पशुओं के संरक्षण के लिए भी अपने स्तर पर व्यवस्थाएं किया करते थे, गाय और गौशालाओं के लिए भी खुलकर डोनेट किया करते थे जिसकी वजह से कुमावत खुद की ग्राम पंचायत में तो पॉपुलर थे ही इसके अलावा आसपास की ग्राम पंचायत में भी अपने भलाई के कामों को लेकर काफी सुर्खियां बटोर रहे थे यही वजह रही कि वर्ष 2000 में sindru ग्राम पंचायत के सभी लोगों ने एक राय होकर

उन्हें सरपंच का चुनाव लड़ने का आग्रह किया शुरू में चुनाव लड़ने से कुमावत नकर भी किया लेकिन ग्रामीणों की इच्छा को देखते हुए उन्होंने चुनाव के लिए नामांकन किया लेकिन कुमावत के सामने किसी ने भी चुनाव लड़ने के लिए फॉर्म नहीं बना और कुमावत निर्विरोध सरपंच चुन लिए गए, सरपंच चुने जाने के बाद भी कुमावत ने ग्रामीण और बेजुबान पशुओं की सेवा के कामों को और तेजी से आगे बढ़ाया, इस काम में उन्होंने अपने उन साथी कारोबारी को भी ग्राम पंचायत से जोड़ा जो बाहर के राज्यों और विदेशों में कारोबार कर रहे थे, उन्हें गांव के विकास के लिए डोनेट करने के लिए प्रेरित किया, फंड इकट्ठा किया और फिर इस फंड का उपयोग गांव के विकास में किया जिसकी वजह से उनकी पंचायत आदर्श पंचायत के रूप में चुन ली गई, उनके सरपंच पद के कार्यकाल में पंचायत में अप्रत्याशित विकास कार्य हुए जिनकी चर्चा आसपास की ग्राम पंचायत में होने लगी और एक चर्चित चेहरे के रूप में कुमावत ने खूब लोकप्रियता ग्रामीणों से बटोरी, इसी लोकप्रियता के दम पर सुमेरपुर की नगरपालिका में पार्षद का चुनाव लड़ने के लिए भी लोगों ने उन पर जोरदार दबाव बनाया लोगों इच्छा को देखते हुए उन्होंने चुनाव लड़ा और चुनाव जीत और बाद में नगर पालिका के अध्यक्ष पद तक भी पहुंच गए, पालिका के अध्यक्ष पद पर रहते हुए सुमेरपुर शहर की साफ सफाई, बिजली, पानी, सड़क इत्यादि मुद्दों पर अपना पूरा फोकस रखा और नगर पालिका को नए कलेवर और अंदाज में लाकर खड़ा कर दिया, सरपंच रहते हुए ग्रामीण इलाकों और पालिका का अध्यक्ष रहते हुए शहरी इलाकों की समस्याओं

भजनलाल सरकार में अच्छे परफॉर्मेंस वाले मंत्रियों की सूची में शामिल है जोराराम कुमावत

प्रदेश की भजन लाल सरकार में कैबिनेट मंत्री के रूप में बड़े विभागों की जिम्मेदारी संभाल रहे जोराराम कुमावत ने पिछले डेढ़ साल में अपने दायित्व और जिम्मेदारी को बखूबी से निभाया है, देवस्थान, गोपालन,पशुपालन, डेयरी विभाग के कामों में जोरदार गतिशीलता आई है और इन सभी विभागों में कई बड़े फैसले लिए गए, कई तरह के नवाचार किए गए कई तरह की नई योजनाएं लागू की गई जिनका फायदा प्रदेश की जनता, पशुपालकों, दुग्धउत्पादक को मिल रहा है, प्रदेश के पशुधन को भी काफी संबल मिला है पशुपालन विभाग में भी कई तरह के बड़े फैसले लिए गए हैं जिसकी वजह से पशुधन की सुरक्षा, संरक्षण और प्रजनन के क्षेत्र में एक नए अध्याय की शुरुआत भजन लाल सरकार में हुई है, प्राचीन प्रमुख मंदिरों की मरम्मत, सुरक्षा, संवर्धन और विस्तार के लिए भी कई बड़े फैसले हुए हैं, कई प्रमुख मंदिरों के लिए बजट में व्यवस्था की गई है, पुजारी के हितों को भी भजनलाल सरकार पूरा ध्यान रख रही है, डेयरी क्षेत्र में भी आरसीडीएफ में एक स्वर्णिम युग का आगाज हुआ है आरसीडीएफ ने पिछले कुछ सालों में राष्ट्रीय स्तर पर कई बड़े पुरस्कार हासिल किए हैं आरसीडीएफ के शुद्ध प्रॉफिट और टर्नओवर ने पिछले सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं, आरसीडीएफ बहुत जल्दी ही देश की नंबर वन डेरी बनने की ओर तेजी से अग्रसर हो रही है दूध और दूध उत्पादों के उत्पादन, वितरण विपणन में आरसीडीएफ का जोरदार प्रदर्शन देखने को मिला है कुल मिलाकर यह कह सकते हैं कि जिस उम्मीद और भरोसे के साथ भजनलाल शर्मा ने कुमावत को महत्वपूर्ण विभाग दिए थे उस उम्मीद और भरोसे को कुमावत ने बरकरार रखा है और एक श्रेष्ठ नेतृत्व की भूमिका निभाते हुए देवस्थान, गोपालन, डेयरी और पशुपालन विभाग को पूरी तरह से गतिशील और सक्रिय बना दिया है जिसकी वजह से कुमावत की गिनती भजनलाल सरकार के अच्छे परफॉर्मेंस वाले मंत्रियों में होने लगी है।

का जिस तरह से उन्होंने निवारणकिया उसकी वजह से प्रदेश के राजनीतिक गलियारों में भी कुमावत की खूब चर्चा होने लगी और बड़े राजनीति के दलों के नेता कुमावत का खूब सम्मान करने लगे, खुद कुमावत शुरू से ही भाजपा के प्रति समर्पित रहे और भाजपा के जिला संगठन में बड़े पदों पर कर्मठता से अपनी सेवाएं देते रहे, कुमावत की लोकप्रियता और पार्टी के प्रति उनकी गहरी निष्ठा को देखते हुए वर्ष 2018 में भारतीय जनता पार्टी के रणनीतिकारों ने सुमेरपुर विधानसभा सीट से टिकट दिया कुमावत ने चुनाव लड़ा और चुनाव जीत गए, कुमावत की इस जीत में उनकी खुद की लोकप्रियता एक बड़ा कारण रही भले ही उन्हें भारतीय जनता पार्टी से टिकट मिला हो लेकिन राजनीतिक विश्लेषक भी मानते हैं कि उनकी जीत में उनकी खुद के पर्सनालिटी और उनका परोपकारी व्यक्तित्व बड़े कारण रहे।

इस तरह से कुमावत पहले सरपंच बने फिर नगर पालिका के अध्यक्ष फिर विधायक और और अब कैबिनेट मंत्री के रूप में प्रदेश के लोगों की सेवा कर रहे हैं बड़ी बात यह है कि कुमावत का कोई पॉलीटिकल बैकग्राउंड नहीं था हालांकि कुमावत पॉलिटिक्स में आने से पहले बिजनेस किया करते थे लेकिन बिजनेस से जो भी इनकम होती थी उस इनकम का एक हिस्सा परोपकारी के कामों में खर्च की कर दिया करते थे जिसकी वजह से लोग उनका खूब सम्मान किया करते थे और इसी खूबी की वजह से साधारण परिवार का होने के बावजूद भी कुमावत ने आज भारतीय जनता पार्टी में एक श्रेष्ठ राजनेता और एक अच्छे कैबिनेट मंत्री के रूप में स्थापित किया हुआ।

गौ माता, गौशाला और मंदिर को लेकर संवेदनशील है कुमावत, पशुओं की सुरक्षा, पशुओं के प्रजनन और संवर्धन को लेकर कई बड़े फैसले

संस्कारिक और मूल्यवान फैमिली से ताल्लुक रखने वाले जोराराम कुमावत मंदिर, गौ माता और गौशालाओं को लेकर काफी दयावान रहे हैं, राजनीति में आने से पहले जब बिजनेसमैन थे तब भी काफी पैसा डोनेट किया करते थे और अब भी मंत्री बनने के बाद मंदिर और गौशालाओं को लेकर देवस्थान विभाग का मंत्री होने के नाते कई बड़े फैसले किए हैं जिसमें मंदिरों की सुरक्षा के अलावा मंदिरों की पुजारी की सुरक्षा और उनके पारिश्रमिक को लेकर भी कुमावत काफी संवेदनशील हैं आवारा घूमने वाली गायों की सुरक्षा के लिए ज्यादा से ज्यादा नई गौशालाएं बनाने को लेकर भी प्रयत्नशील हैं इसके अलावा प्रमुख विख्यात मंदिरों के विस्तार के लिए बजट मैं प्रावधान किया गया, गो हत्या और गो तस्करी को लेकर शुरू से ही कुमावत काफी सख्त रहे हैं और इस तरह से अवैध काम करने वाले अपराधियों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई करवाने को लेकर हमेशा तैयार रहते हैं, प्रदेश में विभिन्न तरह के पशुओं की प्रजनन क्षमता को बढ़ाने के लिए कई तरह के नवीन प्रयोग और नवाचार किए गए हैं ताकि पशुओं की संख्या बढ़ सके बड़ी संख्या में जरूरतमंद जगह पर नए पशु चिकित्सा केंद्र खोले गए हैं और पशुओं से संबंधित किसी भी तरह की समस्या के लिए बाकायदा ऑनलाइन व्हाट्सएप से बातचीत के माध्यम से शिकायत भेजना और शिकायतों के निवारण के लिए व्यवस्था की गई है ताकि जरूरत पड़ने पर तुरंत ही पशुओं को वंचित कर व्यवस्था मिल सके बड़ी संख्या में पशु चिकित्सा अधिकारी और पशु निरीक्षकों की नियुक्ति की गई है जिस तरह से दूर दराज के गांव में चिकित्सा व्यवस्था के विस्तार और मजबूती के लिए अत्याधुनिक चिकित्सा सुविधाओं से युक्त गाड़ी के माध्यम से गांव गांव घूम कर मरीजों का इलाज किया जाता है ठीक उसी तरह से पशुओं की चिकित्सा के लिए भी इस तरह की व्यवस्था की गई है ताकि पशु मालिकों को ज्यादा परेशानी का सामना नहीं करना पड़े और इस तरह की गाड़ी के माध्यम से पशु मलिक के घर पर जाकर ही पशुओं का उपचार किया जा रहा है इस तरह से अनेकों नए कार्यक्रम और नए प्रयोग नई व्यवस्थाएं पशुपालन विभाग में लागू की गई है जो यह दिखाता है कि प्रदेश की भजनलाल सरकार और मंत्री जोराराम कुमावत प्रदेश के पशुधन को लेकर कितना चौकस है।

प्रदेश में करीबन 50000 बुजुर्ग नागरिकों को देश के 15 धार्मिक स्थान के दर्शन करने का उठाया है बीड़ा

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और देवस्थान विभाग के मंत्री जोराराम कुमावत दोनों ही नेता परोपकारी और धार्मिक प्रवृत्ति के हैं मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा कल्याण धनी के अनन्य भक्त हैं इसलिए इन दोनों नेताओं की परोपकारी और पुण्य के कामों में अच्छी जोड़ी बनी हुई है यही वजह है कि देवस्थान विभाग की ओर से प्रदेश के करीब 50000 से ज्यादा बुजुर्ग लोगों को सरकारी खर्चे पर देश के करीब 15 प्रमुख तीर्थ स्थान के दर्शन करवाने की प्रक्रिया शुरू कर दी है इसके अलावा 6000 बुजुर्ग नागरिकों को नेपाल के पशुपतिनाथ मंदिर के हवाई यात्रा करवाने का भी कार्यक्रम है अभी हाल ही में भजन लाल शर्मा और जोराराम कुमावत ने जयपुर से राजस्थान वाहनी भारत गौरव पर्यटक ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर प्रमुख तीर्थ स्थल रामेश्वरम के लिए रवाना किया था इस ट्रेन में 779 बुजुर्ग यात्री स्वर है जिन्हें रामेश्वर स्थित भगवान शिव के ज्योतिर्लिंग के अलावा मीनाक्षी के मुदरी मंदिर धनुष्कोटी और ब्रह्मा कुंड जैसे स्थान के दर्शन करवाए जाएंगे यह आठ दिवसीय यात्रा है और बुजुर्ग यात्रियों के लिए खाने पीने रहने चिकित्सा इत्यादि की सभी सुविधाएं सरकारी खर्चे पर होगी ट्रेन को बाकायदा राजस्थान की कला, संस्कृति, प्रमुख मंदिरों, शेर, बाघ, गौ माता, प्रमुख पर्यटन स्थलों इत्यादि की कलाकृतियों से सजाया गया है ट्रेन के प्रत्येक कोच में डॉक्टर और नर्सिंग कर्मी तैनात है इसके अलावा ट्रेन में भजनों के म्यूजिक सिस्टम की भी व्यवस्था है इस ट्रेन में 600 यात्री जयपुर के रहने वाले हैं तथा 179 यात्री सवाई माधोपुर के रहने वाले हैं, देवस्थान विभाग की ओर से धार्मिक स्थान के दर्शन करने के लिए बुजुर्ग यात्रियों से ऑनलाइन फार्म भरवा थे और अपने पसंद के पहले टॉप तीन धार्मिक स्थलों के बारे में भ्रमण करने के लिए पूछा था देवस्थान विभाग की ओर से चालू साल में 50000 बुजुर्ग लोगों को देश के 15 धार्मिक स्थलों का भ्रमण करवाने का कार्यक्रम तैयार किया है अयोध्या, मथुरा, बनारस बरसाना, का माया, जगन्नाथ पुरी द्वारकापुरी, कामाख्या शाहिद 15 प्रमुख धार्मिक स्थलों के दर्शन करने का व्यापक कार्यक्रम तैयार किया है बड़ी बात यह है कि ट्रेन में सरकारी अधिकारियों की नियुक्ति की गई है जो इन बुजुर्ग यात्रियों को अपना बेटा बेटी मानकर पूरे सफर में उनकी सेवा करेंगे, कहा जा रहा है कि राजस्थान सरकार बुजुर्ग यात्रियों की बेटा और बेटी बनकर देश के प्रमुख मंदिरों के दर्शन करवा कर एक तरफ जहां पुण्य कमा रही है तो दूसरी तरफ प्रदेश के बुजुर्ग लोगों के दिलों में भजन लाल सरकार ने अपना एक अलग मुकाम बनाया है और यह सब संभव हुआ है भजन लाल शर्मा और जोराराम कुमावत के परोपकारी भाव वाले कोमल हृदय की वजह से।

ऑफिसर्स और कर्मचारियों को भी परोपकारी के कामों के लिए प्रेरित करते हैं कुमावत

जोराराम कुमावत कैबिनेट मंत्री हैं और देवस्थान गोपालन, डेयरी और पशुपालन विभागों का काम देख रहे हैं, उक्त सभी विभाग परोपकारी और भलाई के कामों से सीधे जुड़े हुए हैं, लोगों में चर्चा है कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा जोराराम कुमावत के परोपकारी और सेवाभावी होने की बात से पहले से ही वाकिफ थे इसलिए उन्होंने कुमावत के परोपकारी व्यक्तित्व को देखते हुए ही इन महत्वपूर्ण डिपार्मेंटों की जिम्मेदारी थी, कुमावत की एक खासियत है जहां भी जाते हैं चाहे जनसभा हो या फिर पार्टी का कार्यक्रम हो या फिर कोई सरकारी कार्यक्रम हो या फिर कोई विभागीय बैठक हो हर जगह जरूरतमंद लोगों की भलाई के लिए और बेजुबान पशुओं की सुरक्षा और भलाई के लिए ज्यादा से ज्यादा काम करने के लिए सबको प्रेरित करते रहते हैं, यहां तक की अपने विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों को भी मौका मिलते ही परोपकारी और सेवाभाव का पाठ पढ़ा देते हैं जिससे ऑफिसर्स भी कुमावत के इस व्यवहार को काफी पसंद करते हैं।

क्या अशोक गहलोत-सचिन पायलट के दिल मिल गए?

अशोक गहलोत और सचिन पायलट की मुलाकात के बाद प्रदेश कांग्रेस के छोटे बड़े सभी नेताओं में खुशी की लहर, भाजपा के नेता इस मुलाकात पर कस रहे हैं तंज

जयपुर। हाल ही में सचिन पायलट अशोक गहलोत के आवास पर गए और उन्हें अपने पिता स्वर्गीय राजेश पायलट की 25वीं पुण्यतिथि पर आयोजित होने वाले कार्यक्रम के लिए न्योता दिया लेकिन दोनों नेताओं इस मुलाकात के बाद प्रदेश के राजनीतिक गलियारों में चर्चा होने लगी है कि क्या इन दोनों नेताओं ने अपने पुराने सभी गिले शिकवे अब दूर कर लिए हैं, हालांकि अब से पहले भी कई मेको पर दोनों नेताओं की मुलाकात हुई लेकिन अभी हाल ही की मुलाकात में दोनों नेताओं की बॉडी लैंग्वेज और चेहरे की मुद्रा देखकर प्रदेश कांग्रेस के छोटे बड़े नेताओं को ऐसा लग रहा है कि अब इन दोनों नेताओं के दिल आपस में मिल गए हैं जिसकी वजह से राजस्थान में कांग्रेस अब मजबूती से भारतीय जनता पार्टी का मुकाबला कर सकेगी, इस मुलाकात के बाद सोशल मीडिया पर कांग्रेस पार्टी के नेताओं की ओर से बयानों की बाढ़ आ गई और ऐसा लगा जैसे पिछले कई सालों से प्रदेश में गहलोत और पायलट के दोनों ग्रुप अब एक हो गए हैं, अब यह तो आने वाला समय समय बताया कि इन दोनों नेताओं के बीच आगे किस तरह से राजनीतिक और व्यक्तिगत संबंध रहेंगे लेकिन कांग्रेस जनों को कहीं ना कहीं इस बात की जरूर तसल्ली हो गई है कि इस बार दोनों नेता सिर्फ दिखावे के लिए नहीं बल्कि अंदरूनी तौर पर भी आपस में प्यार मोहब्बत से मिले हैं और अगर कांग्रेस जनों कि यह तसल्ली सही साबित होती है तो निश्चित रूप से राजस्थान में कांग्रेस और मजबूत होगी जो भारतीय जनता पार्टी के लिए एक बड़ी चुनौती बन सकती है हालांकि भारतीय जनता पार्टी के नेता इस मुलाकात के बाद सचिन पायलट और अशोक गहलोत दोनों नेताओं को लेकर कई तरह की बयान बाजी कर रहे हैं कुछ सचिन पायलट को याद दिला रहे हैं कि आप नाकारा निकम्मा शब्द भूल गए क्या तो कुछ नेता अशोक गहलोत को याद दिला रहे हैं कि यह वही पायलट हैं जिन्होंने पूरे 5 साल तक आपके नाक में दम कर रखी थी लेकिन इस मुलाकात में सचिन पायलट को लेकर लोगों में यह चर्चा जरूर हो रही है कि गहलोत के घर जाकर सचिन पायलट ने बड़ा दिल दिखाया है और यह बताने का प्रयास किया है कि उनके विरोधियों के लिए भी उनके दिल में प्यार और सम्मान है इसलिए पायलट को बड़े दिलवाला नेता कहते हैं और कांग्रेस की युवा ब्रिगेड उन्हें आई लव यू के नारों से पुकारती है यह वे कारण हैं जिनकी वजह से सचिन पायलट अपने पिता राजेश पायलट की तरह हर जाति और बिरादरी के लोगों में तो लोकप्रिय है ही इसके अलावा अपने विरोधी नेताओं का भी दिल जीत लेते हैं।

गहलोत-पायलट का साथ आना समय की जरूरत

राजनीतिक विश्लेशको का कहना है कि अभी यह काफी जल्दी बाजी होगा कि गहलोत और पायलट दोनों के दिल मजबूती से मिले हैं लेकिन इतना जरूर है कि दोनों ही नेता राजस्थान के काफी पॉपुलर नेता है और दोनों ही नेताओं की कांग्रेस पार्टी में अच्छी पकड़ है लेकिन वर्तमान में इन दोनों ही नेताओं की जो इच्छा है वह कहीं ना कहीं दोनों नेताओं के साथ आने से ही पूरी हो सकती है क्योंकि कांग्रेस पार्टी में इन दोनों ही नेताओं की हालत अब ऐसी हो गई है कि इन्हें एक दूसरे की जरूरत है और शायद इस बात को यह दोनों नेता अब अच्छी तरह से समझ भी गए हैं इसलिए अगर हाल ही में यह जो मुलाकात हुई है उसमें दोनों नेताओं के दिल वास्तव में मिले हैं तो यह एक तरफ जहां राजस्थान कांग्रेस को जोरदार तरीके से मजबूती प्रदान करेगी तो दूसरी ओर इन दोनों ही नेताओं ने आगे के अपने पोलिटिकल कैरियर में जो सपना संजो रखा है वह कहीं ना कहीं पूरा भी हो सकता है द्य राजनीतिक विश्लेषों का कहना है कि दोनों अशोक गहलोत कांग्रेस पार्टी के दिल्ली दरबार में लगातार कमजोर होते जा रहे हैं एक तरफ सोनिया गांधी और राहुल गांधी की अशोक गहलोत से बढ़ती दूरियां तो दूसरी तरफ एक जमाने में दिल्ली में कांग्रेस के वे बड़े नेता जो जरूरत पड़ने पर अशोक गहलोत की राजनीतिक मदद किया करते थे उनमें कई कांग्रेस पार्टी को छोड़कर जा चुके हैं ऐसे में अशोक गहलोत कहीं ना कहीं कांग्रेस में लगातार कमजोर होते जा रहे हैं राजस्थान में भी अशोक गहलोत के कई विश्वासपात्र और भरोसेमंद नेता कांग्रेस पार्टी को छोड़कर जा चुके हैं कई नेता ऐसे हैं जो कांग्रेस पार्टी को छोड़ने का प्लान बना रहे हैं ऐसे में गहलोत को भी कहीं ना कहीं एक ऐसे लोकप्रिय नेता के साथ की जरूरत है जिसकी दिल्ली में गांधी परिवार का तो नजदीकी हो ही इसके अलावा दिल्ली में भी उसकी अच्छी पकड़ हो ऐसे में सचिन पायलट से अच्छा और कोई दूसरा नेता उन्हें नजर भी नहीं आ रहा इसलिए कहा जा रहा है कि गहलोत कहीं ना कहीं सचिन पायलट को लेकर काफी हद तक अब सकारात्मक होते जा रहे हैं तो दूसरी तरफ सचिन पायलट भी यह अच्छी तरह से जानते हैं कि अशोक गहलोत तीन बार राजस्थान के मुख्यमंत्री रह चुके हैं तीन बार केंद्र में मंत्री रह चुके हैं कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय संगठन में कई बड़े पदों पर रह चुके हैं और राजस्थान कांग्रेस के लंबे समय तक नंबर वन नेता बने रहे और अब भी गहलोत की पकड़ कहीं ना कहीं बनी हुई है ऐसे में गहलोत का अगर साथ मिल जाता है तो फिर पायलट अपने मंसूबों को भी सरकार कर सकते हैं पायलट जानते हैं कि गहलोत के समर्थन से ही राजस्थान में भारतीय जनता पार्टी को मजबूती से टक्कर दी जा सकती है गहलोत को इग्नोर करके राजस्थान में कांग्रेस का सत्ता में आना काफी मुश्किल है ऐसे में पायलट भी कहीं ना कहीं गहलोत के साथ मिलकर राजस्थान कांग्रेस को मजबूत करने की योजना पर काम करना चाहते हैं और शायद यही वजह रही कि वे खुद आगे बढ़कर गहलोत के आवास पर गए और उनसे मुलाकात की।

सचिन पायलट के समर्थन से ही अब वैभव गहलोत पॉलिटिक्स में हो सकते हैं सेट!

राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि पिता होने के नाते अशोक गहलोत अपने पुत्र वैभव गहलोत को राजनीति में सेट करने का सपना पाले हुए हैं इसी क्रम में उन्होंने दो बार वैभव गहलोत को लोकसभा का चुनाव भी लड़ाया लेकिन दोनों ही बार वैभव को पराजय का सामना भी करना पड़ा अब गहलोत यह जानते हैं कि कांग्रेस पार्टी के दिल्ली दरबार में उनकी पकड़ और प्रभाव पहले की तरह नहीं है इसलिए भविष्य में वैभव को कांग्रेस का टिकट दिलाने में सचिन पायलट के समर्थन की जरूरत पड़ सकती है क्योंकि सचिन पायलट एक तरफ राजस्थान में जहां लोकप्रिय होते जा रहे हैं तो दूसरी तरफ कांग्रेस पार्टी में भी गांधी परिवार के बाद दूसरे सबसे लोकप्रिय नेता माने जाते हैं दिल्ली में भी सचिन पायलट की अच्छी पकड़ है ऐसे में सचिन पायलट के समर्थन और सहयोग के बिना भविष्य में वैभव गहलोत को राजनीति में सेट करना बड़ा मुश्किल होगा इसलिए गहलोत कहीं ना कहीं सचिन पायलट के साथ अब कांग्रेस पार्टी में मिलकर काम करने के बारे में गंभीरता से शायद सोच रहे हैं।

गहलोत के घर जाकर दिल्ली में कांग्रेस के बड़े नेताओं का भी पायलट ने जीता दिल

अशोक गहलोत के घर पर जाकर सचिन पायलट ने राजस्थान कांग्रेस के छोटे बड़े नेताओं का तो दिल जीत ही इसके अलावा दिल्ली में विराजमान कांग्रेस के बड़े नेता भी सचिन पायलट के इस व्यवहार से काफी खुश और प्रभावित नजर आए दिल्ली में बड़े नेताओं में यह संदेश गया है कि सचिन पायलट कांग्रेस पार्टी के बड़े नेताओं का कितना सम्मान और आदर करते हैं उनकी इस मुलाकात ने सचिन पायलट की लोकप्रियता में और भी चार चांद लगा दिए हैं, कांग्रेस जनों में भी यह चर्चा है कि सचिनपायलट के अपने घर पर आकर मुलाकात करने के बाद कहीं ना कहीं अशोक गहलोत अपने उन बयानों को लेकर जरूर गलती महसूस कर रहे होंगे जो बयान उन्होंने सचिन पायलट को लेकर पहले दिए थे, नाकारा निकम्मा जैसे शब्दों को लेकर कहीं ना कहीं अशोक गहलोत को इस समय जरूर पछतावा हो रहा होगा तो दूसरी तरफ गहलोत के घर जाने के बाद अब अशोक गहलोत के समर्थक नेता भी सचिन पायलट की भूरी भूरी प्रशंसा करने लगे हैं जिसकी वजह से निश्चित रूप से पायलट कांग्रेस पार्टी में और मजबूत हुए हैं।

सचिन पायलट का शक्ति प्रदर्शन, पार्टी के बड़े नेता एक मंच पर

राजेश पायलट की पुण्यतिथि पर आयोजित कार्यक्रम में प्रदेश कांग्रेस के नेताओं में एकता का भाव नजर आया, सचिन पायलट की लोकप्रियता में लगे चार चांद

जयपुर। दौसा जिले में अभी हाल ही में स्वर्गीय राजेश पायलट की पुण्यतिथि पर आयोजित कार्यक्रम में राजस्थान कांग्रेस के सभी बड़े नेताओं में एकता का भाव नजर आया, अशोक गहलोत और सचिन पायलट जैसे नेताओं ने भी एक दूसरे के प्रति जमकर आदर भाव और सम्मान दिखाया तो इस कार्यक्रम में उमड़ी भीड़ से सचिन पायलट की लोकप्रियता में भी चार चांद लग गए, हालांकि अब से पहले भी स्वर्गीय राजेश पायलट की पुण्यतिथि और जयंती पर होने वाले कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोग अपनी उपस्थिति दर्ज करवाते रहे हैं क्योंकि एक तरफ जहां सचिन पायलट अपने पिता की तरह राजस्थान और देश में लोकप्रिय होते जा रहे हैं तो दूसरी तरफ स्वर्गीय राजेश पायलट जन्मदिन की 25 साल बाद भी राजेश पायलट लोगों के दिलों से विलुप्त नहीं हुए हैं इसलिए उनके सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में हमेशा बड़ी संख्या में लोग हाजिर होते हैं लेकिन इस बार कांग्रेस पार्टी के तमाम बड़े नेता पुण्यतिथि के कार्यक्रम में हाजिर हुए अशोक गहलोत जैसे नेता भी कार्यक्रम में नजर आए जो एक बड़ी बात कही जा सकती है हालांकि प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में राजेश पायलट की पुण्यतिथि और जयंती के कार्यक्रम में अशोक गहलोत पहले भी कई बार हाजिर हुए और राजेश पायलट को श्रद्धांजलि भी अर्पित की लेकिन सचिन पायलट की ओर से आयोजित किए गए इस तरह के कार्यक्रम में अशोक गहलोत पहली बार शामिल हुए जो यह दिखाता है कि कहीं ना कहीं अब अशोक गहलोत तो सचिन पायलट के बीच आपस में प्यार मोहब्बत का सिलसिला शुरू हो चुका है रेसिपी का सिलसिला शुरू हो चुका है वैसे भी अशोक गहलोत ने पत्रकारों से बातचीत के दौरान साफ कहा कि सचिन पायलट और उनमें दूरियां कब थी, हम दोनों में तो मोहब्बत है तो दूसरी तरफ सचिन पायलट ने भी कहा है कि रात गई बात गई हमें आगे की ओर देखना है और कांग्रेस पार्टी को मजबूती देनी है गहलोत और पायलट के इन बयानों से यह तो साफ नजर आता है कि अब इन दोनों नेताओं के बीच पहले जैसी राजनीतिक दुश्मनी नहीं है कहीं ना कहीं दोनों नेता एक दूसरे की ओर आदर भाव से झुकने लगे हैं जो राजस्थान कांग्रेस की मजबूती के लिए एक नए अध्याय की शुरुआत की जा सकती है।

राजेश पायलट की पुण्यतिथि और जयंती के कार्यक्रमों में क्यों उमड़ती है भीड़

दौसा जिले में आज से करीब 25 साल पहले जिस जगह पर सड़क हादसे में राजेश पायलट का निधन हुआ था उसे जगह पर हर साल राजेश पायलट की जयंती और पुण्यतिथि का कार्यक्रम बड़े स्तर पर मनाया जाता है जिसमें बड़ी संख्या में लोग हाजिर भी होते हैं राजेश पायलट किसानों के बड़े लीडर माने जाते थे और किसानों के कल्याण और विकास के लिए लोकसभा और सड़कों पर उन्होंने जो संघर्ष किया उसकी वजह से ही किसान वर्ग में उनकी लोकप्रियता आज भी पहले की तरह ही है इसलिए उनके सम्मान में जब भी जहां कोई कार्यक्रम आयोजित होता है बिना बुलाए बड़ी संख्या में लोग पहुंच जाते हैं यह राजेश पायलट की अपनी खुद की पर्सनैलिटी का ही कमाल है कि लोग उन्हें आज भी ठीक उसी तरह से प्यार करते हैं जैसे उनके जीवित होने पर किया करते थे, राजेश पायलट 1980 में पहली बार भरतपुर से सांसद चुने गए थे और फिर दोसा लोकसभा सीट से कई बार सांसद चुने गए तथा केंद्र में मंत्री रहे इसके अलावा राजनीति में आने से पहले एयर फोर्स में फाइटर प्लेन उड़ने वाले राजेश पायलट ने 1971 के युद्ध में पाकिस्तान की फौज को बैक फुट पर करने में बड़ी भूमिका निभाई थी, संजय गांधी और राजीव गांधी के भी काफी करीबी रहे तथा जब तक जीवित रहे कांग्रेस पार्टी के बड़े लोकप्रिय नेता माने जाते रहे इसलिए आज भी राजस्थानी इसलिए आज भी राजस्थान ही नहीं बल्कि पूरे देश के कांग्रेस जन राजेश पायलट को याद करते हैं उनके कामों को याद करते हैं यही वजह है कि उनके सम्मान में जब भी जहां कोई कार्यक्रम होता है लोग बड़ी संख्या में उपस्थिति दर्ज करवा कर अपने इस प्यारे नेता को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, इसलिए अभी राजेश पायलट की जो 25वीं पुण्यतिथि मनाई गई और बड़ा कार्यक्रम आयोजित किया गया उसमें अगर बड़ी संख्या में लोग आए तो यह कोई पहली बार नहीं था और कोई ताज्जुब वाला विषय भी नहीं था लेकिन कांग्रेस पार्टी के सभी बड़े लीडर पहली बार नजर आए जो एक बड़ा घटनाक्रम जरूर रहा।

कौन-कौन नेता आए राजेश पायलट की पुण्यतिथि के कार्यक्रम में

राजेश पायलट की पुण्यतिथि के कार्यक्रम में कांग्रेस पार्टी के तमाम बड़े नेता पूर्व मंत्री, पूर्व विधायक, कई वर्तमान विधायक शामिल हुए जिसमें अशोक गहलोत, सुखजिंदर सिंह रंधावा, गोविंद सिंह डोटासरा, हरीश चौधरी, टीकाराम जूली, प्रताप सिंह खच्चरिया वास, मुरारी लाल मीणा, हरीश मीणा, हेमाराम चौधरी, बजेंद्र ओला, बाबूलाल नागर, ममता भूपेश, परसादी लाल मीणा, शिखा मील बराला, मुकेशभाकर, रामनिवास, गावड़िया, रफीक खान, वीरेंद्र सिंह, अमीनकागजी, अनिल चोपड़ा, वेद प्रकाश सोलंकी इत्यादि कई बड़े नेता शामिल हुए कांग्रेस पार्टी के वर्तमान विधायकों में से अधिकांश विधायकों ने इस कार्यक्रम में उपस्थिति दर्ज करवाई। हालांकि राजनीतिक विश्लेषक इस बात को भी स्वीकार करते हैं कि अपने पिता की पुण्यतिथि पर आयोजित किए गए इस कार्यक्रम से सचिन पायलट ने एक तरफ अपनी लोकप्रियता को एक बार फिर से सिद्ध किया है तो दूसरी तरफ सचिन पायलट कांग्रेस पार्टी का नंबर वन लीडर होना भी सिद्ध किया है अब देखने वाली बात यह है कि कांग्रेस पार्टी सचिन पायलट की इस लोकप्रियता को आगे किस तरह से स्वीकार करती है।

बिल्कुल अपने पिता की तरह लोकप्रिय होते जा रहे हैं सचिन पायलट

इसमें कोई संदेह नहीं सचिन पायलट अपने पिता की तरह राजस्थान और देश में लोकप्रिय होते जा रहे हैं जिस तरह से उनके पिता किसान, मजदूर और वंचित वर्ग में काफी लोकप्रिय रहे और किसान, वंचित और मजदूर वर्ग की भलाई के लिए लंबी लड़ाई लड़ते रहे ठीक उसी तरह से सचिन पायलट भी अपने पिता की तरह कृषक वर्ग में लोकप्रिय है और जनहित के मुद्दों को लेकर दमदार तरीके से लड़ाई लड़ते रहे हैं सचिन पायलट अपने पिता की तरह ही अपनी कार्यशैली को और व्यवहार को अंजाम दे रहे हैं अपने पिता की तरह ही दमदार तरीके से भाषण प्रस्तुत करते हैं और अपने पिता की तरह ही भाषण की शुरुआत करते हैं और पिता की तरह ही राम-राम कहकर दोनों हाथ जोड़कर भाषण का अंत करते हैं उससे सभा में मौजूद हर कोई व्यक्ति यही कहता नजर आता है कि सचिन अपने पिता राजेश पायलट की तरह नजर आते हैं, अपने पिता के निधन के बाद सिर्फ 26 साल की आयु में ही सचिन पायलट सबसे कम उम्र के लोकसभा सांसद बनने का गौरव हासिल किया था उसके बाद मनमोहन सिंह सरकार में मंत्री रहे राजस्थान में करीब 8 साल तक कांग्रेस पार्टी का नेतृत्व किया तथा पिछली गहलोत सरकार में उपमुख्यमंत्री पद पर रहे और उपमुख्यमंत्री पद पर रहते हुए जो जो विभाग अशोक गहलोत ने उन्हें दिए थे उन विभागों का बहुत ही शानदार तरीके से सफलतापूर्वक काम करके दिखाया केंद्र में मंत्री रहते हुए भी सचिन पायलट के काम काफी प्रभावशाली रहे तथा अब यह कहा जाता है कि पूरे देश में कांग्रेस पार्टी में गांधी परिवार के बाद सचिन पायलट ही लोकप्रियता में दूसरे नंबर पर आते हैं इसलिए सचिन पायलट के लोकप्रियता राजस्थान में ही नहीं बल्कि पूरे देश में टॉप पर है राहुल गांधी के बेहद नजदीक हैं और राहुल गांधी के नजदीकी दोस्त भी माने जाते हैं तथा प्रियंका गांधी के भी काफी नजदीकी है इसलिए माना जा रहा है कि राजस्थान में अब सचिन पायलट को मुख्यमंत्री के रूप में आगे करके वर्ष 2028 का विधानसभा चुनाव कांग्रेस पार्टी लड़ने का विचार गंभीरता से कर रही है क्योंकि कांग्रेस पार्टी के रणनीतिकारों को भी अब यह लगने लगा है कि सचिन पायलट को आगे करके ही राजस्थान में कांग्रेस पार्टी को बहुमत में लाया जा सकता है अब जिस तरह से अशोक गहलोत का व्यवहार भी सचिन पायलट को लेकर सकारात्मक नजर आने लगा है उसके बाद कांग्रेस के गलियारों में भी चर्चा है कि गहलोत और सचिन पायलट के हाथ मिलाने से कांग्रेस पार्टी अब मजबूत होगी और भारतीय जनता पार्टी को हर हाल से राजस्थान से विदा करने का वक्त आ गया है।

जनसेवा से मिली लोकप्रियता से शिखा मील की राजनीति में दमदार एंट्री

राजस्थान कांग्रेस का गर्व है चोमू की इस महिला डॉक्टर विधायक पर, जीवन के पहले ही चुनाव में भाजपा के तीन बार के विधायक को दी करारी शिकस्त, जनसेवा और राजनीति का अद्भुत संगम देखकर चोमूवासी हो गए निहाल

जयपुर। अक्सर यह देखा जाता है कि विधायक और सांसद तो क्या अगर कोई जिला प्रमुख प्रधान जैसे पद पर ही विराजमान हो जाता है तो उसकी बॉडी लैंग्वेज, व्यवहार इत्यादि में अचानक बदलाव आ जाता है और वह खुद को आम से खास मानने लग जाता है बाद में जनता भले ही ऐसे लोगों को आइना दिखा दे लेकिन संस्कारिक और परोपकारी फैमिली से ताल्लुक रखने वाले लोग चाहे जिस भी क्षेत्र में सक्रिय हो और चाहे बुलंदियों पर पहुंच जाए उन्हें जो संस्कार परिजनों से मिले हैं उन संस्कारों को जीवन भर दिल से लगाए रखते हैं और पूरा जीवन समाज सेवा को अर्पित करके बिताते हैं, ऐसे लोगों को समाज भी सैल्यूट करता है और वक्त पड़ने पर समाज भी उन्हें उतना ही प्यार और आदर सम्मान देता है जितना उन्होंने समाज के लिए किया है इसका जीता जागता उदाहरण है राजस्थान कांग्रेस के सचिव और चोमू विधायक शिखा मील, जी हां, विधायक चुने जाने से पहले ही यह महिला विधायक चोमू विधानसभा क्षेत्र और आसपास के विधानसभा क्षेत्र में अपने सामाजिक कामों से इतनी लोकप्रिय हो गई थी कि घर-घर में उनके नाम की चर्चा होने लगी थी खासतौर से महिलाओं के उत्थान और कल्याण के लिए उन्होंने अपने स्वयंसेवी संगठन 'प्रयास' से जो अद्वितीय और अकल्पनीय काम किया उन कामों से शिखा मील ने महिलाओं के दिलों में अपना एक अलग मुकाम बना लिया था उसी की वजह से उन्होंने वर्ष 2023 के विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के तीन बार के विधायक रामलाल शर्मा को पराजय का स्वाद चखाया अन्यथा शर्मा चोमू विधानसभा सीट से वर्ष 2003, 2013 और 2018 में विधायक रहे थे और उनकी चोमू क्षेत्र में बहुत अच्छी पकड़ थी लेकिन इसके बावजूद भी शिखा मील उन्हें हराने में कामयाब रही इसका सबसे बड़ा उनका परोपकारी जीवन और लोगों के दिल से सेवा करना और क्षेत्र की महिलाओं के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने तथा भांति भांति के रोग से पीड़ित महिलाओं के उपचार के लिए अपने स्तर पर ठोस प्रबंधन और व्यवस्था करना इन कामों ने इस महिला विधायक की लोकप्रियता में चार चांद लगाए जिसकी वजह से राजस्थान कांग्रेस के रणनीतिकारों को भी यह आभास हो गया था कि यही महिला है जो रामलाल शर्मा जैसे नेता को हरा सकती हैं इसी उम्मीद के दम पर कांग्रेस ने शिखा मील को टिकट दिया और इस महिला ने चुनाव जीतकर यह साबित भी करके दिखाया कि आज के दौर में यह ज्यादा महत्व नहीं रखता कि आप कितनी बार के विधायक हो और कितने वरिष्ठ हो, ज्यादा मतलब यह रखता है कि आप समाज के लिए क्या कर रहे हो और समाज के लिए कितना वक्त दे रहे हो, शिखा मील की राजनीति में इस दमदार एंट्री ने राजस्थान कांग्रेस को भी मजबूती प्रावधान की है क्योंकि यह कर्मठ महिला विधायक जितने पार्टी को लेकर सजक सक्रिय है, उतनी ही अपनी क्षेत्र की जनता की समस्याओं को सुलझाने के लेकर भी सक्रिय है, एक तरफ पार्टी के संगठन को मजबूत करने के लिए पार्टी की ओर से दी जा रही जिम्मेवारियों को सफलतापूर्वक निभा रही हैं तो दूसरी तरफ चोमू क्षेत्र के विकास के लिए अपना सब कुछ समर्पित किए हुए हैं हालांकि प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार है इसके बावजूद भी चोमू विधानसभा क्षेत्र की वर्षों पुरानी समस्याओं को सुलझाने के लिए पुरी ताकत से जुटी हुई हैं।

समाजसेवा और राजनीति का अद्भुत संगम है शिखा मील

कांग्रेस विधायक शिखा मील आईवीएफ स्पेशलिस्ट डॉक्टर हैं, इनके पिता भी डॉक्टर हैं और अपने पिता को लोगों की सेवा करते देखा तो बचपन में ही खुद शिखा मील ने डॉक्टर बनने का ख्वाब दिल में संजो लिया था, अपने पिता को गरीब मरीजों का उपचार भी पूरे दिल से करते देखा तो सेवा भाव का यह जज्बा शिखा के रग रग में बचपन में ही समा गया था जो अब तक बरकरारहै द्य टीएमटी में आठवीं रैंक मिलने के बाद जयपुर के सवाई मानसिंह हॉस्पिटल से एमबीबीएस की डिग्री हासिल की इसके बाद अहमदाबाद के बीजे मेडिकल क मेडिकल कॉलेज से महिला एवं महिला प्रस्तुति स्पेशलिस्ट में पोस्ट ग्रेजुएशन किया और केडीआरसी में टेस्ट ट्यूब बेबी और दूरबीन सर्जरी में स्पेशलिस्ट डिग्रीहासिल की द्य राजनीति में आने से पहले चोमू और आसपास के इलाके में गांव-गांव भ्रमण करके महिलाओं के स्वास्थ्य सुधार के लिए रोजाना शिविर लगे और इन शिविर के माध्यम से महिलाओं के स्वास्थ्य का चेकअप करकेउन्हें बीमारियों से मुक्त करने के लिए अपने स्तर पर हर तरह से प्रयास किया जिसकी वजह से महिलाओं में शिखा मील काफी पॉपुलर हो गई हालांकि इनके परिवार की ओर से चोमू में बराला हॉस्पिटल संचालित है लेकिन शिखा मील ने जरूरतमंद लोगों की सेवा करने के लिए तथा महिलाओं के कल्याण और विकास के लिए 'प्रयास' नाम से एक स्वयंसेवी संगठन बनाया हुआ है इस संगठन के तहत व्यापक रूप से कार्यक्रम और शिविरों का आयोजन करके जरूरतमंद और निर्धन गरीब लोगों को समुचित और बेहतर चिकित्सा व्यवस्था उपलब्ध करवाने के साथ-साथ अन्य तरह की समस्याओं का निवारण भी किया जिसकी वजह से क्षेत्र के लोगों में सीख मिल एक बड़ा चेहरा बन चुकी थी सीख मील की इन गतिविधियों पर प्रदेश के सभी राज दलों के नेताओं की निगाहें भी टिकी हुई थी चोमू शहरी इलाके में ही नहीं बल्कि छोटे-छोटे गांव में भी ग्रामीण और कृषक वर्ग शिखा मिल का काफी आदर भाव और सम्मान करने लगे थे, जब शिखा मील किसी गांव और ढाणी में चिकित्सा शिविर के आयोजन के लिए मौके पर पहुंचती तो वहां पर ग्रामीण उनसे विधानसभा का चुनाव लड़ने का पुरजोर आग्रह किया करते थे, ग्रामीणों के बार-बार आग्रह करने पर अपने जन सेवा के कामों को ज्यादा विस्तार देने और गति देने के लिए राजनीति में कदम रखने का मन बनाया कांग्रेस पार्टी के रणनीतिकार पहले से ही इस लोकप्रिय महिला डॉक्टर पर निगाहें टिकाई हुए थे कांग्रेस पार्टी के रणनीतिकारों ने इस महिला डॉक्टर की लोकप्रियता का फायदा उठाने के लिए कांग्रेस पार्टी के संगठन में बड़ी भूमिका दी और सचिव पद पर नियुक्त किया बाद में वर्ष 2023 के विधानसभा चुनाव में चोमू विधानसभा क्षेत्र से टिकट दिया और शिखा मील ने चुनाव जीत भी द्य विधायक बनने के बाद भी शिखा मील की दिनचर्या, कार्यशाली और पहले की तरह ही है, शिखा मील पहले से ज्यादा लोगों की सेवा करने के लिए गंभीर नजर आ रही है क्योंकि वे जानती हैं कि उनकी जिम्मेदारियां अब पहले से कई गुना ज्यादा बढ़ गई है इसलिए एक डॉक्टर होने के नाते एक तरफ जहां जरूरतमंद लोगों का उपचार कर रही हैं तो दूसरी तरफ 'प्रयास' संगठन के माध्यम से क्षेत्र के लोगों के हर तरह की समस्याओं का निदान करने का काम पहले की तरह अब भी जारी है तथा विधायक होने के नाते अब क्षेत्र की बुनियादी समस्याओं का निवारण करने के साथ-साथ क्षेत्र के लोगों से जो वादे किए थे उन वादों को पूरा करने के लिए भी पूरी तरह से समर्पित दिख रही है तो दूसरी तरफ पार्टी के संगठन को गति देने के लिए भी पूरी तटवर्ता से कम कर पार्टी के संगठन को गति देने के लिए भी पूरी तटवर्ता से पार्टी के संगठन को गति देने के लिए भी पूरी निष्ठा से काम करती हुई दिखाई दे रही हैं इसलिए क्षेत्र के लोग भी यह मानते हैं कि जन सेवा के कामों और राजनीति का अद्भुत संगम है 'सीख मील'।

बीसलपुर बांध का पानी चोमू लाने के लिए युद्ध स्तर पर प्रयासरत है शिखा मील

चोमू के लोगों को बीसलपुर बांध का पानी पिलाने के लिए विधायक होने के नाते शिखा मील अपनी ओर से कोई कसर बाकी नहीं छोड़ रही हैं, राजस्थान विधानसभा के अंदर भी चोमू के लोगों को बीसलपुर बांध का पानी पिलाने की मांग को पुरजोर तरीके से इस महिला विधायक ने उठाया है तथा सदन के बाहर भी इस मांग को समय-समय पर पुरजोर तरीके से उठायाहै द्य बीसलपुर बांध के पानी की मांग लंबे समय से चोमू के लोग करते हुए आ रहे हैं लेकिन अभी तक चोमू के लोगों की यह मांग पूरी नहीं हो पाई है इसके पीछे चोमू के बुद्धिजीवी लोगों का कहना है कि अब से पहले अगर जनप्रतिनिधियों ने ठीक तरह से चोमू के लोगों की यह मांग सरकार के समक्ष उठाते तो यह मांग पूरी हो सकती थी लेकिन जनप्रतिनिधियों की अपेक्षा के चलते सरकार ने इस मांग को लेकर सकारात्मक रवैया नहीं दिखाया लेकिन अब जिस तरह से विधायक चुने जाने के बाद शिखा मील ने इस मांग को प्राथमिकता पर रखा है उससे लोगों को उम्मीद है कि उनकी यह मांग भी पूरी होगी क्योंकि चोमू की यह महिला डॉक्टर विधायक पूरी निष्ठा के साथ चोमू के लोगों कि इस मांग को प्रदेश की भारतीय जनता पार्टी सरकार के समक्ष रखा है इसके लिए हर तरह से सरकार पर दबाव भी बनाया जा रहा है।

लोगों की समस्याओं के निवारण के लिए नियमित रूप से जनसुनवाई कार्यक्रम का आयोजन

वैसे तो विधायक चुने जाने से पहले से ही शिखा मील क्षेत्र के लोगों की समस्याओं के निवारण के लिए पूरी तरह से समर्पित रही हैं और लोगों में चर्चा है कि अगर कोई आधी रात को भी इनसे मदद की गुहार लगाए तो तुरंत मदद के लिए हाजिर हो जाती हैं लेकिन विधायक चुने जाने के बाद अब नियमित रूप से जनसुनवाई के कार्यक्रम का आयोजन करके लोगों की समस्याओं का निवारण करती हुई नजर आ रही है, यह जनसुनवाई कार्यक्रम सिर्फ दिखावे का नहीं होता है बल्कि इस कार्यक्रम में बाकायदा लोगों की समस्याओं का संकलन किया जाता है और प्रत्येक व्यक्ति की समस्या को संबंधित डिपार्टमेंट तक न केवल पहुंचाया जाता है बल्कि समस्या की निवारण के लिए डिपार्टमेंट की ओर से क्या प्रक्रिया की जाती है इस पर भी नियमित रूप से अपडेट लिया जाता है और जब तक समस्या का निवारण नहीं हो जाता तब तक संबंधित विभाग पर बराबर दबाव बनाकर रखा जाता है जिसकी वजह से लोगों की समस्याओं का निवारण भी हो रहा है, जानकार लोगों का कहना है कि भले ही प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार हो लेकिन इसके बावजूद भी अपनी खुद की पर्सनालिटी से लोगों की समस्याओं का निवारण करवाने में काफी हद तक यह महिला विधायक सफल भी हो रही है, विधानसभा चुनाव के दौरान क्षेत्र के लोगों से जो जो वादे किए हैं उन वादों को भी एक-एक करके पूरा करने का बीड़ा उठाया हुआ है तथा चोमू विधानसभा क्षेत्र की लंबित वर्षों पुरानी समस्याओं के निवारण के लिए भी राजस्थान सरकार पर बराबर दबाव बनाया हुआ है तथा संबंधित विभाग के बड़े अधिकारियों से नियमित रूप से पत्र व्यवहार के साथ-साथ व्यक्तिगत रूप से हाजिर होकर क्षेत्र के लोगों की समस्याओं को दमदार तरीके से उठाने में शिखा मिल अपनी ओर से कोई कसर बाकी नहीं छोड़ रही।

कोरोना की अवधि में किए गए जनसेवा के कामो ने शिखा मील को बना दिया 'महान'.....

प्रदेश, और देश दुनिया में कोरोना महामारी के दस्तक देने से पहले ही जन सेवा के कामों को लेकर शिखा मील काफी चर्चित चेहरा बन चुकी थी लेकिन कोरोना की अवधि में अपनी जान की परवाह किए बिना शिखा मील ने अपनी टीम के सहारे हर जरूरतमंद लोगों के लिए खाद्य सामग्री, दवाइयां, चिकित्सा के उपकरण इत्यादि अपने स्तर पर उपलब्ध करवाई और पूरे कोरोना की अवधि में कोरोना बीमारी की रोकथाम के लिए लोगों को जागरूक किया, सेनीटाइज मास्क इत्यादि की व्यवस्था की तथा अपने परिवार की ओर से चोमू में संचालित बराला हॉस्पिटल के माध्यम से भी जरूरतमंद लोगों की खूब सेवा की। कोरोना की अवधि में प्रदेश में कांग्रेस पार्टी की सरकार थी इसलिए सरकारी स्तर पर भी सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए शिखा मील ने अपनी ओर से कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी, अपनी ही पार्टी के सरकार से चोमू विधानसभा क्षेत्र में इस संकट की घड़ी में लोगों की हर तरह से मदद करने के लिए कांग्रेस पार्टी की यह महिला नेता अग्रिम पंक्ति पर कड़ी नजर आई और एक डॉक्टर के रूप में भी गांव-गांव जाकर लोगों को न केवल कोरोना महामारी को लेकर जागरूक किया बल्कि अपनी जान की परवाह किए कोरोना पीड़ित मरीजों की सेवा की और उपचार भी किया इसकी वजह से चोमू विधानसभा क्षेत्र में कोरोना की इस अवधि में अपने जन सेवा के कामों से लोगों में चर्चा का केंद्र बिंदु बनी रही और लोकप्रियता के ग्राफ में ऊंची उड़ान भरी।

कांग्रेस पार्टी के संगठन को भी चोमू क्षेत्र में किया है मजबूत

यह तो मानना ही पड़ेगा की वर्ष 2003 से लेकर अब तक जितने विधानसभा चुनाव हुए उनमें तीन बार भारतीय जनता पार्टी और दो बार कांग्रेस पार्टी को सफलता मिली, वर्ष 2013 और वर्ष 2018 के विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के रामलाल शर्मा विधायक चुने गए थे इससे पहले 2003 में रामलाल शर्मा पहली बार विधायक चुने गए थे कुल मिलाकर वर्ष 2008 में कांग्रेस के भगवान सहाय सैनी विधायक चुने गए और अब 2023 में कांग्रेस पार्टी की शिखा मील विधायक चुनी गई है इसलिए कहीं ना कहीं चोमू विधानसभा क्षेत्र में कांग्रेस पार्टी का संगठन भारतीय जनता पार्टी के संगठन की तुलना में कमजोर रहा इसकी वजह से क्षेत्र से कांग्रेस पार्टी को बार-बार हार का सामना करना पड़ा लेकिन वर्ष 2023 के विधानसभा चुनाव से पहले प्रदेश कांग्रेस के सचिव पद पर रहने के दौरान शिखा मील ने चोमू विधानसभा क्षेत्र में भी कांग्रेस पार्टी के संगठन को गति देने के लिए और कर प्रयास किया, अपनी युवाओं की टीम के सहारे पार्टी के संगठन को निचले स्तर पर मजबूत किया ताकि विधानसभा चुनाव में मतदाताओं को मतदान केंद्र तक लाने और मतदाताओं को कांग्रेस पार्टी के उम्मीदवार के पक्ष में मतदान करने के काम में आसानी हो सके, शिखा मील चिकित्सक हैं इसके अलावा युवा है बोलने का अंदाज और भाषण शैली भी लाजवाब है तथा अपनी पर्सनालिटी के दम पर क्षेत्र के युवा कार्यकर्ताओं को भी बड़ी संख्या में पार्टी के साथ जोड़ रखा है उसी का परिणाम रहा की भारतीय जनता पार्टी जैसी पार्टी जो संगठन स्तर पर हमेशा मजबूत रही है उसको 2023 के विधानसभा चुनाव में चोमू में कांग्रेस पार्टी से हार का सामना करना पड़ा यह सब कांग्रेस की महिला नेता शिखा मील के प्रयासों की ही देन है।

चौधरी चरणसिंह के पोते जयंत चौधरी की निगाहें राजस्थान पर

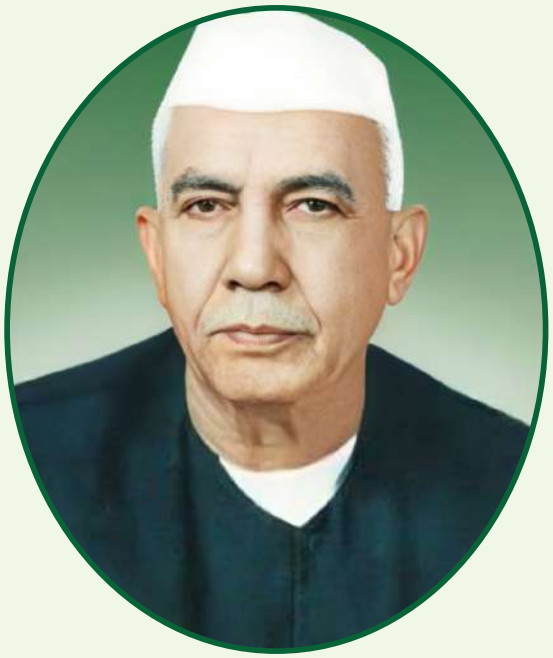

प्रदेश में राष्ट्रीय लोक दल को तीसरी बड़ी राजनीतिक पार्टी बनाने के प्रयास युद्ध स्तर पर, अशोक गहलोत के करीबी पूर्व विधायक जोगेंद्र सिंह अवाना को बनाया पार्टी का प्रदेश अध्यक्ष, केंद्र की तरह राजस्थान में राष्ट्रीय लोक दल भाजपा से दोस्ताना संबंध रखेगा जारी

जयपुर। राष्ट्रीय लोकदल के सुप्रीमो और केंद्रीय मंत्री जयंत चौधरी की निगाहें राजस्थान के राजनीति पर टिक गई है चौधरी राजस्थान में राष्ट्रीय लोक दल को तीसरी बड़ी राजनीतिक दल बनाने के प्रयास में युद्ध स्तर पर जुट गए हैं इसी क्रम में पिछले दिनों अशोक गहलोत के करीबी रहे नदबई के पूर्व विधायक जोगेंद्र सिंह अवाना को पार्टी का प्रदेश अध्यक्ष बनाकर प्रदेश की राजनीति में सनसनी फैला दी है हालांकि राजस्थान में पूर्व में भी राष्ट्रीय लोक दल के कई बड़े नेता रहे राजस्थान विधानसभा में भी राष्ट्रीय लोकदल के रूप में कई नेता विधायक चुने गए लेकिन पिछले कई सालों से राष्ट्रीय लोकदल की स्थिति लगातार राजस्थान में कमजोर होती रही और अब राजस्थान में राष्ट्रीय लोकदल का एक ही विधायक रह गया है सुभाष गर्ग लगातार दूसरी बार 2023 में भरतपुर से राष्ट्रीय लोकदल के टिकट पर चुनाव लड़े और चुनाव जीते लेकिन अब आगामी विधानसभा चुनाव के मध्य नजर जयंत चौधरी ने राजस्थान में राष्ट्रीय लोक दल के विस्तार को तेजी से फैलने के प्रयास में युद्ध स्तर पर प्रयास कर रहे हैं इसी क्रम में कहा जा रहा है कि चालू जून माह में ही जयंत चौधरी की जयपुर में पार्टी के कार्यकर्ताओं की एक बड़ी सभा को संबोधित करेंगे जिसमें प्रदेश भर के राष्ट्रीय लोक दल के कार्यकर्ता शामिल होंगे हालांकि अभी तक सम्मेलन की तारीख सामने नहीं आई है लेकिन पिछले दिनों पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष पद पर नियुक्त किए जोगेंद्र सिंह ने कहा था कि जून माह में निश्चित रूप से जयंत चौधरी की एक बड़ी सभा का आयोजन करवाएंगे जिसमें चौधरी के अलावा राष्ट्रीय लोकदल के राजस्थान प्रभारी मलूक नागर और पार्टी के कई केंद्रीय नेताओं के अलावा राजस्थान इकाई से जुड़े पार्टी के नेता संबोधित करेंगे द्य जानकार लोगों का कहना है कि आगामी दिनों में राजस्थान में पंचायत राज और नगर निकायों के चुनाव होने वाले हैं और इन दोनों ही चुनाव में राष्ट्रीय लोकदल चुनाव लड़ने के मूड में है इतना ही नहीं पिछले दिनों पिंक सिटी प्रेस क्लब में आयोजित हुए पार्टी के कार्यकर्ता सम्मेलन में पार्टी के प्रदेश

अध्यक्ष जोगेंद्र सिंह ने पार्टी के कार्यकर्ता सम्मेलन में पार्टी के नव नियुक्त प्रदेश अध्यक्ष जोगेंद्र सिंह अवाना ने कहा था कि पंचायत राज चुनाव में भी राष्ट्रीय लोक दल को पार्टी का चुनाव चिन्ह आवंटित करने के लिए चुनाव आयोग से अपील की जाएगी और इस संबंध में पार्टी का एक प्रतिनिधिमंडल चुनाव आयोग से मिलकर पंचायत राज चुनाव में भी पार्टी को सिंबल देने की रिक्वेस्ट करेगा, कुल मिलाकर राष्ट्रीय लोकदल इस बार स्थाई रूप से एक बहुत बड़ी पारी खेलने के लिए राजस्थान की राजनीति के पिच पर उतरने जा रहा है हालांकि जयंत चौधरी ने पार्टी के प्रदेश के नेताओं से साफ कहा है कि जिस तरह का दोस्ताना संबंध राष्ट्रीय लोकदल का दिल्ली में भारतीय जनता पार्टी और एनडीए से है ठीक उसी तरह का दोस्ताना संबंध राजस्थान में भी भारतीय जनता पार्टी की भजनलाल सरकार से रहेगा।

जयंत चौधरी की राजस्थान के जाट मतदाताओं पर है निगाहें

राजनीतिक के जानकार लोगों का कहना है कि राजस्थान की राजनीति में जाट समाज का शुरू से ही अच्छा प्रभाव रहा है जाट समाज प्रदेश की कई विधानसभा सीटों पर प्रभाव रखे हुए हैं कई विधानसभा सीटों पर जाट मतदाता की बहुलता ज्यादा है और किसी भी उम्मीदवार की जीत का रास्ता ऐसी सीटों पर जाट समाज की के मतदाताओं की ओर से ही तैयार किया जाता रहा है क्योंकि राष्ट्रीय लोकदल की स्थापना भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह ने कई साल पहले की थी बाद में चरण सिंह के निधन के बाद अजीत सिंह ने पार्टी का संचालन किया अजीत सिंह पूर्व में अटल बिहारी वाजपेई सरकार और मनमोहन सिंह सरकार में केंद्रीय मंत्री रह चुके हैं लेकिन अजीत सिंह का भी स्वर्गवास हो चुका है अजीत सिंह के बाद उनके बेटे जयंत चौधरी बहुत ही शानदार तरीके से पार्टी का संचालन कर रहे हैं और अब राजस्थान में जाट समाज के मतदाताओं को कहीं ना कहीं राष्ट्रीय लोकदल से जोड़ने के प्रयोग पर उन्होंने काम करना शुरू भी किया है राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि चौधरी चरण सिंह को राजस्थानी नहीं बल्कि पूरे देश के ग्रामीण लोग आज भी दिन से याद करते हैं चौधरी चरण सिंह खुद जाट समाज से ताल्लुक रखते हैं इस स्थिति में अगर राजस्थान में जयंत चौधरी सुनियोजित तरीके से अपनी पार्टी का विस्तार करेंगे तो जाहिर तौर पर प्रदेश का जाट समाज कहीं ना कहीं राष्ट्रीय लोकदल से जुड़ सकता है जिससे कांग्रेस और भाजपा दोनों ही दलों को नुकसान भी उठाना पड़ सकता है राष्ट्रीय लोकदल से जाट समाज के जुड़ने के दो बड़े कारण बताए जा रहे हैं एक तो जाट समाज खेती करता है और चौधरी चरण सिंह ने अपने जीते जी किसान मजदूर के कल्याण और विकास के लिए कई बड़े काम किया भूमि सुधार में भी चौधरी चरण सिंह का बड़ा योगदान रहा है, जाट समाज खुद खेती से जुड़ा है इसलिए चौधरी चरण सिंह की यादों को और उनके काम को याद करके प्रदेश का जाट समाज कहीं ना कहीं राष्ट्रीय लोकदल से जुड़ सकता है इसके अलावा चौधरी चरण सिंह खुद जाट समाज से आते थे इसलिए जातिगत स्थिति को देखते हुए भी प्रदेश का जाट समाज राष्ट्रीय लोकदल से जुड़ सकता है जो भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस पार्टी दोनों के लिए काफी नुकसानदायक साबित हो सकता है और जिस तरह से राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी से भी बड़ी संख्या में जाट इस समय जुड़े हुए हैं तो राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी को भी राष्ट्रीय लोकदल से नुकसान हो सकता है।

राजस्थान में भाजपा से दोस्ती बरकरार रखेगी राष्ट्रीय लोकदल

जयंत चौधरी इस समय केंद्र की मोदी सरकार में केंद्रीय मंत्री हैं एनडीए का हिस्सा हैं इसलिए राजस्थान में भी भजनलाल सरकार के साथ राष्ट्रीय लोकदल के साथ दोस्ताना संबंध रखने की बात कह रही है हालांकि पार्टी के नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष जोगेंद्र सिंह अवाना ने कहा कि पार्टी के सुप्रीमो जयंत चौधरी के आदेश की पालना करते हुए राजस्थान में राष्ट्रीय लोकदल ऐसा कोई कदम नहीं उठाएगी जिसकी वजह से प्रदेश की भजनलाल सरकार की छवि पर विपरीत असर पड़े लेकिन अगर कोई मुद्दा ऐसा होगा जो सीधा प्रदेश की जनता से जुड़ा हुआ है तो उस मुद्दे के समाधान के लिए भजनलाल सरकार के साथ टेबल पर बैठकर बातचीत करेंगे और प्रदेश की जनता को राहत दिलाएंगे द्य हालांकि अभी यह क्लियर नहीं हुआ है कि प्रदेश में आगामी दिनों में आयोजित होने वाले पंचायत राज और जिला परिषद के चुनाव में राष्ट्रीय लोकदल भारतीय जनता पार्टी के साथ मिलकर चुनाव लड़ेगा लेकिन राष्ट्रीय लोक दल पंचायत राज और जिला परिषद के चुनाव लड़ने की तैयारी के मध्य नजर ही अभी से पार्टी की गतिविधियों को अंजाम देने में जुट गया है पार्टी के नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष जोगेंद्र सिंह ने कहा है कि अभी कहना काफी मुश्किल है लेकिन पार्टी सुप्रीमो जैसा आदेश देंगे राजस्थान में हम उसी तरह से उनके आदेशों की पालना करते हुए पंचायत राज और जिला परिषद के चुनाव लड़ेंगे।

जोगिंदर सिंह अवाना की काबिलियत पर भरोसा है जयंत चौधरी को

राष्ट्रीय लोक दल के सुप्रीमो जयंत चौधरी को पूरी उम्मीद है कि राजस्थान में राष्ट्रीय लोकदल को तीसरी बड़ी राजनीतिक पार्टी बनाने में जोगेंद्र सिंह अवाना बड़ी भूमिका निभा सकते हैं क्योंकि अवाना पूर्व में भरतपुर के नदबई विधानसभा सीट से विधायक रह चुके हैं वर्ष 2018 में जोगेंद्र सिंह ने बसपा के टिकट पर चुनाव लड़कर भारतीय जनता पार्टी की वरिष्ठ नेता और पूर्व मंत्री कृष्णा कौर दीपा को हराया था, इस जीत से जोगेंद्र सिंह अवाना ने भरतपुर की राजनीति में खलबली मचा दी थी क्योंकि अवाना प्रमुख रूप से उत्तर प्रदेश के नोएडा के रहने वाले हैं और राजस्थान में कुछ ही सालों में उन्होंने राजनीति में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाना शुरू को किया था और कुछ ही समय में उन्होंने जिस तरह से पूर्व महाराजा स्वर्गीय मानसिंह की बेटी कृष्णेंद्र कौर दीपा को हराया वह कोई साधारण बात नहीं थी नदबई में जाट समाज के मतदाता भी बड़ी संख्या में है लेकिन इसके बावजूद भी उन्होंने भाजपा प्रत्याशी को हराया जो पूर्व में वसुंधरा राजे सरकार में मंत्री भी रह चुकी थी इसलिए उनकी जीत के पीछे यही कहा जा रहा था कि उन्होंने अपने व्यवहार और कार्यशैली से नदबई और आसपास के इलाके के लोगों का दिल जीत लिया था जिसकी वजह से चुनाव में लोगों ने उन्हें खूब प्यार और सम्मान लुटाया इसकी वजह से उनकी जीत सुनिश्चित हुई हालांकि पिछला विधानसभा चुनाव जोगिंदर सिंह अवाना जरूर हार गए लेकिन कहा जा रहा है कि विधायक रहने के दौरान उन्होंने नदबई में खूब विकास काम करवाएं, राजस्थान के सभी 200 विधायकों में से अपने निर्वाचन क्षेत्र में सबसे ज्यादा बजट पारित करवाने वाले जोगेंद्र सिंह अवाना ही थे क्योंकि अवाना पिछली गहलोत सरकार में देवनारायण बोर्ड के अध्यक्ष होने के साथ-साथ अशोक गहलोत के काफी करीबी भी थे इसलिए उन्होंने विकास काम में कोई कमी नहीं छोड़ी यह बात अलग है कि वह चुनाव हार गए लेकिन इसके बावजूद भी जयंत चौधरी ने जोगेंद्र अवाना की काबिलियत पर पूरा भरोसा किया है चौधरी जानते हैं कि अवाना गुर्जर समाज से ताल्लुक रखते हैं और देवनारायण का अध्यक्ष रहने के दौरान जोगेंद्र सिंह ने प्रदेशभर में भ्रमण किया और गुर्जर समाज की तरक्की के लिए हर संभव प्रयास भी किया इसके अलावा भरतपुर संभाग में जोगेंद्र सिंह की बहुत अच्छी पकड़ बताई जा रही है, जोगिंदर सिंह के बारे में यह भी माना जा रहा है कि हो सकता है बसपा के पुराने साथियों को वे राष्ट्रीय लोकदल से जोड़ लें जिससे राष्ट्रीय लोकदल की ताकत और बढ़ेगी इन तमाम तथ्यों को देखते हुए राष्ट्रीय लोकदल के दिल्ली में बैठे नेताओं को कहीं ना कहीं ऐसा लगता है कि जोगेंद्र सिंह अवाना राजस्थान में पार्टी के विस्तार में बड़ी भूमिका निभा सकते हैं, जानकार लोगों का कहना है कि अपनी नियुक्ति के 5 दिन बाद ही जयपुर के पिंक सिटी प्रेस क्लब में राष्ट्रीय लोकदल का एक बड़ा कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित करके जोगेंद्र सिंह ने अपनी राजनीतिक ताकत और पापुलैरिटी को भी दिखाया है इसलिए राष्ट्रीय लोकदल के राजस्थान प्रभारी मलूक नागर को भी पूरी उम्मीद है कि जोगेंद्र सिंह राष्ट्रीय लोकदल को राजस्थान में तीसरी बड़ी राजनीतिक पार्टी बनाने की पूरी कुवैत रखते हैं।

जाट समाज का गौरव है सुलेश चौधरी, दबंग महिला पुलिस ऑफिसर का अकल्पनीय प्रदर्शन

कई बड़ी रहस्यमई वारदातों का खुलासा कर पुलिस डिपार्टमेंट में खुद को किया साबित, खूंखार अपराधियों में खौफ तो आमजन में अपनी व्यवहार से हुई लोकप्रिय, परिवार समाज और पुलिस विभाग का किया नाम रोशन

जयपुर। भारत भले ही विज्ञान के क्षेत्र में दुनिया में अग्रिम पंक्ति के देशों में शामिल हो लेकिन सदियों से भारतीय समाज में चली आ रही पुरुष प्रधान व्यवस्था अब भी कायम है जिसकी वजह से चाहे कोई परिवार कितना ही खुशहाल, शिक्षित और मॉडर्न हो और महिलाएं हर क्षेत्र में खुद को साबित कर रही हो लेकिन अब भी लड़कियों को लड़कों के तुलना में कम आंका जाता है और करियर में भी परिवार वाले लड़कियों से लड़कों की तुलना में कम उम्मीद रखते हैं लेकिन बहुत सी लड़कियां ऐसी भी हैं जिन्हें अपने हुनर, काबिलियत और योग्यता पर पूरा विश्वास रहता है और सिर्फ अपनी मेहनत और लगन के दम पर उस लक्ष्य को हासिल कर लेती हैं जिस लक्ष्य के बारे में उसके परिवार वालों, मित्रों और रिश्तेदारों ने सपने में भी नहीं सोचा था, उन्हें में से एक बड़ा नाम सामने आया है सुलेश चौधरी का, चौधरी राजस्थान पुलिस प्रशासनिक सेवा की ऑफिसर है जिनको राजस्थान जाट समाज का गौरव माना जाता है और वर्तमान में जयपुर पुलिस कमिश्नरेट पश्चिम में अतिरिक्त उपआयुक्त पद पर पोस्टेड हैं तथा झुंझुनू जिले की उदयपुरवाटी की रहने वाली सुलेश चौधरी को राजस्थान पुलिस सेवा की पहली जाट महिला अधिकारी बनने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ, पुलिस विभाग में विभिन्न पदों पर रहते हुए इस महिला ऑफिसर ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए अपने परिवार, समाज और राजस्थान पुलिस का नाम रोशन किया, बड़ी बात यह है कि चौधरी के परिवार वालों ने यह सपने में भी नहीं सोचा था कि उनकी बेटी चुपचाप मेहनत और पढ़ाई करके उसे मुकाम तक पहुंच जाएगी जिसके बारे में ना तो उन्होंने कभी सोचा था और ना ही इसके लिए प्रयास किया था लेकिन अपनी बेटी के इस उत्कृष्ट प्रदर्शन और मेहनत को अब परिवार वाले भी सैल्यूट करते हैं और कहीं ना कहीं जब बेटी पुलिस की वर्दी में उनके सामने

खड़ी होती है तो उन्हें अपने उस निर्णय पर भी कहीं ना कहीं बेटी के सामने सर झुकाना पड़ जाता है जब उन्होंने अपनी बेटी की योग्यता और लगन को ठीक तरह से नहीं समझा लेकिन फिर भी जो मुकाम चौधरी ने हासिल किया उसका पूरा श्रेय अपने परिजनों, गुरुजनों और मित्रों को देती हैं चौधरी का कहना है कि बेटियों को बेटों की तुलना में कम महत्व देना किसी एक परिवार की समस्या नहीं है बल्कि भारतीय समाज में सदियों से चला आ रहा एक ऐसा प्रचलन है जिसको सिर्फ लड़कियां ही अपनी मेहनत और लगन से समाप्त कर सकती हैं इसलिए हर लड़की को अपनी योग्यता और अपनी मेहनत पर विश्वास करके स्कूल के जीवन में ही खुद को तरक्की के रास्ते पर चलने के लिए दिल से मेहनत करें तो फिर अपने आप ही रास्ते पर मौजूद कांटे दूर होते जाएंगे और उनकी जगह फूल खिलते जाएंगे चौधरी का यह भी कहना है कि आज जब हर क्षेत्र में लड़कियां लड़कों से अच्छा प्रदर्शन कर रही है तो फिर पुरुष प्रधान समाज को अपनी सोच बदलनी होगी और लड़कियों को लड़कों की तरह ज्यादा अवसर देने होंगे क्योंकि लड़का अपने जीवन में सिर्फ एक ही परिवार को संभलता है जबकि लड़कियां अपने पीहर और ससुराल दोनों के प्रति जिम्मेदारी और फर्ज को निभाती हैं इसलिए लड़कियों की तरक्की के बिना ना तो परिवार और समाज का समुचित विकास हो सकता है और ना ही देश का।

राज्य पुलिस सेवा की ट्रेनिंग में ही अपने अद्भुत कौशल से सबको कर दिया था चकित

राजस्थान पुलिस सेवा की ट्रेनिंग के दौरान ही सुरेश चौधरी ने अपने अद्भुत कौशल और प्रैक्टिस से ट्रेनिंग देने आने वाले बड़े से बड़े पुलिस अधिकारियों को चकित कर दिया था जिसकी वजह से उन्हें ट्रेनिंग के दौरान ही सम्मान भी दिया गया, अपने अदम्य साहस और बुद्धि कौशल से अपने सहपाठी ट्रेनिंग अधिकारियों से काफी आगे निकलती हुई नजर आई ट्रेनिंग के दौरान ही बड़े पुलिस अधिकारियों को यह महसूस हो गया था कि यह महिला अधिकारी समाज और पुलिस डिपार्टमेंट दोनों के लिए आगे बड़ा काम करने वाली है कुछ ऐसा ही हुआ नौकरी के दौरान अपनी जान को जोखिम में डालकर कई बार बड़े अपराधियों को पकड़ने में सफलता हासिल की, प्रदेश में बड़े-बड़े अपराधियों के गैंग के कई सदस्यों को पकड़ने में सफलता हासिल की और अपनी कुशल रणनीति के माध्यम से बड़े से बड़े अपराधियों के ताने-बाने को भी ध्वस्त किया जिसकी वजह से बड़ा सा बड़ा अपराधी भी इस महिला अधिकारी के नाम से विचलित सा हो जाता है द्य वर्तमान में जयपुर पश्चिम के अतिरिक्त उपा युक्त पद पर रहते हुए इस महिला अधिकारी ने कई बड़े मामलों का खुलासा किया है और अपने अधीन पुलिस स्टेशनों की रूटीन की कार्रवाई पर नियमित रूपसे अपडेट लेती रहती हैं, पुलिस स्टेशन में जनसुनवाई के कार्यक्रम को लेकर भी यह महिला अधिकारी काफी संवेदनशील रहती हैं तथा पुलिस स्टेशनों की बीट व्यवस्था को मजबूती प्रदान करने के लिए भी अपने अधीनस्थ पुलिस अधिकारियों को नियमित रूप से दिशा निर्देश देती रहती हैं ताकि इलाके में चोरी, डकैती, लूट, हत्या जैसी बड़ी वारदातें गठित नहीं हो इसके लिए इलाके में सुलेश चौधरी खुद भी रात्रि के समय हालातो का जाएगा लेने के लिए भ्रमण पर निकल पड़ती हैं।

परिवार वाले बनाना चाहते थे अध्यापक लेकिन बेटी खूंखार अपराधियों से लेना चाहती थी टककर

आमतौर पर ग्रामीण परिवेश में रहने वाले परिवार अपनी बेटियों को शिक्षक बनना ही ज्यादा चाहते हैं ताकि बेटी को सर्विस के दौरान ज्यादा परेशानी का सामना न करना पड़े और आराम से अपनी नौकरी करती रहे इसी तरह की तमन्ना सुलेश चौधरी के परिवार वालों की भी थी हालांकि सुलेश चौधरी के पिता गुजरात पुलिस में कार्यरत थे लेकिन फिर भी चौधरी के परिवार वाले यही चाहते थे कि उनकी बेटी शिक्षक बने इसी क्रम में उन्होंने सुलेश चौधरी को एसटीसी करवाने के लिए बीकानेर भेज दिया लेकिन सुलेश चौधरी ने एस टी सी के बजाय बीकॉम की पढ़ाई की और अच्छी प्रतिशत हासिल की ।और फिर घर वालों ने ड्ड.श्वस्त्र करवाने के लिए जयपुर भेजा तो सुलेश चौधरी ने फिलोसॉफी से एम ए करने को प्राथमिकता दी। जयपुर में रहने के दौरान फिलासफी में पोस्ट ग्रेजुएशन किया, पढ़ाई में शुरू से ही सुरेश चौधरी काफी अव्वल रही और बोर्ड एग्जाम में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन किया पढ़ाई में अव्वल रहने के बाद भी परिवार वाले सुरेश चौधरी के लिए हाई प्रोफाइल नौकरी की तमन्ना रखे हुए थी, हालांकि समाज में शिक्षक की नौकरी भी पूजनीय मानी जाती है लेकिन हाई प्रोफाइल नौकरी में पैसों के साथ रुतबा समाज में हर किसी की अलग पहचान बना देता है इसलिए सुलेश चौधरी को अपनी मेहनत, योग्यता पर पूरा विश्वास था और हमेशा तरक्की की राह पर चलने की इच्छा उन्हें आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करती रही जिसकी वजह से 1995 में जूनियर अकाउंटेंट परीक्षा में सफलता हासिल की और फिर 1999 में राजस्थान पुलिस सेवा परीक्षा में सफलता हासिल करके अपने परिजनों और रिश्तेदारों और मित्रों को सबसे बड़ा तोहफा दिया द्य बड़ी बात यह है कि राजस्थान प्रशासनिक सेवा परीक्षा की तैयारी के बारे में किसी से भी ज्यादा चर्चा नहीं की और चुपचाप पढ़ाई करती रही और मिशन को सामने रखकर अपने दम पर कठिन तैयारी करती रही जिस पर ईश्वर ने भी उनकी मेहनत को सैल्यूट किया और उन्हें उस पद तक पहुंचा दिया जिसकी वह हकदार थी।

अपराधियों में खौफ और आमजन अपने व्यवहार से काफी लोकप्रिय हैं यह महिला अधिकारी

राजस्थान पुलिस सेवा की नौकरी में आने के बाद जाट की बेटी ने बड़े से बड़े अपराधियों के दांत खट्टे किए, अब तक जहां-जहां पोस्टिंग रही वहां-वहां अपने कार्य क्षेत्र में बड़े से बड़े हिस्ट्रीशीटर और अपराधियों को जेल की सलाखों में पहुंचने का काम किया और कई बड़े मामलों का खुलासा करके अपने बुद्धि कौशल को भी साबित किया जिसकी वजह से पुलिस विभाग में भी ईमानदार और कर्मठ पुलिस अधिकारियों में सुलेश चौधरी की गिनती होती है इतना ही नहीं पुलिस स्टेशन में चाहे पीड़ित की ओर से मामला दर्ज करवाने की बात हो या फिर मामलों की ठीक तरह से जांच करने का विषय हो या फिर मामलों की जांच में गति देने का मामला हो हर विषय पर सुलेश चौधरी का पूरा फोकस रहता है इसकी वजह से उनके अधीनस्थ पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों में भी ठीक तरह से काम करने का दबाव बना रहता है जिसकी वजह से पुलिस की कार्यशैली में क्रांतिकारी बदलाव आना भी स्वाभाविक है यही वजह है सुलेश चौधरी जहां-जहां अब तक कार्यरत रही आम जन में भी काफी लोकप्रिय रही क्योंकि आमजन को तुरंत न्याय मिले और आमजन के साथ इंसाफ हो इसी मकसद के साथ यह महिला अधिकारी अपनी ड्यूटी को अब तक पूरी ईमानदारी से निभाती आ रही हैं, इनकी कार्यशैली को देखकर किसी भी राजनीतिक पार्टी का कोई भी नेता किसी भी मामले में बीच में अड़चन पैदा भी नहीं करता और ना ही किसी के पॉलीटिकल प्रेशर में आकर किसी भी मामले में यह महिला अधिकारी कोई निर्णय लेती हैं सिर्फ अपने विवेक, न्याय संगत तर्क के आधारपर निर्णय लेती है जिसकी वजह से पुलिस डिपार्टमेंट में उन्हें एक अच्छे अधिकारी के रूप में माना जाता है।

ऑपरेशन सिंदूर के बारे में क्या कहती है जनता?

ऑपरेशन सिंदूर: बहादुरी का प्रतिशोध

–ललित राठौड़, अध्यक्ष राष्ट्रीय श्रीराम सेना

पहलगांव में हुए आतंकी हमले ने देश को झकझोर दिया। निर्दोष हिंदू यात्रियों पर सिर्फ धर्म के नाम पर बरसाई गई गोलियों ने इंसानियत को शर्मसार कर दिया। एक बच्चा जो अपने पिता के साथ कश्मीर घूमने आया था, अब उन्हें तिरंगे में लिपटा देखकर लौटा। आतंकियों का संदेश था–'मोदी से कहना वादियों का हाल।'

लेकिन हिंदुस्तान चुप नहीं बैठा। सरकार ने इसका जवाब 'ऑपरेशन सिंदूर' से दिया। सेना ने जल, थल और वायु तीनों मोर्चों पर मिलकर आतंक के हर ठिकाने को नेस्तनाबूद कर दिया। जिन हाथों ने बेकसूरों का खून बहाया, उन्हें उसी मिट्टी में सिंदूर बना कर मिला दिया।

ऑपरेशन सिंदूर सिर्फ एक सैन्य कार्रवाई नहीं, यह संदेश था कि भारत सहन कर सकता है, पर जवाब देना भी जानता है। हम हर बार उठेंगे, हर वार का प्रतिकार करेंगे–क्योंकि हम हिन्दुस्तानी हैं।

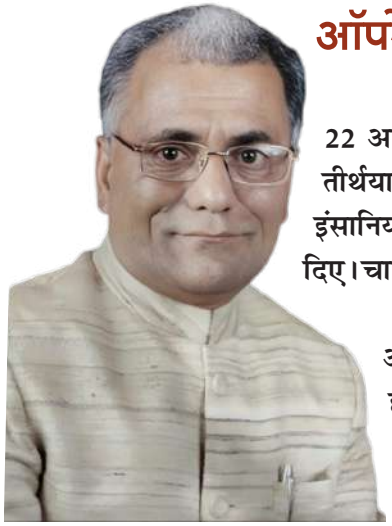

ऑपरेशन सिंदूर: शौर्य का प्रतीक और जनगौरव का संकल्प

–उमेश गोटेवाला, सदस्य राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी

22 अप्रैल 2025 को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले में निर्दोष भारतीय तीर्थयात्रियों को मौत के घाट उतार दिया गया। पाकिस्तान समर्थित आतंकियों ने न केवल इंसानियत को शर्मसार किया बल्कि भारत की आंतरिक सुरक्षा पर गंभीर सवाल भी खड़े कर दिए। चार आतंकी कैसे इतने बड़े जनसमूह पर हमला कर फरार हो गए–यह चौंकाने वाला है।

सरकार की चुप्पी और दौरा निरस्त करने जैसे फैसलों से आमजन के मन में आक्रोश और असुरक्षा की भावना गहराई। यह केवल सैनिक बलिदान का नहीं, नागरिक भरोसे के हनन का विषय बन गया। लेकिन इसी घड़ी भारत की सेना ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के ज़रिए दुश्मनों को मुंहतोड़ जवाब दिया। हमारी जल, थल, वायु सेनाओं ने मिलकर आतंक के अड्डों को तबाह कर दिया। ऑपरेशन सिंदूर आज हिन्दुस्तानी ताकत और प्रतिशोध का प्रतीक बन चुका है। लेकिन दुखद यह है कि इसी समय जयपुर में एक विधायक द्वारा राष्ट्रीय ध्वज का अपमान हुआ। यह घटना न केवल तिरंगे का अनादर है, बल्कि सेना के बलिदान और देशभक्ति की आत्मा को चोट पहुंचाने जैसा है। ऐसे में जब राजनेता और अधिकारी चुप हैं, तब देश की जनता और मीडिया का दायित्व है कि वे राष्ट्रध्वज और 'सिंदूर' की मर्यादा की रक्षा करें।

यह समय है न्यायपालिका और महामहिम राष्ट्रपति से अपेक्षा करने का कि वे तिरंगे के सम्मान और ऑपरेशन सिंदूर की गरिमा को संविधानिक संरक्षण प्रदान करें।

लगातार.....

शांति के पुजारी भारत का आतंक पर सर्जिकल वार- ऑपरेशन सिंदूर

-शिल्पी सैनी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भारतीय ओबीसी महासभा

जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले में निर्दोष नागरिकों की मौत के बाद भारत ने 14 दिन के भीतर इसका मुंह तोड़ जवाब दिया। भारतीय वायु सेवा ने 6-7 मई 2025 की रात को ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान और POK में जो आतंकी ठिकानों पर एयर स्ट्राइक की। हमारे देश की यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में की गई इस जवाबी कार्रवाई को ऑपरेशन सिंदूर नाम दिया गया । भारत द्वारा इस एयर स्ट्राइक के बाद रक्षा मंत्रालय की ओर से जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया कि ऑपरेशन सिंदूर का मकसद सिर्फ आतंकी ठिकानों को निशाना बनाना था। भारत हमेशा से शांतिप्रिय देश रहा है। इस हमले का उद्देश्य पड़ोसी देश से झगड़े के मकसद से नहीं है अपितु भारत के खिलाफ आतंकवादी गतिविधियों को नियंत्रित करने वाले आतंकवादी ढांचे को नष्ट करना था, इसी को ऑपरेशन सिंदूर नाम दिया गया। इससे पाकिस्तान को यह बात स्पष्ट हो गई है कि अगर भारत को छेड़ा गया तो उसे छोड़ा नहीं जाएगा। क्योंकि अब भारत सुरक्षित हाथों में है और अगर किसी भी तरीके से भारत को नुकसान पहुंचाया गया तो इसका मुंह तोड़ जवाब भविष्य में फिर से दिया जाएगा।

मिशन सिंदूर 2025: आतंक के विरूद्ध भारत का निर्णायक प्रतिशोध

-पंकज ओझा, अतिरिक्त खाद्य आयुक्त, RAS

'मिशन सिंदूर' मई 2025 में भारत द्वारा पाकिस्तान पर की गई एक गुप्त, सीमित लेकिन प्रभावशाली सैन्य कार्रवाई थी, जिसका उद्देश्य पहलगाम हमले का प्रतिशोध लेना और आतंकवाद को निर्णायक संदेश देना था। 22 अप्रैल को पाकिस्तान समर्थित आतंकियों ने कश्मीर में हिंदू तीर्थयात्रियों की पहचान कर हत्या की। इसका जवाब भारत ने 6 से 11 मई तक चली ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से दिया।

इस मिशन में भारतीय वायुसेना, थलसेना और नौसेना की समन्वित शक्ति का प्रदर्शन हुआ। राफेल से SCALP मिसाइलें, ब्रह्मोस, हैमर बम, कमिकेज ड्रोन और AI- संचालित सर्विलांस सिस्टम की मदद से POK और सिंध क्षेत्र में 9 बड़े आतंकी अड्डों को तबाह किया गया। जैश-ए-मोहम्मद और लश्कर के कई प्रमुख ठिकानों सहित मदरसों की आड़ में चल रहे ट्रेनिंग कैंप पूरी तरह नष्ट हुए। मसूद अजहर के करीबियों सहित 80 से अधिक आतंकवादी मारे गए।

भारत की रणनीति सर्जिकल स्ट्राइक से आगे बढ़कर 'सर्जिकल स्ट्राइक प्लस' रही—जिसमें रात के अंधेरे में सटीकता से लक्ष्य साधे गए। सैन्य ब्रीफिंग दो महिला अफसरों—कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह—द्वारा कराकर भारत ने महिलाओं की भूमिका और मनोबल का नया अध्याय लिखा। इस ऑपरेशन के माध्यम से भारत ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई। अमेरिका, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया सहित कई देशों ने भारत के आत्मरक्षा अधिकार को उचित ठहराया, जबकि पाकिस्तान अलग-थलग पड़ गया। मिशन सिंदूर ने साबित कर दिया कि भारत अब केवल सहन नहीं करता, बल्कि निर्णायक कार्रवाई के लिए तैयार है। यह भारत की सैन्य आत्मनिर्भरता, तकनीकी श्रेष्ठता और राष्ट्रीय अस्मिता की दृढ़ रक्षा का प्रतीक बन गया। यह ऑपरेशन भारतीय सुरक्षा नीति में 'न्यू नॉर्मल' का आरंभ है—जिसमें भारत पहले से कहीं अधिक आत्मविश्वासी, सक्रिय और सशक्त रूप में उभरा है।

लगातार.....

सिंदूर नहीं, संकल्प था– 'मिशन सिंदूर' भारत की आत्मा की गर्जना

7 मई 2025, वो दिन जब भारत ने इतिहास रच दिया – पर यह कोई युद्ध नहीं था। यह एक संदेश था। यह एक राष्ट्र की ओर से उन बहनों, उन माताओं, उन बेटियों को दिया गया उत्तर था जिनका आँचल आतंक के साये में रौंदा गया। यह अभियान पाकिस्तान की ज़मीन पर नहीं, बल्कि भारत की आत्मा पर हुए प्रहार का उत्तर था।

'मिशन सिंदूर' केवल सैन्य कार्रवाई नहीं थी – यह एक नारी के आत्म-सम्मान की रक्षा में उठाया गया वीरता का संकल्प था। जहाँ दुश्मन ने मासूमों पर हमला किया, वहीं भारत ने सटीक वार से आतंक के अड्डों को ध्वस्त कर दिया। परंतु इस बार भारत ने अपने शस्त्रों के पीछे माँ के सिंदूर की महिमा को रखा ङ्क वह सिंदूर जो किसी महिला की मांग में नहीं, बल्कि राष्ट्र की रगों में बह रहा था।

इस मिशन में भारतीय वायुसेना और नौसेना ने आतंक के केंद्रों को एक-एक कर चिन्हित किया और उन्हें नष्ट कर दिया – लेकिन उनकी हर बमबारी में बारूद से ज़्यादा भावना थी। यह वह क्रांति थी जिसमें एक सैनिक ने गोली चलाने से पहले माँ को याद किया, बहन के आँसू महसूस किए और बेटी के भविष्य की सुरक्षा को गले लगाया।

प्रधानमंत्री ने जब कहा – 'यह ऑपरेशन नफ़रत के खिलाफ नहीं, अपमान के खिलाफ है; यह युद्ध नहीं, इज़्ज़त का उत्तर है' – तब पूरे देश ने जाना कि सिंदूर अब एक प्रतीक नहीं, एक प्रतिज्ञा बन चुका है। भारत ने साबित कर दिया कि जब नारी को छेड़ा जाता है, तब वह देवी नहीं – शक्ति बनकर प्रकट होती है। और जब एक राष्ट्र की नारी के सम्मान पर कोई आंच आती है, तो वह राष्ट्र केवल जवाब नहीं देता – इतिहास लिख देता है।

लोकेश सिंह
निदेशक इमर्जिंग हेल्थकेयर

'मिशन सिंदूर' आने वाली पीढ़ियों को यह याद दिलाएगा कि भारत वह भूमि है, जहाँ नारी को देवी माना जाता है, और देवी की रक्षा के लिए संपूर्ण देवत्व भी शस्त्र उठा लेता है। यह केवल एक सैन्य कार्यवाही नहीं थी, यह भारत की आत्मा का शुद्धिकरण था – रक्त से नहीं, सिंदूर से।

भारत की हर नारी को प्रणाम – क्योंकि जब वो मुस्कुराती है, तो राष्ट्र खिलता है; और जब उसकी आंखें नम होती हैं, तो इतिहास करवट लेता है।

सिंदूर के हर कण में सृजन है और उसके अपमान पर संहार भी
'हमारे लहू में खून नहीं.... सिंदूर बहता है'

यह वाक्य केवल शब्द नहीं था– यह उस दिन भारत के हर सिपाही के सीने में जलती लौ बन गया, जब उन्होंने 'मिशन सिंदूर' के नाम पर मातृभूमि की अस्मिता की रक्षा के लिए अपने प्राणों को हथेली पर रख लिया।

बालिका शिक्षा: एक बेटी पढ़ेगी, तभी तो देश बढ़ेगा

बालिका शिक्षा सिर्फ एक अधिकार नहीं है, यह एक राष्ट्र के भविष्य की नींव है। जब एक लड़की स्कूल जाती है, तो वह केवल अक्षर नहीं सीखती– वह अपने आत्म-सम्मान, आत्मनिर्भरता और अस्तित्व को नई दिशा देती है। वह एक बेहतर समाज, स्वस्थ परिवार और समृद्ध देश की शिल्पकार बनती है।

भारत की बेटियाँ आज हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं – चाहे वह अंतरिक्ष हो, सेना, विज्ञान, खेल, चिकित्सा या व्यवसाय। कल्पना चावला से लेकर पीवी सिंधु तक, और कोट के भीतर फैसले सुनाती न्यायाधीशों से लेकर गाँव की पंचायत तक बेटियाँ आज 'बेटा' नहीं बनना चाहतीं – वे गर्व से 'बेटी' बनकर ही इतिहास लिख रही हैं। फिर भी, आज भी कई क्षेत्रों में बेटियाँ शिक्षा से वंचित हैं। कभी गरीबी, कभी परंपरा, और कभी सोच की दीवारें उनके स्कूल तक जाने के रास्ते को रोक देती हैं। हमें समझना होगा कि एक अशिक्षित लड़की सिर्फ खुद का ही नहीं, एक पूरे समाज का सपना अधूरा छोड़ देती है।

'अगर आप एक बेटे को पढ़ाते हैं, तो आप एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं, लेकिन अगर आप एक बेटी को पढ़ाते हैं, तो आप एक पीढ़ी को शिक्षित करते हैं।

नितिन बुडानिया
निदेशक इमर्जिंग हेल्थकेयर

सरकार की योजनाएं जैसे 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ', सुकन्या समृद्धि योजना, और मुफ्त स्कूल शिक्षा ने बदलाव की शुरुआत की है– पर असली परिवर्तन तब आएगा जब हर माता-पिता अपनी बेटी को किताबों के साथ पालने में झुलाएंगे।

जयपुर राजस्थान की गुलाबी नगरी

वे पर्यटन स्थल जिन्हें दुनिया भर के लोग करते हैं सैल्यूट, जिन्हें देखते ही देश-विदेश के पर्यटक हो जाते हैं रोमांचित

जयपुर दुनिया का क्यों है खूबसूरत शहर! पर्यटन क्यों दौड़े-दौड़े चले आते हैं जयपुर

जयपुर। आखिर देश और दुनिया के लोग गुलाबी शहर जयपुर को देखने के लिए दौड़े -दौड़े क्यों चले आते हैं, सात समंदर पार बैठे दुनिया भर के मुल्कों के लोगों के दिलों में जयपुर ने अपना अलग मुकाम क्यों बनाया, जयपुर में तो किसी समुद्र के किनारे बसा है और ना ही यह किसी बड़ी नदी के किनारे फिर भी देश-विदेश के पर्यटकों में जयपुर को देखने की ललक क्यों बनी रहती है, हिंदुस्तान की सैर करने आने वाला विदेशी पर्यटक आखिर जयपुर को अपनी पहली पसंद क्यों बताता है, इन सभी बड़े सवालों के जवाब हर कोई जानना चाहता है, जयपुर टाइम्स मासिक पत्रिका के लाखों पाठक भी यह जानने को बेहद आतुर है कि जयपुर में आखिर ऐसा क्या है जो भारत ही नहीं बल्कि दुनिया के कोने-कोने में बैठे लोगों को साल भर अपनी ओर खींच कर लेआता है, इस महत्वपूर्ण स्टोरी में हम पाठकों को यह बताने जा रहे हैं कि जयपुर विश्व पर्यटन मानचित्र पर शीर्ष पर क्यों है, क्यों दुनिया के लोग जयपुर को इतनी मोहब्बत करते हैं, वैसे जयपुर ऐतिहासिक शहर है और यहां के कई प्रमुख पर्यटन स्थलों को यूनेस्को ने वर्ल्ड हेरिटेज सूची में भी जगह दी हुई है, जयपुर सिर्फ पर्यटन स्थलों को लेकर ही लोकप्रिय नहीं है बल्कि मूर्ति, कला हैंडीक्राफ्ट, व्यवस्थित बसावट, हेरिटेज लुक और मॉडर्न लुक का अद्भुत संगम, मेट्रो ट्रेन, बड़े-बड़े शॉपिंग मॉल बड़े-बड़े दर्शनीय अत्यधिक मनोरंजन साधनों से युक्त पार्क, प्राचीन किले, बावड़िया, स्मारक, ऐतिहासिक प्राचीन मंदिर,महल, प्राचीन किलों और महलों की दीवारों, स्तंभों इत्यादि पर लाल बलुआ पत्थर, मुगलकालीन, यूरोपीय शैली, राजपूत सभ्यता की छाप देखने को मिलती है, वेशभूषा, लोक संगीत, संस्कृति, घूमर नृत्य ऐतिहासिक मेले इत्यादि जयपुर की पहचान बने हुए हैं लेकिन आज इस विशेष आर्टिकल में हम जयपुर के कुछ चुनिंदा पर्यटन स्थलों के बारे में आपको संक्षिप्त जानकारी देंगे जिन्हें देखने के लिए दुनिया भर के लोग काफी आतुर रहते हैं, इस आर्टिकल में हम यह भी बताएंगे कि इन पर्यटन स्थलों को देखने के लिए आपको कितनी फीस अदा करनी होगी और कौन सा महीना आपके लिए इन पर्यटन स्थलों को देखने के लिए ज्यादा अच्छा रहेगा इसके बारे में बताएंगे।

हवा महल

जयपुर की सांस लेती हुई विरासत

जयपुर में बड़ी चौपड़ पर स्थित हवा महल का निर्माण जयपुर राजघराने के महाराजा सवाई प्रताप सिंह ने 1799 ईस्वी में करवाया था। इस खूबसूरत पर्यटन स्थल का निर्माण रॉयल सिटी पैलेस के विस्तार के रूप में करवाया गया था और हवा महल के अगले हिस्से में प्रवेश का दरवाजा नहीं बनाया गया है बल्कि पिछले हिस्से में बने दरवाजे से हवा महल में प्रवेश किया जाता है, यह पांच मंजिला है और लाल बलवा पत्थर, जालीदार खिड़कियां और खूबसूरती से बारीकी से नक्काशी इसकी खूबसूरती में अद्भुत चार चांद लगा देती हैं, इसकी डिजाइन लालचंद उस्ताद ने बनाई थी और हवा महल में 953 छोटी खिड़कियां हैं और इन खिड़कियों में छोटे छेद हैं जिनसे ठंडी ठंडी हवा तो आती है ही इसके अलावा इन छेद से जयपुर शहरके बाहर का नजारा देखा जाता है, हवा महल को पैलेस ऑफ विंड भी कहते हैं और यह करीब 87 फीट ऊंचा है तथा हवा महल की आकृति भगवान श्री कृष्ण के मुकुट की तरह तैयार की गई क्योंकि महाराजा प्रताप सिंह भगवान श्री कृष्ण के अनन्य भक्त थे और हवा महल में भगवान श्री कृष्ण का भी मंदिर है, कहा जाता है कि प्राचीन काल में राजपूत सभ्यता में पर्दा प्रथा का प्रचलन था और जयपुर राजघराने के शाही परिवार में मौजूद महिलाओं को जयपुर शहर के बाहरी दृश्य की झलक दिखाने के लिए, कई तरह के मेले, त्योहार इत्यादि के दर्शन राजशाही परिवार की महिलाएं इन हवा महल की खिड़कियों में बने छेद से किया करती थी, हवा महल का शुल्क भारतीय पर्यटक के लिए ₹50 प्रति पर्यटक तथा विदेशी पर्यटकों के लिए 200 रुपए प्रति पर्यटक है तथा 5 साल तक के बच्चों के लिए टिकट लागू नहीं है इसके अलावा देसी और विदेशी पर्यटक छात्रों को टिकट में रियायत भी दी जाती है, हवा महल का भ्रमण अक्टूबर से मार्च के महीना के बीच में करना ज्यादा अच्छा रहता है।

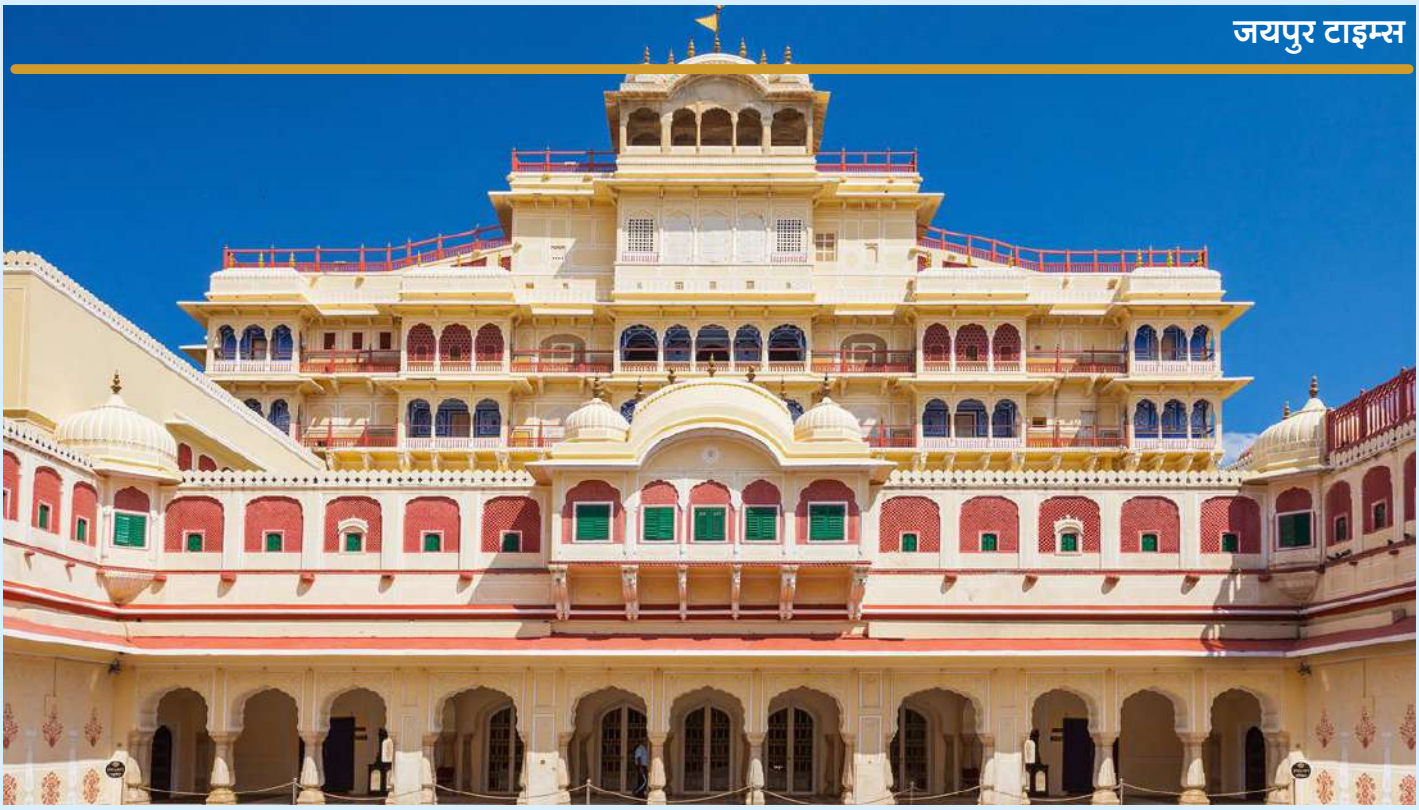

जयपुर के गौरवशाली अतीत की झलक है सिटी पैलेस

हवा महल के नजदीकी सिटी पैलेस मौजूद है द्य सिटी पैलेस की स्थापना 1727 में जयपुर राजघराने के महाराजा जयसिंह द्वितीय ने की थी और यह 1732 ईस्वी में बनकर तैयार हो गया था, यह शुरू से ही शाही परिवार के रहने का स्थान रहा है, इसकी डिजाइन विद्याधर भट्टाचार्य और सर सैमुअल जब ने तैयार की थी, सिटी पैलेस के निर्माण में लाल बलुआ पत्थर, ऐतिहासिक सोने के पानी से सजी दीवारों की सजावट, भव्य स्तंभ, जाली के काम, बेहतरीन नक्काशी, क्रिस्टल झुमरू और संगमरमर सिटी पैलेस की खूबसूरती को बढ़ा देती है। सिटी पैलेस के तीन दरवाजे हैं त्रिपोलिया गेट वीरेंद्र पाल और उदयपुर द्य सिटी पैलेस की आंतरिक खूबसूरती देखते ही बनती है जिसमें एक से एक खूबसूरत बिल्डिंग हैं जिनमें प्रमुख रूप से चंद्र महल, मुबारक महल, बग्गी खाना, महारानी पैलेस, शस्त्रागार दीवानी ए खास, दीवाने ए आम, गोविंद देव जी मंदिर इत्यादि हैं द्य सिटी पैलेस में जयपुर राजघराने के पूर्व शासको के फोटो, कपड़े, शस्त्र, पूर्व शासको की बग्गी, रथ इत्यादि पर्यटकों को दिखाने के लिए रखी गई है। सिटी पैलेस की टिकट भारतीय पर्यटकों के लिए ₹200 और विदेशी पर्यटकों के लिए ₹500 तथा भारतीय और विदेशी पर्यटक छात्रों के लिए टिकट में रियायत की सुविधा भी है तथा 5 साल तक के बच्चों के लिए टिकट लागू नहीं है सिटी पैलेस सुबह 9:30 से 5:00 बजे तक और रात को 7 से 10 बजे तक दर्शकों के लिए खुला रहता है सिटी पैलेस को देखने के लिए अक्टूबर से मार्च महीने का महीना ज्याद अच्छा रहता है।

आमेर का किला: राजस्थानी वैभव और फिल्मी दुनिया की पहली पसंद

अरावली की पहाड़ियों पर मौजूद आमेर का किला देश और दुनिया भर के लोगों की पहली पसंद तो है ही इसके अलावा हिंदी फिल्मों के निर्माता और निर्देशों की भी यह पहली पसंद कई सालों से रहा है यहां पर बड़े-बड़े बजट की हर बड़े निर्माता और निर्देशों की फिल्मों की शूटिंग होती रही है चाहे बाजीराव मस्तानी, जोधा अकबर जैसी फिल्मों की शूटिंग भी यहां हुई है, इसके लिए का निर्माण 1592 ईस्वी में महाराजा मानसिंह ने करवाना शुरू किया था और यह किला 16वीं शताब्दी के अंत में महाराजा जयसिंह द्वितीय के शासनकाल में बनकर तैयार हुआ, इसके लिए के निर्माण में करीब 100 साल लगे, यह विशाल किला है, किले के नीचे एक झील है जिसमें पानी भरा रहता है जिसकी वजह से इस किले की खूबसूरती और बढ़ जाती है, किले के नीचे जो झील है, झील में ही एक बिल्डिंग बनी हुई है जिसमें लाइट एंड साउंड शो आयोजित किया जाता है। इस कार्यक्रम में पाप और लोक संगीत जैसे कार्यक्रम कलाकारों की ओर से प्रस्तुत किए जाते हैं जो रात के समय आयोजित होता है इसके लिए बाकायदा पर्यटकों को फीस चुकानी पड़ती है और पहले बुकिंग करवाई जाती है, इस किले में शीश महल काफी दर्शनीय है जिसकी छत की दीवारों पर रंगीन कांच और हीरे जड़े हुए हैं जो लाइट में जगमगाते हैं, किले में सुख मंदिर , शिला माता का मंदिर, गणेश पोल, सूरजपोल, जलेबी चौक, जय महल ,जीना महल, दीवान ए आम, किले में ही झरना और झील भी है। आमेर किले से जयगढ़ किले तक सुरंग है जिन्हें फिलहाल बंद कर दिया गया है युद्ध के समय शाही परिवार के लोगों को इस सुरंग के माध्यम से ही सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया जाता था। यह प्राचीन विशाल ऐतिहासिक किला स्थापत्य कला का अद्भुत उदाहरण है इसमें सफेद संगमरमर और गुलाब बलवा पत्रों का तथा हल्के पीले पत्थर का प्रयोग निर्माण में किया गया। जयपुर आने वाले 100 में से 80% पर्यटक इस फोर्ट को देखने के लिए जरूर आते हैं पूर्व में आमेर जयपुर की राजधानी थी और शाही परिवार यहीं पर रहता था लेकिन बाद में सिटी पैलेस के निर्माण के बाद शाही परिवार सिटी पैलेस में रहने लग गया। आमेर किले के लिए टिकट की दर भारतीय पर्यटकों के लिए ₹50 और विदेशी पर्यटकों के लिए ₹200 तथा भारतीय और विदेशी पर्यटक छात्रों के लिए टिकट में रियायत भी सुनिश्चित है तथा 5 साल तक के बच्चों के लिए टिकट लागू नहीं है और सुबह 9:30 से 5:00 तक यह पर्यटन स्थल खुला रहता है तथा इस पर्यटन स्थल को देखने के लिए अगस्त से मार्च महीने का समय ज्यादा उपयुक्त रहता है।

जल महल

झील की गोद में छिपा स्थापत्य का चमत्कार

अरावली की पहाड़ियों और नाहरगढ़ की पहाड़ियों के तलहटी में स्थित जल महल पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बिंदु है द्य यह पांच मंजिला अद्भुत भवन मानसागर झील के बीचो-बीच स्थित है इस भवन के चार मंजिल अपनी स्थापना के समय कई सालों से पानी में डूबे हुए हैं और एक मंजिल झील के ऊपरी सतह पर बना हुआ है जल महल का निर्माण महाराजा जयसिंह ने करवाया था हालांकि इस मानसागर झील की स्थापना आमेर के राजा ने उस समय करवाया था जब 15वीं शताब्दी में भीषण अकाल पड़ा था। उस समय नाहरगढ़ की पहाड़ियों से निकलने वाले पानी को एकत्रित करने के लिए इस झील को बनाया गया राजा मानसिंह ने इस झील को व्यवस्थित तरीके से नया आकार दिया बाद में जयपुर के महाराजा सवाई जय सिंह ने झील के बीचो-बीच पांच मंजिला भवन बनाया जिसे जल महल भी कहा जाता है आईबॉल भी कहा जाता है और रोमांटिक महल भी कहा जाता है बताया गया है कि शाही परिवार के सदस्य गर्मी के दिनों में इस झील में नाव से भ्रमण किया करते थे और महल में बैठकर ठंडी हवा का लुत्फ उठाया करते थे शेर सपाटे के लिए इस महल को बनाया गया द्य बड़ी बात यह है कि सैकड़ो सालों से पानी में डूबे रहने के बावजूद भी इस महल की दीवारों को और पूरे महल को किसी भी तरह का कोई नुकसान नहीं पहुंचा है जो इस बात को दर्शाता है कि प्राचीन काल में कारीगर और भवन निर्माण में उपयोग लाई जाने वाली सामग्री के गुणवत्ता कितनी अच्छी हुआ करती थी द्य बाद में जल महल की पाल को नया लुक दिया गया अब यहां पर नगर निगम की ओर से साप्ताहिक हाट बाजार भी लगता है तथा इस है बाजार में जयपुर की प्रसिद्ध चीज बिकती है, सेल्फी लेने का यह अद्भुत स्थान है तथा यहां पर आकर पर्यटक ठीक उसी तरह से महसूस करता है जैसे मुंबई में समुद्र का किनारा हो इसलिए यहां पर देश और विदेश के पर्यटक बड़ी संख्या में नजर आते हैं। जल महल को देखने के लिए झील के अंदर जाने की इजाजत नहीं है झील के किनारे जल महल की पाल से ही इसे देखा जा सकता है इसके लिए किसी भी तरह का कोई शुल्क भी नहीं है बीच में पहले इस झील में पर्यटकों को नाव से घुमाया भी जाता था लेकिन फिलहाल नाव का झील में संचालन नहीं हो रहा है। जल महल देखने में बहुत ही खूबसूरत लगता है और पानी के बीचो-बीच रहने से कई देर तक पर्यटक इसको निहारत रहती हैं तथा झील में देश-विदेश के सैकड़ो की तादाद में दुर्लभ पक्षी भी जगह-जगह विचरण करते हुए नजर आते हैं जिसकी वजह से झील और जल महल का नजारा काफी आकर्षक लगता है।

जयगढ़ किला

शौर्य, स्थापत्य और सुरक्षात्मक रणनीति का जीता-जागता उदाहरण

अरावली की पहाड़ियों में स्थित एतिहासिक विशाल किला जयगढ़ 18 वीं सदी की याद को ताजा करता है जयगढ़ का निर्माण जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय ने करवाया था द्य 1729 ई से इस किले का निर्माण शुरू हुआ जो 1732 तक अपने अंतिम रूप तक पहुंचा। जयगढ़ में दुनिया की सबसे बड़ी तोप अब भी मौजूद है जो करीब 50 टन वजन की है तथा इसमें 8 मीटर लंबे बैरल रखने की सुविधा है। जयगढ़ में दसवीं शताब्दी के राम हरिहर मंदिर और 12वीं शताब्दी के काल भैरव मंदिर भी मौजूद हैं तथा जयगढ़ की लंबाई उत्तर से दक्षिण तक 2.6 किलोमीटर तथा चौड़ाई 1.5 किलोमीटर है इस मंदिर की लंबाई उत्तर से दक्षिण तक 2.6 किलोमीटर तथा चौड़ाई 1.5 किलोमीटर है जयगढ़ फोर्ट आमेर किले से 400 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है और इसकी डिजाइन वास्तुकार विद्याधर ने तैयार की थी, इस किले की सबसे उंचे पॉइंट पर दिया बुर्ज है जो लगभग सात मंजिल पर स्थित है जयगढ़ में लक्ष्मी विलास, ललित मंदिर, विलास मंदिर, आराम मंदिर आकर्षक बिल्डिंग के अलग-अलग हिस्से में बनी हुई है, जयगढ़ के दो दरवाजे हैं दक्षिण और पूर्व में स्थित है, जयगढ़ किले का संचालन पहले धारा शिकोह किया करता था लेकिन बाद में औरंगजेब की पराजय के बाद इसका संचालन महाराज जय सिंह द्वितीय की ओर से किया जाने लगा। जयगढ़ किले में राजाओं के पुराने कपड़े, पांडुलिपियों, आभूषण, प्राचीन कलाकृतियों इत्यादि पर्यटकों को के देखने के लिए रखी हुई हैं, जयगढ़ किले का उपयोग राजाओं की फौज के लिए ही सुरक्षित रखा गया था यहां पर खोज अपना गोला बारूद हथियार इत्यादि के लिए यहां पर भंडारण की सुविधा थी राजाओं की ओर से जयगढ़ किले का उपयोग शाही परिवार के सदस्यों की सुरक्षा के लिए भी सुनिश्चित किया गया था आमेर किले से जयगढ़ फोर्ट तक सुरंग बनी हुई है युद्ध के समय इन सुरंग से ही शाही परिवार की महिलाओं और सदस्यों को सुरक्षित स्थान तक पहुंचाया जाता था। जयगढ़ किले को पहले विजय किला के रूप में भी जाना जाता था द्य जयगढ़ किले में सागर और तालाब भी मौजूद है। जयगढ़ किले की टिकट भारतीय पर्यटकों के लिए डेढ़ सौ रुपए और विदेशी पर्यटकों के लिए ₹200 निश्चित है तथा देसी और विदेशी पर्यटक छात्रों को टिकट में रियायत की व्यवस्था भी है और 5 साल तक के बच्चों के लिए टिकट लागू नहीं है। जयगढ़ किले तक पहाड़ियों में सड़क बनी हुई है, इस सड़क से गाड़ियां किले तक पहुंच सकती है।

नाहरगढ़ किला

रहस्य, रोमांच और राजशाही वैभव का अद्भुत संगम

नाहरगढ़ का किला भी काफी विशाल और ऐतिहासिक है तथा जयगढ़ से नाहरगढ़ किले तक जाने के लिए सड़क भी बनी हुई है, नाहरगढ़ किले का निर्माण 1734 में महाराज जय सिंह द्वितीय की ओर से शुरू करवाया गया बाद में 1868 में महाराज राम सिंह और 1880 में महाराजा माधव सिंह के कार्यकाल तक संपादित हुआ, कहा जाता है कि इस किले के निर्माण में काफी व्यवधान आता था एक प्रेत आत्मा के प्रकट होने से कारीगर मौके से भाग जाते थे बताया जाता है कि जिस स्थान पर इस किले का निर्माण किया जाता था उस स्थान पर नाहर सिंह भोमिया की प्रेत आत्मा रहती थी क्योंकि यह स्थान राजकुमार राठौर की संपत्ति थी इसलिए किले के निर्माण काम की वजह से नाहर सिंह भोमिया की आत्मा को काफी परेशानी होती थी जिसकी वजह से प्रेत आत्मा को देखकर कारीगर मौके से भाग जाते थे बाद में महाराज जय सिंह ने प्रेत आत्मा को संतुष्ट करने के लिए किले में ही राठौर राजकुमार के लिए छोटा भवन बनाया तब जाकर किले का निर्माण कार्य ठीक तरह से संपादित हो पाया। नाहरगढ़, जयगढ़ यह दोनों ही किले हिंदी फिल्मों की शूटिंग के लिए भी शुरू से ही पसंद के स्थान रहे हैं यहां पर कई फिल्मों की शूटिंग हुई है और अब भी समय-समय पर ऐड फिल्म और हिंदी फिल्मों की शूटिंग है होती रहती है, नाहरगढ़ किले में माधवेंद्र महल और मर्दानी महल मौजूद हैं यह महल शाही परिवार के राजा और रानियां के लिए सुरक्षित थे, नाहरगढ़ किले की टिकट की रेट भारतीय पर्यटकों के लिए ₹50 और विदेशी पर्यटकों के लिए ₹200 निर्धारित की हुई है तथा भारतीय और विदेशी पर्यटक छात्रों के लिए टिकट की दर में कटौती भी सुनिश्चित की गई है द्य जयगढ़ किले की तरह ही नाहरगढ़ किले से गुलाबी शहर को एक नजर में ही देखा जा सकता है।

जंतर-मंतर

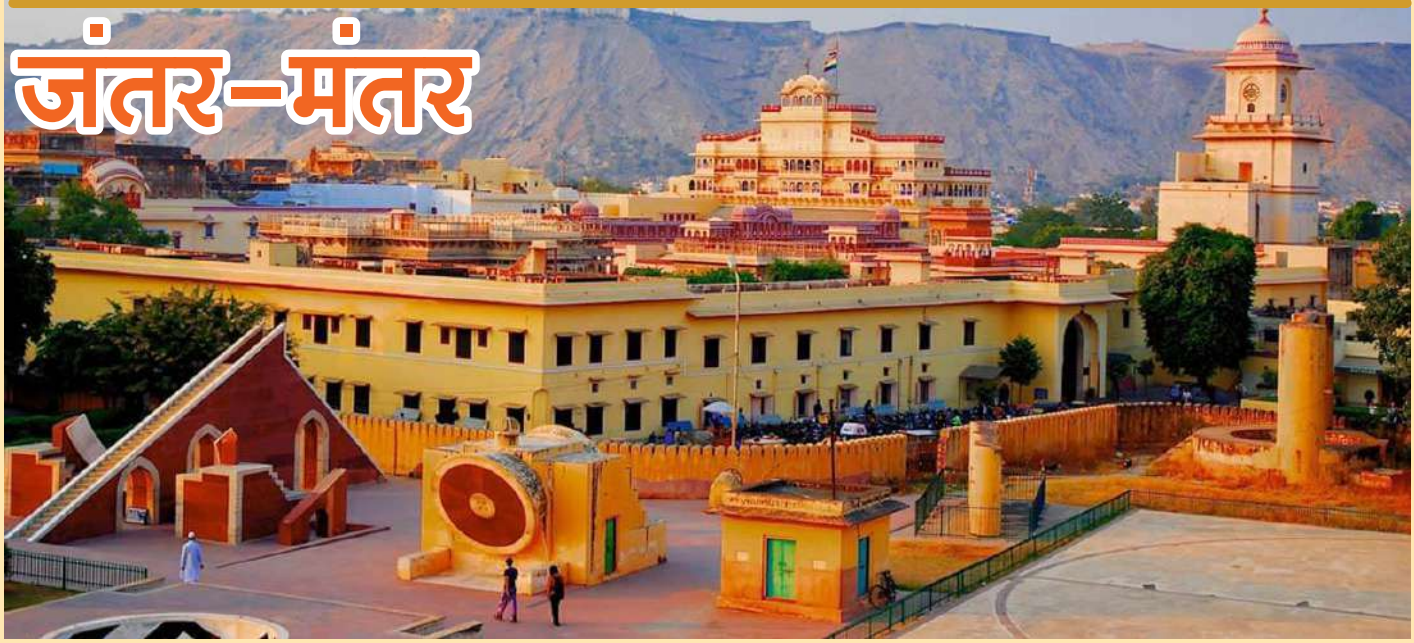

खगोलीय विज्ञान का अद्भुत चमत्कार

जयपुर में सिटी पैलेस के पास स्थित जंतर मंतर देश के अन्य शहरों में स्थित जंतर मंतर से काफी बड़ा और प्रमुख है यूनेस्को ने वर्ल्ड हेरिटेज सिटी में जंतर मंतर को रखा हुआ है, जंतर मंतर का निर्माण महाराजा सवाई जयसिंह ने करवाया था, इस जंतर मंतर से खगोलीय घटनाओं की जानकारी, समय कामापन, तारों की स्थिति ग्रहों की स्थिति, ग्रहण इत्यादि का आकलन प्राचीन काल से ही खगोल विद करते आए हैं, वर्तमान युग में भी खगोल विद और वैज्ञानिक इन जंतर मंतर की उपयोगिता को स्वीकार करते हैं जंतर मंतर में सम्राट यंत्र, जयप्रकाश यंत्र, राम यंत्र सहित अन्य यंत्र हैं कई तरह की जींस विभिन्न तरह की खगोलीय, ज्यामितीय घटनाओं की जानकारी हासिल की जाती है, यह एक अद्भुत और अलौकिक पर्यटन स्थल है इसे समझने के लिए गाइड की बहुत जरूरत होती है क्योंकि यहां पर यह एक ऐसा पर्यटन स्थल है जो मनुष्य के ज्ञान को नई गति देता है इसलिए जंतर मंतर को समझने के लिए वहां पर तैनात विशेषज्ञ पर्यटक ही आपको अच्छी तरह से जंतर मंतर में मौजूद यंत्रों के बारे में समझ सकते हैं कि किस यंत्र से किस तरह की जानकारी हासिल की जाती है। जंतर मंतर की टिकट की रेट भारतीय पर्यटकों के लिए ₹50 और विदेशी पर्यटकों के लिए ₹200 तथा भारतीय और विदेशी पर्यटक छात्रों के लिए टिकट की रेट में रियायत भी है और 5 साल तक के बच्चों का टिकट फ्री है। जंतर मंतर को देखने के लिए विदेशी पर्यटक भी बड़ी संख्या में यहां पर पहुंचते हैं। जयपुर का यह जंतर मंतर दिल्ली मथुरा बनारस उज्जैन स्थित जंतर मंतर से काफी बड़ा और काफी महत्वपूर्ण है।

अल्बर्ट हॉल

जयपुर की सांस्कृतिक धरोहर का गौरव

गुलाबी शहर के मध्य में स्थित रामनिवास गार्डन में यह आकर्षण भवन अल्बर्ट हॉल के नाम से मौजूद है इस भवन का निर्माण प्रिंस ऑफ़ वेल्स अल्बर्ट एडवर्ड के जयपुर आगमन पर जयपुर के महाराजा राम सिंह ने 1876 ईस्वी में करवाया था बाद में जयपुर के महाराजा माधव सिंह ने इस अल्बर्ट हॉल को संग्रहालय में तब्दील कर दिया, अल्बर्ट हॉल की डिजाइन भी वास्तुकार जेकब ने तैयार की थी, अल्बर्ट हॉल की बिल्डिंग काफी खूबसूरत दिखती है लाल बलवा पत्थर, बेहतरीन नक्काशी और स्तंभों से तैयार यह भवन काफी अलौकिक दिखता है, इंडो सर सैनिक शैली की झलक इस बिल्डिंग में दिखती है, यहां संग्रहालय में मौजूद प्राचीन काल के सिक्के पर्यटकों को काफी प्रभावित करते हैं यहां पर गुप्त काल, कुषाण काल, दिल्ली सल्तनत, मुगल काल के सिक्के मौजूद हैं, सिक्कों के इस अद्भुत संग्रह से यह संग्रहालय पर्यटकों कोकाकी पसंद आता है, संग्रहालय में जयपुर की कलाकृतियां, पेंटिंग, हाथी दांत, धातु पत्थर, शाही परिवारों के आभूषण, कपड़े, युद्ध के समान इत्यादि भी रखे हुए हैं। अल्बर्ट हॉल में टिकट की रेट भारतीय पर्यटकों के लिए ₹40 और विदेशी पर्यटकों के लिए ₹300 तथा भारतीय और विदेशी पर्यटक छात्रों के लिए टिकट की रेट में रियायत भी है और 5 साल तक के बच्चों के लिए टिकट लागू नहीं है।

नाहरगढ़ में जंगल, जानवर और जैव विविधता का संगम

वर्ष 2016 में जयपुर के रामनिवास गार्डन में स्थित चिड़ियाघर के एक हिस्से को जयपुर से करीब 12 किलोमीटर दूर जयपुर दिल्ली हाईवे पर करीब 729 हेक्टर क्षेत्र में तैयार किए गए नारगढ़ जैविक उद्यान नारगढ़ बायोलॉजिकल पार्क में शिफ्ट किया गया, जानवरों को पहले चिड़ियाघर में रखा जाता था उन्हें अब प्राकृतिक माहौल उपलब्ध करवाने के लिए नारगढ़ जैविक उद्यान में शिफ्ट किया गया द्य सिंह, बाघ, तेंदुआ, नीलगाय, मगरमच्छ, हिरण इत्यादि जानवरों को नारगढ़ बायोलॉजिकल पार्क में शिफ्ट किया गया है द्य पार्क में रेस्क्यू सेंटर भी है जो घायल जानवरों के उपचार के लिए उपलब्ध है। नारगढ़ बायोलॉजिकल पार्क की स्थापना का बड़ा कारण यह है कि जानवरों को प्राकृतिक माहौल उपलब्ध हो सके इसके लिए लंबे चौड़े इलाके में दुर्लभ जंगलों में और पहाड़ियों में स्पार्क की स्थापना की गई ताकि जानवर खुद को कैद ना समझे, वन्यजीवों के संरक्षण के लिए उत्साही रहने वाले लोगों के लिए यह पार्क काफी महत्वपूर्ण है तथा यहां पर छात्र और शोधकर्ता जो वन्य जीवों के लिए शोध करते हैं उनके लिए भी यहां पर एक रिसर्च सेंटर खोला गया है, इको टूरिज्म के रूप में भी इसको विकसित किया गया इसके लिए भारतीय पर्यटकों से ₹50 और विदेशी पर्यटकों से ₹30 वसूल किए जाते हैं तथा यहां पर सफारी का आनंद भी लिया जाता है जिसके लिए ₹2500 निर्धारित हैं जिसमें 6 सीट है इसी तरह से यहां पर फोटोग्राफी के लिए ₹200 अतिरिक्त शुल्क देना पड़ता है द्य सप्ताह में मंगलवार के दिन यह पार्क बंद रहता है तथा अक्टूबर से मार्च तक का समय पार्क को देखने के लिए काफी अच्छा माना जाता है, यहां का माहौल बिल्कुल शांत है और प्रकृति की गोद में आकर ऐसा लगता है जैसे किसी हिल स्टेशन में घूमने आ गए हो, यहां उन दुर्लभ जानवरों को भी देखा जा सकता है जो पहले रामनिवास गार्डन स्थित चिड़ियाघर में रहा करते थे। जयपुर एयरपोर्ट से यह पार्क करीब 30 किलोमीटर और जयपुर रेलवे स्टेशन से यह पार्क करीब 20 किलोमीटर दूर है और जयपुर दिल्ली हाईवे पर कुंडा तिराहे से दिल्ली की ओर करीब आधा किलोमीटर आगे है। रामनिवास गार्डन में भी चिड़ियाघर अभी मौजूद है जहां पर अलग-अलग प्रजातियों के जो जानवर पहले रहा करते थे वह अब भी मौजूद हैं लेकिन सिंह, तेंदुआ, बाग जैसे जानवर अब चिड़ियाघर में नहीं है बल्कि उन्हेंनाहरगढ़ जैविक उद्यान में शिफ्ट किए गए हैं द्य रामनिवास गार्डन में ही पहले की तरह पक्षियों के लिए अलग से चिड़ियाघर बना हुआ है, दुनिया भर के दुर्लभ पक्षियों को यहां रखा गया है जिन्हें देखने के लिए पहले की तरह शुल्क अब भी वसूल किया जाता है।

चूरू की भौगोलिक अनूठापन

मरूस्थल, तालछापर और जैव-विविधता

चूरू, राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र में स्थित एक ऐतिहासिक नगर है, जिसे 'थार मरुस्थल का प्रवेश द्वार' के रूप में जाना जाता है। इसकी स्थापना 1541 ईस्वी में ठाकुर मालदेव राठौड़ (बणीरोत शाखा) ने की थी, हालांकि कुछ स्त्रोतों के अनुसार इसे 1620 ईस्वी में चुहरू नामक कालेर जाट ने बसाया था, जिसके कारण इसका नाम चूरू पड़ा। शुरू में यह बीकानेर रियासत का हिस्सा था, लेकिन 1948 में पुनर्गठन के बाद इसे अलग जिला बनाया गया। चूरू का इतिहास राजपूतों, जाटों और व्यापारियों की समृद्ध परंपराओं से जुड़ा है, जिन्होंने इस क्षेत्र को अपनी हवेलियों, किलों और धार्मिक स्थलों के माध्यम से समृद्ध किया।

चूरू के लाल और सफेद घण्टाघर

1. लाल घण्टाघर (धर्म स्तूप):

- चूरू का लाल घण्टाघर, जिसे धर्म स्तूप के नाम से भी जाना जाता है, सर्वधर्म सद्भाव का प्रतीक है। यह शहर के केंद्र में स्थित है और विभिन्न धर्मों के लोगों के बीच एकता को दर्शाता है। इसका निर्माण स्थानीय समुदाय की धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा देने के लिए किया गया था।

- इसका लाल रंग और विशिष्ट वास्तुकला इसे पर्यटकों के लिए आकर्षक बनाती है। यह घण्टाघर चूरू की सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

2. सफेद घण्टाघर:

- सफेद घण्टाघर चूरू के ऐतिहासिक और स्थापत्य वैभव का एक और उदाहरण है। हालांकि इसके निर्माण और इतिहास के बारे में विस्तृत जानकारी सीमित है, यह स्थानीय लोगों और पर्यटकों के बीच अपनी सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है।

- यह घण्टाघर शहर की शेखावाटी शैली की वास्तुकला को दर्शाता है, जिसमें जटिल नक्काशी और भित्ति चित्र शामिल हैं।

चूरू का किला

- निर्माण और इतिहासत्र चूरू का किला, जिसे ठाकुर कुशल सिंह ने 1739 ईस्वी में बनवाया था, शहर के केंद्र में स्थित है और लगभग 400 वर्ष पुराना है। यह किला शेखावाटी क्षेत्र की राजस्थानी वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना है।

- विशेष घटना यह किला 1814 ईस्वी की लड़ाई के लिए प्रसिद्ध है, जब बीकानेर के राजा सूरत सिंह ने इस पर आक्रमण किया था। उस समय चूरू की सेना का गोला

बारूद खत्म हो गया था, और स्थानीय लोगों ने अपने जेवर दान कर चांदी के गोले बनवाए, जिन्हें दुश्मनों पर दागा गया। इस घटना ने चूरू के किले को इतिहास में अमर कर दिया।

- वास्तुकलात्र किले में गोपीनाथ मंदिर स्थापित है, और इसकी दीवारों पर राजस्थानी भित्ति चित्र और नक्काशी देखने योग्य हैं। यह किला रेगिस्तानी परिदृश्य में एक मजबूत संरचना के रूप में खड़ा है।

- ऐतिहासिक महत्वत्र 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में ठाकुर शिव सिंह ने इस किले से अंग्रेजों के खिलाफ बहादुरी से लड़ाई लड़ी थी।

चूरू का भौगोलिक महत्व

- स्थानत्र चूरू राजस्थान के उत्तरी भाग में, थार मरुस्थल के किनारे पर स्थित है। यह 28.18' उत्तरी अक्षांश और 74.58' पूर्वी देशांतर पर बसा है। यह राष्ट्रीय राजमार्ग-52 पर स्थित है और बीकानेर के लिए रेलवे जंक्शन भी है।

- जलवायुत्र चूरू में अर्ध-शुष्क मरुस्थलीय जलवायु है, जहां गर्मियों में तापमान 50 डिग्री सेल्सियस तक और सर्दियों में 0 डिग्री सेल्सियस से नीचे जा सकता है। यह राजस्थान का सबसे गर्म और ठंडा जिला है।

- प्राकृतिक विशेषताएंत्र चूरू में कोई स्थायी नदी नहीं है, लेकिन तालछापर झील (खारे पानी की झील) और रेतीले टीले इसकी भौगोलिक पहचान हैं। तालछापर अभयारण्य, जो काले हिरण और कुरंजा पक्षियों के लिए प्रसिद्ध है, चूरू की जैव-विविधता को दर्शाता है।

चूरू का सांस्कृतिक महत्व

- हवेलियां और भित्ति चित्रत्र चूरू अपनी शानदार हवेलियों जैसे कन्हैयालाल बागला हवेली, सुराना हवेली और मालजी का कमरा के लिए प्रसिद्ध है। इन हवेलियों की दीवारों पर राजस्थानी कहानियों (जैसे डोला-मारू) के भित्ति चित्र और फ्रेस्को पेंटिंग्स शेखावाटी कला की अनमोल धरोहर हैं।

- धार्मिक विविधतात्र चूरू में सालासर बालाजी मंदिर, बाबोसा महाराज मंदिर, गोगाजी मंदिर (ददरेवा), जैन मंदिर, जामा मस्जिद और साहवा का गुरुद्वारा जैसे धार्मिक स्थल हैं, जो इसकी धार्मिक सहिष्णुता को दर्शाते हैं।

- सांस्कृतिक परंपराएंत्र चूरू की संस्कृति में ऊंटों की सवारी, जोहड़ (जल संरक्षण प्रणाली), और स्थानीय मेलों (जैसे ददरेवा का गोगाजी मेला) का विशेष स्थान है।

- शिक्षा और साहित्यत्र चूरू ने शिक्षा और साहित्य में भी योगदान दिया है, जैसे कन्हैयालाल सेठिया (पद्मश्री, 2004) जिन्हें राजस्थानी भाषा का पितामह कहा जाता है।

चूरू का इतिहास, इसकी हवेलियों, किले, और घण्टाघरों के साथ, राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत का प्रतीक है। लाल और सफेद घण्टाघर शहर की धार्मिक और स्थापत्य विविधता को दर्शाते हैं, जबकि चूरू का किला इसकी वीरता और युद्धक इतिहास को जीवंत करता है। भौगोलिक रूप से, यह थार मरुस्थल का प्रवेश द्वार है, और सांस्कृतिक रूप से, यह शेखावाटी कला, धार्मिक सहिष्णुता और सामुदायिक परंपराओं का केंद्र है।

मालजी का कमरा, चुरू, राजस्थान में एक 100 साल पुराना हेरिटेज हवेली है। इसे मालजी कोठारी ने 20वीं सदी में बनवाया था, जो बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह जी के लिए मेहमानखाना था। यह 'रंग महल' के रूप में इस्तेमाल होता था, जहां राजा और अतिथि ठहरते थे। इसमें शेखावटी कला, फ्रेस्को और इतालवी निर्माण शैली है। इसकी नीली स्टुको दीवारें और हरे खंभे इतालवी-शेखावटी शैली का अनोखा मिश्रण हैं। यह चुरू के व्यापारिक इतिहास और शेखावटी की संस्कृति को दर्शाता है।

सरदारशहर की सांस्कृतिक विरासत और भामाशाहों का योगदान

"सरदारशहर की फीणी राजस्थान की एक प्रसिद्ध मिठाई है, जो अपनी अनूठी बनावट और स्वाद के लिए जानी जाती है। यह मिठाई बारीक सूजी, घी, चीनी और इलायची से बनाई जाती है, जिसे कुशल कारीगर परत-दर-परत तैयार करते हैं। फीणी की विशेषता इसकी हल्की, कुरकुरी और तंतुमय बनावट है, जो मुंह में रखते ही घुल जाती है। यह मिठाई न केवल स्वाद में लाजवाब है, बल्कि सरदारशहर की सांस्कृतिक और पाककला धरोहर का भी प्रतीक है।"

सरदारशहर, राजस्थान के चूरू जिले में बसा एक ऐतिहासिक शहर, अपनी सांस्कृतिक धरोहर, भामाशाहों की उदारता और प्रवासी बंधुओं के योगदान के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की मिट्टी में बसी परंपराएँ और भामाशाहों की छाप आज भी कुंओं, बावड़ियों, सड़कों, विद्यालयों, मंदिरों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर देखी जा सकती है। ये निर्माण कार्य न केवल सरदारशहर की समृद्ध विरासत को दर्शाते हैं, बल्कि प्रवासी बंधुओं के अपनी जन्मभूमि के प्रति प्रेम और समर्पण को भी उजागर करते हैं।

भामाशाहों और प्रवासी बंधुओं की भूमिका

सरदारशहर के प्रवासी बंधु, जो विश्व के विभिन्न कोनों में रहते हैं, अपनी मेहनत और लगन से न केवल अपने शहर का नाम रोशन कर रहे हैं, बल्कि धर्म-कर्म के कार्यों में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। उनके पूर्वजों द्वारा बनवाए गए कुंए, बावड़ियाँ, और अन्य सार्वजनिक निर्माण आज भी उनकी स्मृतियों को जीवंत रखते हैं। ये प्रवासी बंधु जब सरदारशहर लौटते हैं, तो अपनी जन्मभूमि के प्रति उनके मन में वही लगाव और उत्साह देखने को मिलता है। वे होली, दीपावली, ईद जैसे त्योहारों पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन में सहयोग करते हैं, जिससे नई पीढ़ी को राजस्थान की पुरानी रीति-रिवाजों से जोड़ा जाता है।

पुराने समय में सेठ और भामाशाह सरदारशहर के सामाजिक और धार्मिक कार्यों की रीढ़ थे। वे विदेशों से लौटकर स्थानीय लोगों के दुख-दर्द में शामिल होते और समस्याओं का समाधान करते। उनके प्रयासों से सरदारशहर में सबसे अधिक कुंए, बावड़ियाँ और धर्मशालाएँ बनीं, जो आज भी उपयोग में हैं। आज भी भामाशाहों का सहयोग धर्म-कर्म के कार्यों में निरंतर जारी है, जिससे शहर की सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान और मजबूत हो रही है।

आधुनिक अस्पताल की आवश्यकता

सरदारशहर के बढ़ते दायरे और नगरपालिका से नगर परिषद बनने के बाद शहर और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों की आबादी और जरूरतें भी बढ़ गई हैं। वर्तमान में, क्षेत्र में एक आधुनिक और सुविधाजनक अस्पताल की कमी महसूस की जा रही है। स्थानीय जनता और राजनीतिक नेताओं का मानना है कि एक बड़े अस्पताल की स्थापना अब समय की मांग है। ऐसा अस्पताल न केवल स्थानीय लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करेगा, बल्कि बीकानेर जैसे बड़े शहरों से मरीजों को रेफर करने की सुविधा भी दे सकता है।

भामाशाहों और राजनीतिक सहयोग की संभावना

सरदारशहर में भामाशाहों की उदारता किसी से छिपी नहीं है। यदि भामाशाह और क्षेत्र के राजनीतिक नेता एकजुट होकर इस दिशा में प्रयास करें, तो एक आधुनिक अस्पताल का निर्माण संभव है। भामाशाहों के आर्थिक सहयोग और राजनीतिक इच्छाशक्ति के साथ, यह परियोजना न केवल सरदारशहर की स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करेगी, बल्कि क्षेत्र के विकास में भी मील का पत्थर साबित होगी। उदाहरण के लिए, अन्य क्षेत्रों में भामाशाहों के सहयोग से बने अस्पताल, जैसे छत्तीसगढ़ का शहीद अस्पताल, यह दर्शाते हैं कि सामुदायिक सहयोग से बड़े प्रोजेक्ट संभव हैं।

सरदारशहर की धरती भामाशाहों की उदारता और प्रवासी बंधुओं के प्रेम की गवाह है। यहाँ की परंपराएँ, सांस्कृतिक आयोजन और सामाजिक कार्य आज भी नई पीढ़ी को प्रेरित करते हैं। एक आधुनिक अस्पताल की स्थापना के लिए भामाशाहों और राजनीतिक नेताओं का सहयोग इस शहर को नई ऊँचाइयों तक ले जा सकता है। यदि यह सपना साकार होता है, तो सरदारशहर न केवल अपनी सांस्कृतिक विरासत, बल्कि आधुनिक स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए भी जाना जाएगा।

इच्छापूर्ण बालाजी मंदिर, सरदारशहर का एक प्रमुख धार्मिक और सांस्कृतिक जगह है

श्री इच्छापूर्ण बालाजी मंदिर, सरदारशहर में भगवान हनुमान का एक प्रमुख तीर्थ स्थल है, जो भक्तों की आस्था का केंद्र है। मंदिर का निर्माण मूलचंद मालू द्वारा करवाया गया, जिसकी द्रविड़ शैली की वास्तुकला और हनुमान जी की बैठी मुद्रा वाली मूर्ति आकर्षण का केंद्र है। मंदिर में भगवान राम, सीता, लक्ष्मण और गणेश की मूर्तियां भी स्थापित हैं। हनुमान जयंती और रामनवमी पर यहां विशेष आयोजन होते हैं, जिसमें देशभर से भक्त उमड़ते हैं। मंदिर सुबह 5:00 बजे से रात 9:00 बजे तक खुला रहता है और प्रवेश। मंदिर का फेसबुक पेज 36,000+ फॉलोअर्स के साथ नियमित अपडेट साझा करता है। भक्तों का मानना है कि यहां सच्चे मन से मांगी मनोकामना अवश्य पूरी होती है।

कौन होगा प्रदेश का अगला नया डीजीपी, 9 वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी के नाम पैनल में

रवि प्रकाश सिर्फ 20 दिन के लिए प्रदेश के कार्यवाहक पुलिस महानिदेशक, 30 जून को हो रहे हैं रिटायर

जयपुर। प्रदेश के कार्यवाहक पुलिस महानिदेशक रवि प्रकाश आगामी 30 जून को सेवानिवृत हो रहे हैं इसलिए प्रदेश में नए डीजीपी की नियुक्ति की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है राजस्थान सरकार में संघ लोक सेवा आयोग को 9 सीनियर आईपीएस अधिकारियों की सूची भेजी है संघ लोक सेवा आयोग की ओर से सूची में शामिल सभी आईपीएस अधिकारियों की वरिष्ठता, सेवा कार्ड, अनुभव इत्यादि के मामलों की गहनता से जांच पड़ताल करके इनमें से तीन नाम पुलिस महानिदेशक पद के लिए सेलेक्ट करेगा फिर सरकार इन तीन नाम में से किसी एक नाम पर नियुक्ति के लिए अपनी मोहर लगाएगी। राजस्थान सरकार ने संघ लोक सेवा आयोग को जिन आईपीएस अधिकारियों की सूची भेजी है उनमें राजीव कुमार शर्मा, संजय अग्रवाल, अनिल पालीवाल राजेश आर्य, राजेश निर्वाण, आनंद श्रीवास्तव गोविंद गुप्ता अशोक कुमार राठौर मालिनी अग्रवाल के नाम बताए गए हैं, वरिष्ठता के आधार पर इनमें राजीव कुमार शर्मा का नाम टॉप पर बताया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि उत्तर रंजन साहू को हाल ही में राजस्थान लोकसभा आयोग का अध्यक्ष बनाए जाने के बाद रवि प्रकाश को राजस्थान सरकार की ओर से कार्यवाहक पुलिस महानिदेशक पद के रूप में नियुक्ति मिली है हालांकि रवि प्रकाश आगामी 30 जून को रिटायर होने वाले हैं इसलिए उन्हें सिर्फ 20 दिन के लिए डीजीपी पद के रूप में काम करने का अवसर मिला है इसलिए पत्रकारों से बातचीत के दौरान रवि प्रकाश ने कहा था कि इन 20 दिनों में उनकी कोशिश यही रहेगी कि प्रदेश की जनता के हितों की ज्यादा से ज्यादा रक्षा की जाए और पीड़ित लोगों को ज्यादा से ज्यादा इंसाफ मिले प्रदेश में शांति और कानून व्यवस्था बनी रहे, महिला सुरक्षा, दलितों की सुरक्षा के लिए पुलिस और संवेदनशील होकर अपना वर्क करें तथा अपराध जगत से जुड़े लोगों में पुलिस का डर और ज्यादा हो और प्रदेश की जनता में पुलिस एक सच्चे दोस्त के रूप में खुद को साबित करें इन सब विषयों पर उनका फोकस रहेगा द्य रवि प्रकाश ने इस बात पर भी प्रसन्नता जाहिर की की राजस्थान सरकार ने उनके जन्मदिन पर जो बड़ा तोहफा दिया है उसे 13 जून को उनका जन्मदिन कुछ ज्यादा यादगार हो गया है।

बताया गया है कि राजस्थान सरकार की ओर से संघ लोक सेवा आयोग को जिन आईपीएस अधिकारियों की सूची पुलिस महानिदेशक पद के चयन के लिए भेजी है उनमें सिर्फ एक आईपीएस महिला मालिनी अग्रवाल

शामिल है इसलिए अगर सरकार किसी महिला को इस महत्वपूर्ण पद पर बिठाने के बारे में सोचेगी तो मालिनी अग्रवाल के नाम लॉटरी खुलने की संभावना है मालिनी अग्रवाल कई जिलों की पुलिस अधीक्षक रहने के अलावा अजमेर भरतपुर संभाग की आईजी रह चुकी है इसके अलावा जेल विभाग में एडीजी पद पर नियुक्त रह चुकी है, मालिनी अग्रवाल को एक कर्मठ इमानदार आईपीएस अधिकारी के रूप में जाता है इसलिए अगर संघ लोक सेवा आयोग की ओर से जो तीन नाम सरकार को भेजे जाएंगे उनमें अगर मालिनी अग्रवाल का नाम हो तो कहीं ना कहीं राजस्थान की महिलाओं में अपना भरोसा कायम करने के लिए सरकार मालिनी अग्रवाल को पुलिस महानिदेशक पद पर नियुक्त कर दे तो कोई अचरज वाली बात नहीं होगी, वैसे राजस्थान में महिला अपराध की बढ़ती घटनाओं को लेकर चाहे बीजेपी की सरकार रही हो या कांग्रेस पार्टी की हर सरकारों को बदनामी सहन करनी पड़ी है इसलिए हो सकता है मालिनी अग्रवाल को पुलिस महानिदेशक पद पर पोस्टिंग देकर सरकार महिलाओं में भी अपना भरोसा मजबूत करने का प्रयास करें,वैसे मालिनी अग्रवाल के पति संजय अग्रवाल की दावेदारी भी तगड़ी मानी जा रही है संजय अग्रवाल भी जयपुर के पुलिस कमिश्नर रह चुके हैं प्रदेश में कई जिलों के एसपी रहने के अलावा विदेश में भी पुलिसिंग को लेकर विशेष डिग्री धारण किए हुए हैं, हैदराबाद स्थित पुलिस अकादमी के निदेशक रह चुके हैं और वर्तमान में इंटेलिजेंस ब्यूरो की भूमिका को भी बहुत ही शानदार तरीके से निभा रहे हैं ऐसे में संजय अग्रवाल के भी पुलिस महानिदेशक बनने के ज्यादा चांस नजर आ रही है।

राजस्थान सरकार एवं केंद्र सरकार द्वारा विज्ञापन के लिए मान्यता प्राप्त

जयपुर टाइम्स

(जयपुर एवं चूरू से एक साथ प्रकाशित)

जयपुर टाइम्स

10 वी के होनहारों को जेईई, नीट की मुफ्त कोचिंग कराएगी भजनलाल सरकार!

जयपुर टाइम्स

पीएम नरेंद्र मोदी के सशक्त नेतृत्व और सेना के शौर्य के सम्मान में उमड़ा सोनीपत

भारतीय सेना ने विश्वस्तर पर भारत के गौरव को बढ़ाया: डा. सतीश पूनिया

जयपुर टाइम्स

सांगानेर विधानसभा क्षेत्र के विकास कार्यों की समीक्षा बैठक

आमजन का समग्र कल्याण हमारी प्राथमिकता: भजनलाल शर्मा

जयपुर टाइम्स

अक्षय ऊर्जा से संबंधित एमओयू के निवेशकों के साथ बैठक

राइजिंग राजस्थान' के निवेश समझौतों को समयबद्ध पूर्ण कराने के लिए सरकार प्रतिबद्ध: भजनलाल

जयपुर टाइम्स

प्रधानमंत्री ने पाक को दिया कड़ा संदेश

पाकिस्तान ने गोली चलाई तो अब भारत चलाएगा गोला: मोदी

जयपुर टाइम्स

मुख्यमंत्री की पहल पर सर्वदलीय बैठक

प्रदेशवासियों की सुरक्षा राज्य सरकार की पहली प्राथमिकता: भजनलाल शर्मा

जयपुर टाइम्स समाचार पत्र प्रतिदिन पढ़ने के लिए क्लिक करें

www.jaipurtimes.org

https://www.youtube.com/@JaipurTimes

@JaipurTimes2

@jaipurtimes.news

जयपुर टाइम्स में संवाददाता बनने के लिए, विज्ञापन एवं समाचार प्रकाशित करवाने के लिए सम्पर्क करें :-

Email- jaipurtimes2007@gmail.com (समाचारों के लिए)

Email- jaipurtimes.adv@gmail.com (विज्ञापनों के लिए)

मो. 7014217770

प्रधान कार्यालय- सी 588, 4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड़, रोड़ नं. 14, सीकर रोड़, जयपुर (राजस्थान)